कल्पमेधा

संस्कृति के नैतिक विकास का सबसे ऊंचा स्तर तब आता है, जब हम अपने विचारों को नियंत्रित करना सीख लें।

– चार्ल्स डार्विन

सहयोग के बरक्स

अमेरिका की ओर से भारत पर पचास फीसद शुल्क लगाए जाने के बाद जिस तरह से बातचीत चल रही थी, उम्मीद की जा रही थी कि दोनों देशों के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते को अंजाम तक पहुंचाने से द्विपक्षीय संबंधों में जमी बर्फ पिघल जाएगी। मगर, इस समझौते को लेकर अमेरिका जिस तरह की उदासीनता दिखा रहा है, उससे उसकी नीति और नीयत दोनों संदेह के घेरे में है। अमेरिका के वाणिज्य मंत्री का यह कहना विचित्र और तर्कहीन है कि व्यापार वार्ता इसलिए सिरे नहीं चढ़ सकी, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को फोन नहीं किया। भारत ने इस पर स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व ने पिछले वर्ष आठ अवसरों पर फोन से बातचीत की और इस दौरान द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। ऐसे में तस्वीर साफ है कि अमेरिका व्यापार समझौते को आगे बढ़ाने में अपनी नाकामी का ठीकरा भारत पर फोड़ने का प्रयास कर रहा है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अमेरिका सोची-समझी रणनीति के तहत भारत पर दबाव बनाना चाहता है, ताकि वह व्यापार समझौते में मनमाने तरीके से अपनी शर्तों को आगे बढ़ा सके।

दरअसल, पिछले साल तेरह फरवरी को वाइट हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच हुई बैठक के दौरान द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया था। दोनों पक्षों के बीच इसको लेकर कई दौर की वार्ता हो चुकी है। मगर अमेरिकी पक्ष परस्पर हितों की बजाय अपने हितों पर ज्यादा जोर देता रहा है। हालांकि भारत यह स्पष्ट कर चुका है कि राष्ट्रहित से किसी तरह का समझौता नहीं किया जाएगा। इसमें दोराय नहीं है कि अमेरिकी की ओर से भारत पर पचास फीसद शुल्क लगाने की घोषणा भी दबाव की रणनीति का ही हिस्सा था, जो दोनों देशों के रिश्तों में शिथिलता का कारण बना। अब अमेरिका के वाणिज्य मंत्री की ओर से प्रस्तावित व्यापार समझौते के लंबित होने के लिए भारत को जिम्मेदार ठहराने का प्रयास यह दर्शाता है कि अमेरिका जानबूझकर इसे ठंडे बस्ते में डालना चाहता है। अमेरिका का यह रुख इसलिए भी सामने आया है, क्योंकि भारत परस्पर हितों की अपनी नीति पर पूरी तरह कायम है।

रणनीतिक दबाव बढ़ाने का एक और प्रयास हाल में देखने को मिला, जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक नए विधेयक को मंजूरी दी, जिसमें रूस से तेल खरीदने वाले भारत समेत अन्य देशों पर पांच सौ फीसद शुल्क लगाने का प्रस्ताव किया गया है। अगर इस विधेयक को संसद की मंजूरी मिल जाती है, तो इसका भारत पर खासा असर पड़ सकता है। मगर यह बात भी सच है कि भारत अब अपनी वस्तुओं के निर्यात लिए दुनिया के दूसरे देशों में वैकल्पिक बाजार तलाशने का पूरी शिद्दत से प्रयास कर रहा, जो सफल भी हो रहा है। भारत ने पिछले करीब पांच माह में कई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए हैं। निकट भविष्य में अमेरिकी शुल्क के प्रभाव को कम करने में ये समझौते महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। शुल्क के अलावा, भारत-अमेरिका संबंध कई अन्य मुद्दों पर भी तनावपूर्ण हैं, जिनमें पिछले साल मई में ट्रंप की ओर से भारत-पाकिस्तान संघर्ष को समाप्त करने का दावा किया जाना और वाशिंगटन की नई आव्रजन नीति शामिल हैं। ऐसे में अमेरिका को यह समझाना होगा कि दबाव की रणनीति के बजाय सहयोग की नीति में ही दोनों देशों के हित निहित हैं।

हादसे का सफर

केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से सड़क हादसों पर अंकुश लगाने के लिए कई तरह के उपाय लागू किए गए हैं, मगर जमीनी स्तर पर इनके प्रभावी नतीजे नजर नहीं आ रहे हैं। दुर्घटनाओं के आंकड़े कम होने की बजाय बढ़ते जा रहे हैं। पहाड़ी प्रदेशों में तो सड़क हादसों की भयावहता और भी ज्यादा होती है। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में गुरुवार को एक निजी बस के पांच सौ फुट गहरी खाई में गिर जाने से चौदह लोगों की मौत हो गई और बावन लोग जख्मी हो गए। हैरत की बात यह है कि इस बस में सिर्फ 39 यात्रियों को ही बिठाने की क्षमता थी। जाहिर है कि बस में क्षमता से अधिक यात्री सवार थे। ऐसे में सवाल है कि क्या हर बार खराब मौसम और सड़कों की भौगोलिक स्थिति को हादसों के लिए जिम्मेदार बता कर आंखें मूंद लेना सही है? इस तरह के हादसों में होने वाली मौत के लिए किसकी जवाबदेही है? क्या सरकार और प्रशासन का दायित्व नहीं है कि यातायात नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए?

गौरतलब है कि हिमाचल प्रदेश में अधिकतर सड़कें पहाड़ी इलाकों से गुजरती हैं, जो संकरी होने के साथ घुमावदार भी हैं। कई सड़कें तो ढलान वाली हैं। भौगोलिक स्थिति इसे तब और जटिल बना देती है, जब घनी धुंध, बारिश या सड़क पर बर्फ की परत जम जाती है। अगर वाहनों में क्षमता से अधिक यात्री सवार हों, तब भी उनके अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा बना रहता है। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर में हुए इस हादसे का कारण भी बस में क्षमता से अधिक यात्रियों का सवार होना बताया जा रहा है। ऐसे में जरूरी है कि यात्री वाहनों के औचक निरीक्षण की व्यवस्था को कड़ाई से लागू किया जाए। इसमें दोराय नहीं कि समन्वित प्रयासों से ही सड़क हादसों को रोका जा सकता है। कोई मानवीय भूल न हो, इसके लिए चालकों को भी विशेष प्रशिक्षण और जागरूकता की जरूरत है। पहाड़ी इलाकों में जाने से पहले वाहनों की तकनीकी जांच कराने का पहलू भी अहम है। अगर हर स्तर पर सतर्कता बरती जाए, तो निश्चित रूप से दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है।

हाथियों की सुरक्षा का सवाल

रेलगाड़ियों की टक्कर से हाथियों की मौत कोई संयोग नहीं है, बल्कि सुरक्षा तंत्र के लगातार विफल होने का उदाहरण है। सबसे चिंताजनक पहलू जवाबदेही का अभाव है। शासन और प्रशासन को इस दिशा में अब ठोस कदम उठाने होंगे।

योगेश कुमार गोयल

असम में रेलगाड़ियों की टक्कर से हाथियों की मौत कोई संयोग नहीं है, बल्कि लगातार विफल होते तंत्र का उदाहरण भी है। विकास की रफ्तार, प्रशासनिक लापरवाही और वन्यजीव संरक्षण की कमजोर इच्छाशक्ति एक साथ मिल कर प्रकृति के इस संवेदनशील प्राणी को कुचल रही हैं। बीते दस वर्षों में अकेले असम में रेल पटरियों पर 60 से अधिक हाथियों की मौत हो चुकी है। हाथियों की मौत इस सच्चाई को रेखांकित करती है कि यह समस्या आकस्मिक नहीं, बल्कि संरचनात्मक और प्रणालीगत है। संसद में पेश आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2014 से 2024 के बीच रेल हादसों में लगभग 186 हाथियों की जान गई।

भारत में रेलवे का 69 हजार किलोमीटर से अधिक लंबा संजाल देश के हर भू-भाग को जोड़ता है, लेकिन सैकड़ों स्थानों पर रेल पटरियां घने जंगलों, हाथी आवासों और सदियों पुराने प्राकृतिक गलियारों के बीच से गुजरती हैं। असम इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां ब्रह्मपुत्र घाटी, पहाड़ी जंगल, चाय बागान और सीमित खुली जमीन के बीच रेल लाइनें उन रास्तों को चीरती हैं, जिनका उपयोग हाथी पीढ़ियों से करते आए हैं। हाथी नक्शों पर खींची गई सरकारी रेखाओं से नहीं चलते, बल्कि वे स्मृति, अनुभव और प्राकृतिक संकेतों के सहारे चलते हैं। जब उनके रास्ते में लोहे की पटरियां आ जाती हैं, तो उनके सामने विकल्प लगभग समाप्त हो जाते हैं। नागांव, होजई, मोरीगांव और लुमडिंग जैसे इलाकों में बार-बार होने वाले हादसे इस सच्चाई को उजागर करते हैं।

पिछले वर्ष दिसंबर में असम के होजाई जिले में सैरांग-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस से आठ हाथियों की मौत, किसी एक गलती का नहीं, बल्कि वर्षों से चली आ रही लापरवाही का परिणाम हैं। हर हादसे के बाद बयान आते हैं, संवेदनाएं व्यक्त होती हैं, कुछ तकनीकी उपायों की घोषणा होती है और फिर वही चक्र दोहराया जाता है। सरकार का दावा रहा है कि हाथियों की सुरक्षा के लिए कई कदम उठाए गए हैं। वर्ष 2022 में केंद्रीय पर्यावरण और वन मंत्री भूपेंद्र यादव ने संसद में बताया था कि रेलवे और पर्यावरण मंत्रालय के बीच समन्वय समितियां बनाई गई हैं, संवेदनशील क्षेत्रों में गति सीमा तय की गई है। भूमिगत मार्ग और 'रैम्प' बनाए जा रहे हैं। चेतावनी संकेत लगाए गए हैं और लोको पायलटों को भी सतर्क किया गया है। इसके साथ ही एआइ-आधारित आइडीएस की शुरुआत की गई है, जो पटरियों के पास बड़े जीवों की मौजूदगी का पता लगा कर सचेत करता है। कागजों पर यह तस्वीर संतोषजनक दिखती है, लेकिन जमीन पर हर नई मौत इन दावों को कठघरे में खड़ा कर देती है।

असल सवाल यह है कि जब उपाय मौजूद हैं, तो पटरियों पर हाथियों की मौत क्यों हो रही है? नगांव जैसी घटनाएं बताती हैं कि गति सीमा या तो लागू नहीं होती या उसका पालन नहीं किया जाता। आइडीएस जैसी व्यवस्था कई जगह की गई है, लेकिन वे तभी कारगर होंगे, जब सतर्क होने का संकेत मिलते ही ट्रेन की गति स्वतः घटे या ब्रेक लगे। आज स्थिति यह है कि सेंसर सतर्क कर देते हैं, नियंत्रण कक्ष तक सूचना भी पहुंचती है, लेकिन निर्णय-प्रक्रिया इतनी धीमी है कि तेज रफ्तार ट्रेन हाथियों तक पहुंचने से पहले रुक

नहीं पाती। कोई 90-100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही ट्रेन को रुकने के लिए लगभग एक किलोमीटर की दूरी चाहिए और जंगलों में मोड़दार पटरियों पर लोको पायलट को हाथी दिखाई देने तक बहुत देर हो चुकी होती है। विशेषज्ञों का मानना है कि असम में हाथियों की मौत कोहरे

> **सवाल यह है कि जब उपाय मौजूद हैं, तो पटरियों पर हाथियों की मौत क्यों हो रही है? नागांव जैसी घटनाएं बताती हैं कि गति सीमा या तो लागू नहीं होती या उसका पालन नहीं किया जाता। आज स्थिति यह है कि सेंसर सतर्क कर देते हैं, नियंत्रण कक्ष तक सूचना भी पहुंचती है, लेकिन निर्णय-प्रक्रिया इतनी धीमी है कि तेज रफ्तार ट्रेन हाथियों तक पहुंचने से पहले रुक नहीं पाती। कोई 90-100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही ट्रेन को रुकने के लिए लगभग एक किलोमीटर की दूरी चाहिए और जंगलों में मोड़दार पटरियों पर लोको पायलट को हाथी दिखाई देने तक बहुत देर हो चुकी होती है।**

या दृश्यता की कमी की वजह से नहीं, बल्कि योजना की मूलभूत खामियों का नतीजा है। कई रेल लाइनें ऐसे समय में बिछाई गई, जब हाथियों के पारंपरिक मार्गों का अध्ययन नहीं किया गया या उन्हें जानबूझ कर नजरअंदाज किया गया। परिणामस्वरूप, कई ऐसे क्षेत्र हैं जो आधिकारिक रूप से 'हाथी गलियारा' घोषित नहीं हैं, लेकिन व्यवहार में वही हाथियों के मुख्य रास्ते हैं। रेल प्रशासन इन्हें गैर-संवेदनशील मान कर तेज रफ्तार ट्रेनों का संचालन करता है और दुर्घटनाएं होती हैं।

यह संकट केवल असम तक सीमित नहीं है। पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार-सिलीगुड़ी खंड, ओड़ीशा के क्योंझर, तमिलनाडु-केरल के मदुक्कराई क्षेत्र और उत्तराखंड के हरिद्वार-देहरादून मार्ग पर भी इसी तरह की घटनाएं दर्ज होती रही हैं। हर जगह स्थिति लगभग एक जैसी है, रेल लाइन हाथियों के पारंपरिक मार्ग को काटती है। रात या सुबह के धुंधलके में हाथी झुंड में पटरियां पार करते हैं और तेज रफ्तार ट्रेन से टकरा जाते हैं। हाथियों की सामाजिक संरचना इस त्रासदी को और भयावह बना देती है। हाथी झुंड में चलते हैं और एक-दूसरे के प्रति गहरा लगाव रखते हैं। जब झुंड का एक सदस्य घायल होता है, तो बाकी उसे छोड़ कर नहीं भागते बल्कि उसकी मदद के लिए रुक जाते हैं। यही कारण है कि ट्रेन ही टक्कर में कई हाथियों की जान चली जाती है। कई बार अपने बच्चों की जान बचाने की कोशिश में मादाएं अपनी जान गंवा देती हैं। इस तरह का दृश्य केवल वन्यजीव प्रेमियों को ही नहीं, किसी भी संवेदनशील मनुष्य को भीतर तक झकझोर देता है।

रोकथाम के उपायों पर गंभीरता से विचार किया जाए, तो यह स्पष्ट है कि केवल तकनीक समाधान नहीं है। एआइ-आधारित व्यवस्था तब तक प्रभावी नहीं होगी, जब तक चौबीस घंटे प्रशिक्षित स्टाफ द्वारा उसकी निगरानी नहीं होगी। हर सतर्कता संदेश पर तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए। हाथियों की आवाजाही को मौसम, कोहरे, चांदनी और समय के साथ जोड़ कर विश्लेषण करना होगा और उसी आधार पर ट्रेन की आवाजाही और गति तय करनी होगी। सुबह-शाम और रात के उन घंटों में, जब हाथियों की सक्रियता सबसे अधिक होती है, संवेदनशील रेलखंडों में गति को सख्ती से घटाना होगा। इसके साथ ही, वन और रेलवे विभाग की साझा गश्त को औपचारिकता से निकाल कर वास्तविक जमीनी निगरानी में बदलना होगा। स्थानीय वनकर्मियों और आसपास के समुदायों को भी इस तंत्र का हिस्सा बनाना होगा, क्योंकि वे जंगलों की नब्ज बेहतर समझते हैं। ऊंचाई पर रेलमार्ग और समर्पित वन्यजीव क्रासिंग ही स्थायी समाधान दे सकते हैं। झारखंड और उत्तराखंड में ऐसे प्रयोगों से सकारात्मक परिणाम मिले हैं, ऐसे में असम में भी इन्हें प्राथमिकता के साथ लागू किया जाना चाहिए।

इस पूरे संकट का सामाजिक-पर्यावरणीय पहलू भी है। असम के कई जिलों में चाय बागान, खनन, सड़क निर्माण और बस्तियों के विस्तार ने हाथियों के आवास को छोटा कर दिया है। जब भोजन और पानी की तलाश में हाथी इंसानी इलाकों की ओर बढ़ते हैं, तो रेल पटरियां उनके रास्ते में घातक दीवार बन जाती हैं। यह रेल नेटवर्क अब उनके लिए एक 'मूक हत्यारा' बन चुका है, जो उनकी पीढ़ियों को मिटा रहा है। सबसे चिंताजनक पहलू जवाबदेही का अभाव है। हर बड़े हादसे के बाद जांच के आदेश तो दिए जाते हैं, लेकिन उनकी रपटें शायद ही कभी सार्वजनिक होती हैं। यह स्पष्ट नहीं किया जाता कि किस स्तर पर लापरवाही हुई, कौन सी व्यवस्था विफल हुई और उसे सुधारने के लिए क्या ठोस कदम उठाए जाएंगे। जब तक यह पारदर्शिता नहीं आएगी, तब तक सुधार के दावे खोखले ही रहेंगे।

इंसानियत की संवेदना

राजेंद्र वामन काटदरे

पिछले कुछ समय से समाज में आसपास होती घटनाएं इस मसले पर सोचने पर मजबूर करती हैं कि जिस संवेदना की बुनियाद पर इंसानियत टिकी हुई है, उसकी जगह क्यों सिकुड़ती जा रही है। आजकल की खबरों को देखकर मन में एक ही भाव जागता है कि क्या मनुष्य अपनी संवेदना खोता जा रहा है और क्या हमारे दिलोदिमाग से संवेदनशीलता का ह्रास हो रहा है। ऐसी कई खबरें सामने आ चुकी हैं, जिनमें यह देखा गया कि किसी दुर्घटना के बाद घायल लोगों की मदद करने की जगह घटनास्थल पर मौजूद लोग अपने-अपने मोबाइल निकाल कर घटना का वीडियो बनाना शुरू कर देते हैं। ऐसा करते हुए लोग क्या एक बार भी नहीं सोचते कि हादसे के बाद घायल व्यक्ति के लिए एक-एक पल कितना कीमती होता है। यह सोचने के बजाय वीडियो बनाना या मूकदर्शक होकर देखते रहने वालों की भीड़ में दिमागी तौर पर लोगों का अनुपस्थित होना संवेदनहीनता नहीं, तो और क्या है।

सच तो यह है कि मनुष्य का दिल या कहें कि मानव मन अनेक प्रकार की भावनाएं, एहसास, बोध, चेतना, सहानुभूति, हमदर्दी, वेदना आदि समेटे हुए होता है। इसलिए हमारी आंखों के सामने घटित होने वाली किसी भी घटना या दुर्घटना के तुरंत बाद सर्वप्रथम हमारे मन में घायल लोगों की मदद करने का भाव जागना चाहिए, मगर वर्तमान में संवेदनशीलता खोता आदमी या तो अपने मोबाइल में घटना का वीडियो बनाना शुरू कर देता है या किसी एक अनजान भय से घटनास्थल से पलायन ही कर जाता है। वीडियो बनाने वाला व्यक्ति अपनी ही संवेदना खो चुका होता है या फिर उस पर प्रचार की भूख हावी होती है और दूसरी ओर अनजान भय से घटनास्थल से पलायन करने वाला व्यक्ति कानूनी जटिलताओं में फंसने से लेकर मदद करने के क्रम में वक्त 'जाया होने' के डर से ऐसा करता है। फिर कई बार किसी व्यक्ति की प्रकृति ही मदद न करने या फिर मुश्किल में मदद न करने वाले की होती है।

हालत यह है कि अगर किसी दुर्घटना में घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने के लिए मदद करने की जरूरत होती है और कोई व्यक्ति आवाज लगा रहा होता है, तो भी पास से गुजर रहे वाहन रुकते नहीं। दस मिनट में पिज्जा पहुंचाने वाले शहरों में भी एंबुलेंस घंटे भर के इंतजार के बाद ही पहुंचती है। इतनी देर में कई बार मरीज की जान पर बन आती है या उसे बचाना मुश्किल हो जाता है। आमतौर पर दुर्घटनाग्रस्त लोगों की मदद न करने के अनेक बहाने हम अपने मन में झटपट गढ़ लेते हैं। उदाहरण के तौर पर यह कि अब पुलिस के झंझट में कौन पड़े... या इसके बाद कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने पड़ेंगे। कई बार तो किसी बैठक में हिस्सा न ले पाने या या हवाई जहाज के छूट जाने का बहाना हमारा मन सोच लेता है। दरअसल, इसे बहाना ही कहा जा सकता है, क्योंकि क्या किसी व्यक्ति की जान से ज्यादा कीमत किसी बैठक की या हवाई जहाज के छूट जाने से की जा सकती है?

अस्पतालों में भी संवेदनाओं का अभाव के मामले आम दिखते हैं। उदाहरण के तौर पर मरीजों के इलाज के लिए फार्म या पर्ची भरे बगैर या पैसा जमा किए बगैर या फिर पुलिस के आने से पहले मरीज का इलाज नहीं किया जाता, भले ही मरीज गंभीर अवस्था में हो और उसे आपात चिकित्सा की जरूरत है। संवेदनहीनता तब भी दिखाई देती है जब किसी परिचित या दूर के किसी रिश्तेदार के घर में हुई गमी यानी किसी की मौत के बाद लोग दुख में शामिल होने उनके घर पहुंचने के बजाय अपने मोबाइल पर 'रेस्ट इन पीस' या 'विनम्र श्रद्धांजलि' लिख कर अपने कर्तव्य की ईतिश्री मान लेते हैं। सोच कर देखा जा सकता है कि क्या किसी गमजदा व्यक्ति के मोबाइल में आया संदेश सकी मानसिक-भावनात्मक मदद करेगा या उसके कंधे पर किसी अपने का आश्वासन देने वाले हाथ उसे ज्यादा अच्छे लगेंगे।

इसके विपरीत संवेदनहीनता के इस वर्तमान समय में भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो मदद के लिए दौड़ पडते हैं। हम सबने सोशल मीडिया पर अनेक ऐसे समूह देखे होंगे, जो गुड मार्निंग, गुड नाइट के साथ दिनभर लतीफे तथा मीम या मनोरंजक रील एक-दूसरे को भेजते रहते हैं, लेकिन इसी सोशल मीडिया पर कुछ समूह ऐसे भी हैं, जो सिर्फ मदद करने के उद्देश्य से बने हैं। रक्त दान करने वालों का एक समूह ऐसा भी है जो देश भर के अस्पतालों में अपने नेटवर्क के जरिए जरूरतमंदों को खून देने पहुंच जाते हैं।

कुछ समय पहले एक नन्हे बालक के ह्रदय में छेद था, जिसका आपरेशन करवाना जरूरी था। साथ ही खर्च बहुत था, जिसे उसके माता-पिता उठाने में सक्षम नहीं थे। मगर सोशल मीडिया पर किसी भले मानुष ने इस संबंध में लिख कर जारी किया। इसके बाद मदद के लिए अनेक हाथ उठे और उससे नन्हे बच्चे का आपरेशन एक बड़े अस्पताल में बिना दिक्कत हो गया। बचे हुए पैसों से बैंक में एक एफडी बनवाई गई, जिससे भविष्य में उसके शिक्षण में भी मदद हो सके। एक तरफ कुछ अस्पताल सिर्फ पैसा बनाने में लगे हुए हैं, तो कुछ अस्पताल ऐसे भी हैं, जो पैसों से ज्यादा मनुष्यों के स्वास्थ्य की चिंता करते हैं, मनुष्यता की फिक्र करते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के लोग इस देश-दुनिया में हैं। न तो संवेदनशीलता कम हुई है, न सभी मनुष्य संवेदनहीन हो गए हैं।

दुनिया मेरे आगे

> **अगर दुर्घटना में घायल किसी व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने के लिए मदद की जरूरत होती है और कोई व्यक्ति आवाज लगा रहा होता है, तो भी पास से गुजर रहे वाहन रुकते नहीं। दस मिनट में पिज्जा पहुंचाने वाले शहरों में भी एंबुलेंस घंटे भर के इंतजार के बाद ही पहुंचती है।**

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

चौपाल

भविष्य की चिंता

वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, अरावली क्षेत्र हर वर्ष करोड़ों क्यूबिक मीटर वर्षाजल को धरती के भीतर पहुंचा कर भूजल स्तर को बनाए रखता है, जबकि इसकी चट्टानी संरचना थार रेगिस्तान की रेत को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है। केवल ऊंचाई आधारित परिभाषा लागू होती, तो राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली-एनसीआर की कई नीची पहाड़ियां, घाटियां और वन क्षेत्र कानूनी संरक्षण से बाहर हो जाते, जिससे खनन, जमीन-जायदाद, कारोबार और औद्योगिक गतिविधियों का रास्ता खुल जाता। बार-बार कहा गया है कि अरावली कोई सीधी, एक समान पर्वत-रेखा नहीं, बल्कि इसमें पहाड़, पठार, ढलान, जलधाराएं और वनस्पति आपस में जुड़ी हुई हैं। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्देश कि टिकाऊ खनन योजना बनने तक नई खदान लीज न दी जाए, इसलिए अहम है, क्योंकि यह पहली बार आर्थिक गतिविधियों को पारिस्थितिकी क्षमता से जोड़ने की दिशा में ठोस कदम है। विकास और संरक्षण को अलग-अलग खांचों में नहीं, बल्कि एक समग्र दृष्टि से देखा जाना चाहिए, क्योंकि यह करोड़ों लोगों के जीवन की सुरक्षा का प्रश्न है।

– विभूति बुपक्या, दिल्ली

मनमानी नीतियां

अमेरिका में पिछले दिनों एक ऐसा विधेयक पेश किया गया, जिसमें भारत सहित कुछ देशों से आयातित वस्तुओं पर पांच सौ फीसद तक शुल्क लगाने का प्रावधान किया गया है। यह विधेयक अब अमेरिकी संसद के समक्ष चर्चा और विचार-विमर्श के बाद मतदान के लिए आएगा। इसलिए इस विषय को लेकर अंतिम स्थिति स्पष्ट होने में अभी समय है, लेकिन इसके संकेत भर से ही व्यापार एवं उद्योग जगत में चिंता स्वाभाविक रूप से देखी जा रही है। यह उल्लेखनीय है कि फिलहाल यह शुल्क लागू नहीं हुआ है, बल्कि केवल प्रस्ताव के रूप में सामने आया है। यदि यह विधेयक पारित होकर कानून का रूप लेता है, तो भारतीय निर्यात अमेरिकी बाजार में महंगा हो जाएगा, जिसका प्रतिकूल प्रभाव सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों तथा रोजगार के अवसरों पर पड़ सकता है। विशेष रूप से वे क्षेत्र, जिनकी निर्भरता अमेरिकी बाजार पर अधिक है।

– चंद्र प्रकाश शर्मा, दिल्ली

संदेह का दायरा

पश्चिम बंगाल में प्रवर्तन निदेशालय की हालिया कार्रवाई को लेकर जो दृश्य सामने आए, उन्हें अच्छा नहीं कहा जा सकता। एक मुख्यमंत्री का खुद मौके पर पहुंचना, अधिकारियों के सामने दस्तावेजों और हार्ड डिस्क को अपने पास 'सुरक्षित' रखने की कोशिश करना, ये सब सत्ता की बेचैनी को उजागर करते हैं। यह मामला सिर्फ एक छापे तक सीमित नहीं है, बल्कि संवैधानिक मर्यादाओं और संस्थागत संतुलन से जुड़ा है। भारत के संघीय ढांचे में राज्यों को अधिकार मिले हैं, लेकिन कानून के शासन से ऊपर कोई नहीं। जांच एजंसियां जब किसी शिकायत या न्यायिक निर्देश के तहत कार्रवाई करती हैं, तो उसमें राजनीतिक पद या प्रभाव आड़े नहीं आना चाहिए। मुख्यमंत्री का मौके पर पहुंचना, भले ही सहानुभूति या निगरानी के नाम पर हो, लेकिन इसका संदेश गलत जाता है, खासतौर पर जब सियासत होने लगती हो।

– सुभाष बुड़ावन, रतलाम

दुनिया को सबक

यदि किसी देश में मानव सुरक्षा गंभीर संकट में हो, तो बाहरी हस्तक्षेप नैतिक रूप से उचित ठहराया जा सकता है। मगर यह औचित्य तभी तक मान्य है, जब तक वह अंतरराष्ट्रीय कानूनों, संयुक्त राष्ट्र की वैधता और वैश्विक सहमति की सीमाओं में बंधा हो। समस्या हस्तक्षेप की अवधारणा में नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपे स्वार्थों में है, जिन्हें मानवीय मूल्यों की भाषा में छिपाने का प्रयास किया जाता है। शीत युद्ध के दौरान अमेरिकी हस्तक्षेपों की आलोचना अवश्य हुई, पर तब भी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को खुली चुनौती देने से परहेज किया जाता था। आज स्थिति कहीं अधिक खतरनाक है। बीते वर्षों में कुछ शक्तिशाली देशों ने यह मान लिया है कि अंतरराष्ट्रीय कानून उनके लिए बाध्यता नहीं, बल्कि आवश्यकता अनुसार इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

निवेश से पहले शेयर बाजार की दुनिया को समझें

जनसत्ता कारोबाजार

आपको शेयर बाजार भाता है, लेकिन आप उसमें निवेश करने का तरीका नहीं जानते, इसलिए दुविधा में रहते हैं। आपको पैसा डूबने का डर रहता है। जब आप सुनते या पढ़ते हैं कि शेयर बाजार में निवेश बाजार जोखिम के अधीन है तो डर जाते हैं। यह सच है कि शेयर बाजार में निवेश करना जोखिम भरा है पर यदि फंडामेंटल पता हो तो जोखिम को शून्य स्तर पर लाया जा सकता है। हर प्रकार के निवेशकों को चाहिए कि पहले शेयर बाजार के कुछ जरूरी शब्दावली के बारे में जान लें। दरअसल, शेयर बाजार के कारोबार के विश्लेषण में जिस शब्दावली का उपयोग होता है, उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने को हम फंडामेंटल विश्लेषण कहते हैं।

कैसे करते हैं फंडामेटल विश्लेषण

इसमें हम किसी कंपनी की आर्थिक सेहत जानते हैं, जिसमें कंपनी के प्रबंधन, तुलनात्मक फायदे, भविष्य में विकास संभावनाएं आदि तथ्य शामिल होता है। इसमें कंपनी के पुराने और वर्तमान वित्तीय आंकड़ों का अध्ययन होता है, जिससे कंपनी का लक्ष्य और भविष्य का परिदृश्य पता चलता है।

फंडामेंटल विश्लेषण का मतलब है किसी कंपनी का वित्तीय विश्लेषण, औद्योगिक विश्लेषण और भविष्य विश्लेषण। किस कंपनी में कितनी मजबूती है, इसे जानने के लिए कंपनी के आय, मुनाफा, घाटा और बैलेंस शीट जैसे आंकड़ों पर नजर डालना जरूरी है। इससे कंपनी की लिक्विडिटी स्थिति और मुनाफे की संभावनाओं का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

कैसे करते हैं किसी कंपनी के मुनाफे कमाने के अनुपात की संभावनाओं की गणना : इसमें हम मुख्य रूप से कंपनी के आपरेटिंग मार्जिन, शुद्ध मुनाफे का मार्जिन, एसेट पर रिटर्न की संभावना, इक्विटी पर रिटर्न की संभावना, प्रति शेयर कमाई (ईपीएस) और प्राइस अर्निंग (पीई) अनुपात पर ध्यान देते हैं।

आपरेटिंग मार्जिन : परिवर्तनशील उत्पादन लागत (जिसमें कच्चे माल की लागत भी शामिल है) वेतन आदि निकालने के बाद कंपनी के पास जो राजस्व बचता है, उसे आपरेटिंग मार्जिन कहते हैं। इसके जरिए संकेत मिलते हैं कि समय-समय पर बदलने वाली लागत पर कंपनी का नियंत्रण है। किसी कंपनी को अपनी तयशुदा लागत जैसे कर्ज पर ब्याज आदि को चुकाने के लिए अच्छे आपरेटिंग मार्जिन की जरूरत होती है। कंपनी की कुल आय में से आपरेटिंग लाभ को भाग देने के बाद आपरेटिंग मार्जिन निकाला जाता है।

नेट प्राफिट मार्जिन : टैक्स चुकाने के बाद बचे कंपनी के मुनाफे को नेट प्राफिट मार्जिन कहते हैं। ये किसी कंपनी की कीमत निर्धारण की नीतियों की तरफ संकेत करती है।

रिटर्न आन असेट (आरओए) : इसके जरिए निवेशकों को पता चलता है कि शुद्ध आय हासिल करने में कंपनी का प्रबंधन कितनी कुशलता से असेट का उपयोग कर रहा है। जितना उच्चतम आरओए होगा उतना ही कंपनी के लिए बेहतर होगा, क्योंकि इससे पता चलता है कि कंपनी कम निवेश से ज्यादा रिटर्न कमा पा रही है। कुल वसेट में से शुद्ध मुनाफे को भाग देने के बाद रिटर्न आन असेट की गणना की जा सकती है।

शेयर सूत्र

रिटर्न आन इक्विटी (आरओई) : इसके जरिए पता चलता है कि कंपनी ने टोटल नेट वर्थ (शेयरों की पूंजी कैश रिजर्व और अधिभार) के अनुपात में कितना मुनाफा कमाया है। जिस कंपनी का आरओई उच्चतम होगा उस कंपनी की आंतरिक पूंजी पैदा करने की क्षमता उतनी ही ज्यादा होगी।

इक्वटी प्रति शेयर (ईपीएस) : वह भाग जो कंपनी के मुनाफे में से हरेक शेयरधारक को दिया जाता है। ये एक प्रकार से कंपनी के मुनाफे कमाने के अनुमान का दिशासूचक है। कंपनी की शुद्ध आय को आउटस्टेंडिंग शेयरों से भाग देने के बाद ईपीएस निकाली जाती है।

प्राइस अर्निंग रेश्यो (पी/ई) : किसी कंपनी में निवेश करते समय ये सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक होता है। खासतौर पर जब आप इक्विटी में निवेश कर रहे हों। मुख्यतौर पर पीई के जरिए ये पता चलता है कि कंपनी की कमाई के आधार पर बाजार की लाभ देने की कितनी क्षमता है।

कंपनी के शेयर के मौजूदा बाजार भाव से ईपीएस को भाग देने के बाद पीई निकाला जा सकता है। उम्मीद है कि इस जानकारी के माध्यम से आप किसी शेयर का मूल्यांकन निकालने में सक्षम हो जाएंगे।

जब पहली बार म्यूचुअल फंड में लगाना हो पैसा

जनसत्ता कारोबाजार

अगर आप शेयर बाजार से कमाई करना चाहते हैं और इसमें निवेश के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, तो आपके लिए सबसे बेहतर जरिया है म्यूचुअल फंड के रास्ते पैसा लगाना। इसका कारण यह है कि म्यूचुअल फंड विशेषज्ञों द्वारा संचालित होता है, जिन्हें शेयर बाजार की समझ होती है और वे काफी सोच समझ कर आपका पैसा शेयर बाजार में निवेश करते हैं। जब आप पहली बार किसी म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं, तो किस तरह की जनकारी होनी चाहिए व किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

पहले जानें म्यूचुअल फंड क्या है

म्यूचुअल का मतलब होता है आपस में मिलकर बनाया गया फंड। कुछ जानकार लोग मिलकर एक फंड का निर्माण करते हैं और उसे किसी खास मकसद से निवेश करते हैं। इसे एक उदाहरण से समझते हैं। आप एक निवेशक हैं और आप ओएनजीसी जैसे ब्लू चिप कंपनी के शेयर में पैसा लगाना चाहते हैं या सोने में या सरकारी बांड में पैसा लगाना चाहते हैं, लेकिन आपके पास पैसे भी कम हैं और आपको शेयर बाजार में निवेश के बारे में जानकारी भी नहीं है। मान लीजिए आप एक हजार रुपए शेयर में या सोना में निवेश करना चाहते हैं, पर इसमें आपकी पसंद का न कोई शेयर आ रहा है और न ही सोना। ऐसे में आपकी इस चाहत को पूरी करने के लिए है म्यूचुअल फंड। वित्तीय कंपनियों ने छोटे और नौसिखिए निवेशकों की इसी कठिनाई को दूर करने के लिए म्यूचुअल फंड की अवधारणा को पेश किया था। इसमें आपके जैसे हजारों छोटे व नौसिखिए निवेशकों के पैसे को इकट्ठा कर आपकी पसंद की कंपनी या सेक्टर में निवेश किया जाता है। जैसे-जैसे आपका निवेश बढ़ता जाता है, आपके खाते में शेयर या सोना या बांड की इकाई (यूनिट) जमा होती जाती है। म्यूचुअल फंड के जरिए जानकारों की देखरेख में पूंजी बाजार (शेयर, बांड, सोना) में निवेश किया जाता है। डिमैट खाता जरूरी है।

फंड का फंडा

याद रखें

निवेश शुरू करने से पहले बाजार की सही सूचना रखना बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए बस थोड़ा सा समय सूचना को समझने और विश्लेषण करने में खर्च करना होगा। जो निवेश की सफलता की संभावना को बढाने के लिए जरूरी है।

सेक्टर का करें चयन

एक नए निवेशक को अपने स्तर पर या किसी भी म्यूचुअल फंड के प्रतिनिधि से राय लेकर यह तय कर लेना चाहिए कि वह किस सेक्टर में निवेश करेगा। सेक्टर का मतलब किस क्षेत्र की कंपनी, यानी पेट्रोलियम, रियल एस्टेट, एफएमसीजी, फार्मा, माइनिंग, एनर्जी, स्वर्ण आदि सेक्टर हैं। निवेश के लिए सेक्टर चयन की प्रक्रिया को पोर्टफोलियो (निवेश सूची) बनाना कहते हैं। पोर्टफोलियो का निर्धारण करना म्यूचुअल फंड की भाषा में असेट अलोकेशन कहलाता है। असेट अलोकेशन वो तरीका है जो ये निर्धारित करता है कि आप अपने पैसे को विभिन्न निवेशों में कैसे लगाएंगे कि अपके निवेश में सभी सेक्टरों का उचित मिश्रण हो। यानी हाइब्रिड इनवेस्टमेंट। असेट अलोकेशन के लोकप्रिय नियम कहते हैं कि निवेशक की जो भी उम्र हो, उसे अपने पोर्टफोलियो में अपनी उम्र जितना धन प्रतिशत रखना चाहिए। उदाहरण के लिए- यदि निवेशक की उम्र 25 साल है तो उसे अपने निवेश का 25% ऋण (डेट फंड) में और शेष इक्विटी (शेयर) में लगाना चाहिए। असेट अलोकेशन तैयार करते समय आप अपनी आयु, व्यवसाय, आप पर निर्भर परिवार के सदस्यों की संख्या और अपनी जरूरत पर जरूर गौर करें।

सही फंड का चुनाव अहम

सही फंड का चुनाव अहम है। ध्यान रखें कि सही फंड चुनने की कुंजी उनके निवेश सिद्धांत और रिटर्न देने की स्थिरता पर निर्भर करती है। आप वो फंड चुनें जो आपकी जरूरतों के लिए उपयुक्त हो, ये सुनिश्चित करने के लिए निम्न बातों पर विचार करें: 1. अपने आर्थिक लक्ष्यों को निर्धारित करें। 2. क्या आप अपनी सेवानिवृत्ति के लिए निवेश कर रहे हैं, या अपने बच्चे की शिक्षा के लिए या फिर वर्तमान आमदनी के लिए? 3. अपनी समय सीमा पर विचार करें। क्या आपको तीन महीने के समय में पैसा चाहिए या फिर तीन साल में? जितना विस्तृत आपका समय होगा उतना ज्यादा जोखिम आप निवेश में उठाने के काबिल होंगे। 4. आप जोखिम उठाने के बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप उच्च रिटर्न की संभावना के लिए शेयर बाजार के उतार चढ़ाव को बर्दाश्त करने की स्थिति में हैं? आपको अपने स्वंय की जोखिम उठाने की क्षमता के बारे में अवश्य पता होना चाहिए, यह सही निवेश योजना को चुनने के लिए एक गाइड हो सकता है। याद रखें, संभावित रिटर्न की चिंता किए बिना यदि आप किसी विशेष परिसंपत्ति वर्ग के साथ सहज नहीं हैं तो आपको अन्य निवेश विकल्पों पर विचार करना चाहिए। 5. ध्यान रखें-इन सभी कारकों का सीधा प्रभाव उन फंड पर पड़ता है जिन्हें आप चुनते हैं और जो रिटर्न आप प्राप्त करने की उम्मीद रखते हैं।

म्यूचुअल फंड के प्रकार : 1. विविध यानी डाइवर्सिफाइड इक्विटी फंड, 2. इंडेक्स फंड, 3. अवसर फंड, 4. मिड कैप फंड, 5. इक्विटी लिंक्ड बचत योजनाएं, 6. सेक्टर फंड और 7. संतुलित फंड।

आपातकालीन परिस्थितियों में हैं सस्ते कर्ज के कई रास्ते

जनसत्ता कारोबाजार

अगर आपको आपातकालीन परिस्थितियों में पैसों की जरूरत पड़ती है, तो आम तौर पर आप पर्सनल लोन की ओर भागते हैं। यह एक आसान तरीका है, लेकिन इसकी खराबी है कि यह सौदा महंगा पड़ता है। पर्सनल लोन की ब्याज दरें अमूमन 15 फीसदी से ज्यादा ही होती हैं। अगर आप धैर्य और विवेक से काम लें तो न केवल कम ब्याज दर पर बल्कि कम समय में भी सस्ती दरों पर जरूरत के लायक पैसों की व्यवस्था की जा सकती है। सस्ते लोन के कई आसान रास्ते मौजूद हैं।

जायदाद के बदले कर्ज

जायदाद के बदले कर्ज वास्तव में किसी संपत्ति को गिरवी रख कर लिया जाने वाला कर्ज है। कर्ज की राशि गिरवी रखी जाने वाली अचल संपत्ति के बाजार मूल्य और कर्ज लेने वाले व्यक्ति की आय पर निर्भर करता है। जायदाद के बदले लोन सुरक्षित लोन की श्रेणी में आता है और यही वजह है कि इसकी ब्याज दरें पर्सनल लोन की तुलना में कम होती है। संपत्ति को गिरवी रख कर लिए गए लोन का उपयोग कारोबार को बढ़ाने, बच्चों की शादी या उनकी उच्च शिक्षा, मेडिकल खर्च आदि के लिए किया जा सकता है। जायदाद जो गिरवी रखी जा सकती है उसमें किराए पर दिया गया घर, अपना घर और जमीन शामिल है।

सोने के बदले लोन

शायद ही कोई भरतीय परिवार होगा जिसे सोने (गोल्ड) से लगाव न हो। पैसों की तुरंत जरूरत होने पर सोने के बदले लोन लिया जा सकता है। इसके दो कारण हैं। एक तो इसकी प्रोसेसिंग में वक्त नहीं लगता, मतलब सोने के बदले आपको दो-तीन घंटे के भीतर कर्ज मिल सकता है। इसकी ब्याज दरें भी कम होती हैं। ज्यादातर बड़े बैंक और कुछ एनबीएफसी जैसे मुथूट फाइनेंस, मण्णपुरम गोल्ड आदि सोने के बदले लोन उपलब्ध कराते हैं। इस लोन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें नियमित रूप से मासिक किस्तों का भुगतान करना जरूरी नहीं होता है।

बचत कीबात

सावधि जमा के बदले कर्ज

पैसों की जरूरत पड़ने पर सावधि जमा यानि एफडी (फिक्स्ड डिपाजिट) सोने के बाद सबसे जल्द और आसानी से लोन उपलब्ध कराता है। इसके लिए जरूरी है कि आपकी सावधि जमा कम से कम एक साल की हो। आम तौर पर इसकी ब्याज दरें एफडी की जमा दरों की तुलना में एक या दो फीसदी अधिक होती हैं। इसकी प्रोसेसिंग की अवधि बैंकों पर निर्भर करती है, लेकिन अधिकतर मामलों में दो से तीन दिनों में इसकी प्रोसेसिंग हो जाती है। ब्याज की गणना कर्ज की राशि पर ही किया जाता है। आम तौर पर एफडी की कुल राशि के 80 फीसद तक का कर्ज मिल सकता है। इसका पुनर्भुगतान एफडी की अवधि के दौरान ही करना होता है।

एंडोमेंट बीमा को गिरवी रख कर

पारंपरिक जीवन बीमा योजनाएं या एंडोमेंट बीमा पैसों की जरूरत के समय अहम भूमिका निभा सकती हैं। एंडोमेंट बीमाओं के विरुद्ध मिलने वाला कर्ज सुरक्षित श्रेणी में आता है और यही वजह है कि इसकी ब्याज दरें पर्सनल लोन की तुलना में कम होती हैं। एंडोमेंट बीमाओं के बदले प्राप्त होने वाले कर्ज की राशि बीमा के सरेंडर वैल्यू पर निर्भर करती है। दूसरी बात यह है कि बीमा को बैंक के नाम असाइन करना होता है। अगर कर्ज लेने वाला व्यक्ति ऋण का भुगतान समय पर कर देता है तो बैंक वापस उस व्यक्ति के नाम बीमा को 'री-असाइन' कर देता है। अगर बकाया राशि और ब्याज सरेंडर वैल्यू के बराबर हो जाती है तो 'पालिसी फोरक्लोज' कर दी जाती है। जिसका मतलब हुआ कि बीमा को 'सरेंडर' करते हुए बैंक ने अपने कर्ज की वसूली कर ली।

शेयर, म्यूचुअल फंड आदि के बदले ऋण

जरूरत पड़ने पर शेयर या म्यूचुअल फंडों के बदले भी ऋण लिया जा सकता है जिसकी ब्याज दरें पर्सनल लोन की तुलना में कम होती है। दस्तावेज के तौर पर पहचान, हस्ताक्षर, पते का प्रूफ, ट्रांसफर डीड, डीमैट प्लेज फार्म आदि की जरूरत होती है। कुछ बैंक कर्ज लेने वाले व्यक्ति को शेयरों को बैंक के नाम करने को कहते हैं। ब्याज दरें भी पर्सनल लोन से कम ही होती हैं। सभी शेयरों या म्यूचुअल फंडों के बदले कर्ज नहीं मिल सकता।

खेती-बाड़ी

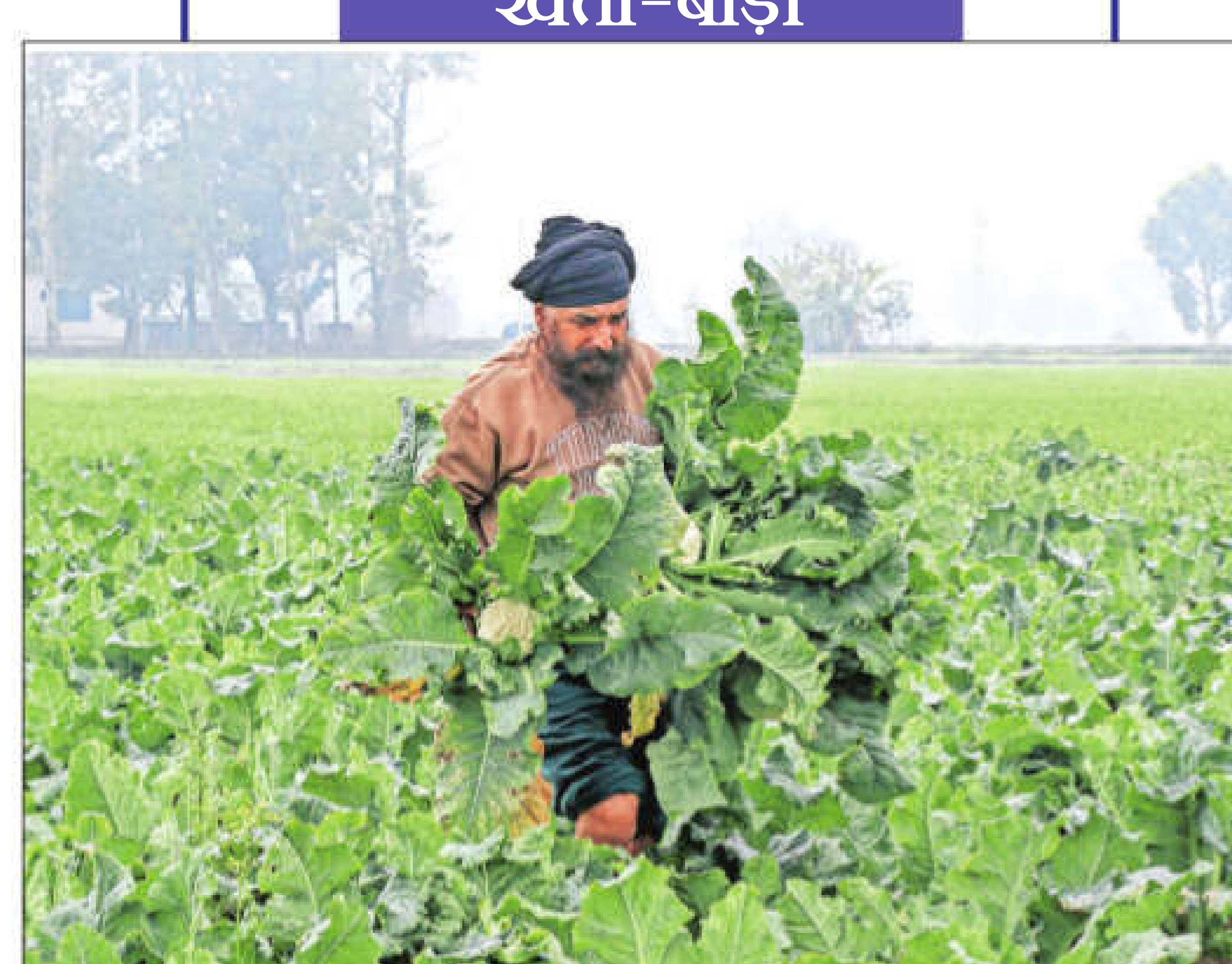

जम्मू में एक किसान गोभी के खेत में।

बैंकों और एनबीएफसी के लिए रिजर्व बैंक के नए नियम

जनसत्ता कारोबाजार

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने बैंकों और गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए संबंधित पार्टी उधारी (रिलेटेड पार्टी लेंडिंग) से जुड़े मामलों के लिए नए और सख्त दिशानिर्देश जारी किए हैं। क्रेडिट रिस्क मैनेजमेंट (सीआरएम) से जुड़े इन दिशानिर्देशों का मकसद साफ है- बैंकों और वित्तीय संस्थानों में हितों के टकराव को रोकना, पारदर्शिता बढ़ाना और कारपोरेट प्रबंधन-नियमन को मजबूत करना। ये नए नियम एक अप्रैल 2026 से लागू होंगे, पर मौजूदा कर्जों को उनकी परिपक्वता तक जारी रखने की छूट दी गई है।

नए दिशानिर्देशों के तहत बैंक अब अपने ही प्रमोटरों, उनके रिश्तेदारों और 10 फीसद या उससे ज्यादा हिस्सेदारी रखने वाले शेयर धारकों को सीधे कर्ज नहीं दे सकेंगे। इतना ही नहीं, जिन संस्थाओं पर इन लोगों का नियंत्रण या असर है, उन्हें भी कर्ज देने पर पाबंदी रहेगी। हालांकि, ऐसे गैर-रणनीतिक संस्थागत निवेश को इस नियम के दायरे से बाहर रखा गया है, जिनमें शेयर धारकों का नियंत्रण नहीं है। कर्ज का सालाना खुलासा भी जरूरी होगा। हर तिमाही में यह जांच होगी कि नियमों का पालन हो रहा है या नहीं।

क्रिप्टोकरंसी खरीदते समय सावधानियां बरतनी जरूरी

डिजिटल मुद्रा की दुनिया में कदम रखने से पहले कई जरूरी बातें जानना आवश्यक है। क्रिप्टोकरंसी आज निवेश का सबसे चर्चित विकल्प बन चुकी है। बिटकाइन की कीमत ने कई लोगों को रातोंरात अमीर बना दिया, तो कई का निवेश डूब भी गया। बाजार में हजारों डिजिटल सिक्के उपलब्ध हैं, लेकिन सभी सुरक्षित या लाभकारी नहीं होते। यदि आप भी क्रिप्टो में पैसा लगाने की सोच रहे हैं, तो पहले उसके प्रकार समझें और सावधानी बरतें। क्रिप्टोकरंसी मुख्य रूप से कितने प्रकार की होती हैं?

बिटकाइन : पहली और सबसे बड़ी क्रिप्टोकरेंसी। इसे 'डिजिटल सोना' कहा जाता है। कुल मात्रा केवल 2.1 करोड़ सिक्कों तक सीमित है। इसका उपयोग मुख्य रूप से मूल्य संग्रह और बड़े लेन-देन के लिए होता है।

आल्टकाइंस : बिटकाइन के अलावा बाकी सभी क्रिप्टो को आल्टकाइन कहते हैं। इनमें शामिल हैं, ईथेरियमः स्मार्ट कांट्रैक्ट और डीएप्स (डिसेंट्रलाइज्ड एप्स) का आधार। रिपल (एक्सआरपी): बैंकिंग क्षेत्र में तेज और सस्ते अंतरराष्ट्रीय भुगतान के लिए।

लाइटकाइन : बिटकाइन से तेज और कम शुल्क वाला विकल्प।

स्टेबलकाइन : इनकी कीमत अमेरिकी डालर जैसी स्थिर मुद्रा से जुड़ी रहती है। टेदर (यूएसडीटी) और यूएसडीसी (यूएसडीसी) लोकप्रिय हैं। ट्रेडिंग के दौरान कीमत के उतार-चढ़ाव से बचने के लिए इनका इस्तेमाल होता है।

मेम काइन : सोशल मीडिया मीम्स से प्रेरित, अत्यधिक जोखिम वाले सिक्के। डागकाइन और शीबा इनु इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इनकी कीमत अक्सर हाइप और सेलिब्रिटी समर्थन पर निर्भर करती है।

यूटिलिटी टोकन : किसी प्लेटफार्म की सेवाओं तक पहुंच देने वाले टोकन। उदाहरणः बिनेंस काइन (बीएनबी) झ ट्रेडिंग शुल्क में छूट के लिए।

किस तरह के जोखिम

क्रिप्टोकरेंसी में अत्यधिक कीमत में उतार-चढ़ाव, धोखाधड़ी जैसे पोंजी स्कीम और हैकिंग, नियामक की अनिश्चितता, तकनीकी जटिलता और सुरक्षा का अभाव शामिल हैं, जहां गलती से भेजे गए फंड वापस नहीं मिलते और डिजिटल वालेट खोने पर संपत्ति हमेशा के लिए जा सकती है, जिससे पूरा निवेश डूबने का खतरा रहता है।

बाजार की अस्थिरता : कीमतें बहुत तेजी से और अप्रत्याशित रूप से घटती-बढ़ती हैं, जिससे बड़ा नुकसान हो सकता है।

धोखाधड़ी और घोटाले : नकली सिक्के, फिशिंग और पोंजी स्कीम के जरिए धोखेबाज निवेशकों को ठगते हैं।

सुरक्षा जोखिम : हैकिंग, फिशिंग, और निजी कुंजी खोने से डिजिटल संपत्ति हमेशा के लिए जा सकती है।

नियामक अनिश्चितता : कई देशों में नियमों की कमी या अचानक बदलाव कीमतों और व्यापार को प्रभावित कर सकता है।

कोई बीमा या रिफंड नहीं : पारंपरिक बैंकों के विपरीत, क्रिप्टो में गलती से भेजे गए पैसे वापस नहीं मिलते और कोई बीमा कवरेज नहीं होता।

क्रिप्टो करामात

तकनीकी निर्भरता : स्मार्ट कांट्रैक्ट में बग होने का जोखिम होता है।

बाजार में हेरफेर : प्रभावशाली लोग या समूह कीमतों में हेरफेर कर सकते हैं।

नियंत्रण की कमी : सरकारी या बैंक का नियंत्रण न होने से मुश्किल आने पर मदद मिलना कठिन है।

बरतें ये सावधानियां

क्रिप्टो बाजार में धोखाधड़ी और हैकिंग से बचने के लिए विशेषज्ञों की सलाह है कि निम्न बातों का ध्यान रखें। केवल उतना ही निवेश करें जितना आप खोने का जोखिम उठा सकते हैं। सुरक्षित वालेट और प्रतिष्ठित एक्सचेंज का उपयोग करें। धोखाधड़ी वाली योजनाओं से सावधान रहें।

गहन शोध जरूरी : किसी सिक्के में पैसा लगाने से पहले उसका व्हाइट पेपर पढ़ें, टीम की विश्वसनीयता जांचें और पिछले प्रदर्शन देखें। काइनमार्केटकैप या काइनगेकको जैसे विश्वसनीय प्लेटफार्म से जानकारी लें।

विश्वसनीय मंच चुनें : भारत में वजीरएक्स, काइनडीसीएक्स या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बिनेंस, काइनबेस जैसे एक्सचेंज का उपयोग करें।

वालेट की सुरक्षा : हार्डवेयर वालेट (लेजर, ट्रेजर) सबसे सुरक्षित होते हैं। कभी अपनी प्राइवेट की या सीड फ्रेज किसी के साथ शेयर न करें।

स्कैम से बचाव : 'डबल करने का वादा', 'फेक एयरड्राप' या अनजान लिंक से सावधान रहें। कोई गारंटीड लाभ वाली स्कीम धोखा हो सकती है।

जोखिम प्रबंधन : केवल उतना पैसा लगाएं, जिसके डूबने से आपकी आर्थिक स्थिति पर असर न पड़े। सभी पैसे एक ही सिक्के में न लगाएं।

कर और कानूनी नियम : भारत में क्रिप्टो लाभ पर 30 फीसद कर और एक फीसद टीडीएस लागू है। आयकर रिटर्न में इसे जरूर घोषित करें।

वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश दीर्घकालिक धैर्य और सतर्कता मांगता है। यदि आप नए हैं, तो पहले छोटी राशि से शुरुआत करें।

-दिव्या तंवर शिक्षाविद व साइबर विशेषज्ञ

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

प्रदूषण के खिलाफ

राष्ट्रीय पर्यावरण मानक प्रयोगशाला की शुरुआत पर्यावरण प्रबंधन को मजबूत बनाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। नई दिल्ली में शुरू किए गए इस प्रयोगशाला का मकसद आयातित उपकरणों और विदेशी प्रमाणन तंत्रों पर निर्भरता को कम करना है, क्योंकि कभी-कभी ऐसे उपकरण भारत की आबोहवा के अनुकूल साबित नहीं हो पाते हैं। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा भी कि अब भारत को प्रदूषण निगरानी से जुड़े उपकरणों के प्रमाणन के लिए विदेशी एजेंसियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा और भारतीय जलवायु परिस्थितियों के अनुसार अब यहीं परीक्षण की सुविधा उपलब्ध रहेगी। इस प्रयोगशाला की शुरुआत से सिर्फ प्रदूषण के खिलाफ हमारी लड़ाई मजबूत नहीं होगी, बल्कि दूसरे देशों पर निर्भरता कम होने से विदेशी मुद्रा की बचत भी होगी और निवेशकों का भरोसा ज्यादा मजबूत होगा। इसकी एक वजह यह भी है कि इस प्रकार की राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं ब्रिटेन के अलावा सिर्फ भारत ही जुटा सका है। इसी कारण कयास लगाए जा रहे हैं कि इससे घरेलू विनिर्माण, स्टार्टअप और लघु व मध्यम उद्योगों को बल मिलेगा, जिससे परोक्ष रूप से भारत की अर्थव्यवस्था को फायदा होगा।

ऐसे प्रयास की जरूरत देश को थी भी। सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी ऐंड क्लीन एयर (सीआरईए) का बीते पांच वर्षों (2020 के कोविड-काल को छोड़कर 2019 से 2024 तक) का आंकड़ा बताता है कि देश के 44 फीसदी शहर एक लंबे समय से वायु प्रदूषण से जूझ रहे हैं। साल 2025 में तो असम-मेघालय सीमा पर स्थित बर्नीहाट सबसे प्रदूषित शहर आंका गया, जिसके बाद ही दिल्ली और गाजियाबाद का स्थान था। लंबे समय तक दूषित हवा में रहना कितना खतरनाक हो सकता है, इसका पता पिछले महीने सरकार द्वारा संसद में दी गई जानकारी से चलता है कि साल 2022 से 2024 के बीच दिल्ली के छह सरकारी अस्पतालों में सांस की गंभीर बीमारियों के दो लाख से भी अधिक मरीज आए, क्योंकि देश की राजधानी प्रदूषण के बढ़े स्तर से लगातार जूझती रही है। इन सबके अलावा ऐसे तमाम आंकड़े हैं, जो बताते हैं, दूसरे देशों की तुलना में यहां स्थिति ज्यादा गंभीर है। ऐसे में, उन उपकरणों की जरूरतें भी बढ़ जाती हैं, जो मानव जीवन को वायु प्रदूषण के नुकसान से बचा सकें। अब चूंकि स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उपकरणों को जांचा-परखा जा सकेगा, इसलिए उनके अधिक प्रभावी होने की उम्मीद बढ़ गई है।

अब भारत को प्रदूषण निगरानी से जुड़े उपकरणों के प्रमाणन के लिए विदेशी एजेंसियों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, जिसका इसे खासा फायदा होगा।

यह सुखद है कि जीवन की दोनों बुनियादी जरूरतों- हवा और पानी पर अब विशेष ध्यान दिया जाने लगा है। जिस तरह स्वच्छ हवा को लेकर कवायद तेज कर दी गई है, ठीक उसी तरह साफ पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने को लेकर भी प्रयास किए जा रहे हैं। इंदौर की घटना बेशक हमारी व्यवस्था पर एक गंभीर सवाल है, लेकिन लोकसभा में पेश आंकड़े बताते हैं कि पीने के पानी की गुणवत्ता जांचने के लिए देश में अब कुल 2,847 प्रयोगशालाएं हैं, जिनमें से 1,678 एनएबीएल से मान्यता-प्राप्त हैं। कुछ राज्य, जिनमें दुर्भाग्य से बड़े सूबे भी हैं, जरूर अभी जद्दोजहद कर रहे हैं, लेकिन ऐसी सुविधाएं बढ़ाने की कोशिशें अनवरत की जा रही हैं। जाहिर है, काम दोनों मोर्चों पर हो रहा है। हालांकि, इससे जल को निर्मल और हवा को स्वच्छ बनाए रखने की कवायद ढीली नहीं पड़नी चाहिए, क्योंकि कुदरत से मिली साफ हवा और साफ पानी जैसी नेमतों का कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 12 जनवरी, 1951

एक महान कार्य

जमींदारी उन्मूलन विधेयक आखिर उत्तर प्रदेश की विधानसभा द्वारा स्वीकार कर लिया गया। इसमें कोई शक नहीं कि इस विधेयक को स्वीकार करके उसने महान कार्य सम्पन्न किया है, जो देश के इतिहास में स्मरणीय रहेगा। यह अत्यन्त विवादास्पद विधेयक था और उस पर विचार करने में विधानसभा ने करीब ढाई साल का लम्बा समय लगाया। विधेयक में 341 धारायें हैं और विधानसभाओं के इतिहास में इतना लम्बा विधेयक शायद ही पहले पेश किया गया हो। विधेयक के विरोधियों को विचार के दौरान अपनी बात कहने का पूरा मौका दिया गया और उत्तर प्रदेश की सरकार पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता कि उसने जल्दबाजी से काम लिया है। इसके विपरीत यह अवश्य कहा जा सकता है कि उसने थोड़ी शिथिलता का परिचय दिया और इस आवश्यक विधेयक को कानूनी रूप देने में इतना विलम्ब लगने की आवश्यकता न थी। कुछ लोग इस विलम्ब के प्रति अपना असन्तोष भी व्यक्त करते रहे हैं। अब यह आशा की जाती है कि इस विधेयक को कानूनी रूप प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा। विधानसभा ने विधेयक में एक-दो संशोधन किये हैं, उनके कारण वह एक बार विधान परिषद के सामने और जायेगा और उसके बाद उस पर भारत के राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त की जायेगी। यह स्वीकृति मिलते ही वह कानून का रूप धारण कर लेगा। उत्तर प्रदेश की सरकार का विचार है कि गणराज्य स्थापना दिवस अर्थात् 26 जनवरी को वह कानून लागू हो जाये। उत्तर प्रदेश की सरकार इस शुभ दिवस पर इससे उत्तम उपहार उत्तर प्रदेश के किसानों को नहीं दे सकती।

कांग्रेस जमींदारी प्रथा को समाप्त करने के लिये वचनबद्ध है। उत्तर प्रदेश की विधानसभा द्वारा जमींदारी उन्मूलन विधेयक स्वीकार करवाकर कांग्रेस ने अपने पुराने वचन को पूरा किया है। इस वचन की यह आवश्यक शर्त थी कि जमींदारियों को उचित मुआवजा देकर खत्म किया जायेगा। इस विधेयक द्वारा वही किया गया है। विधेयक में मुआवजे का जो अनुपात निर्धारित किया गया है, उससे जमींदारों को सन्तोष नहीं है। वे इसे पर्याप्त नहीं समझ रहे हैं। दूसरी ओर समाजवादी हैं, जो मुआवजा देने मात्र के विरुद्ध हैं। कांग्रेस ने इस संबंध में केवल मध्यमार्ग का अनुसरण किया है।

कहां ले जाएगी टकराव की राजनीति

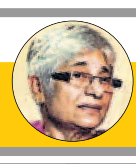

यहां स्कैन करें

नीरजा चौधरी | वरिष्ठ पत्रकार

अगर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से सीधे मोर्चा लेने की ममता बनर्जी की रणनीति सफल हुई, तो ऐसी घटनाएं उन राज्यों में भी दिख सकती हैं, जहां विरोधी दलों की सरकारें हैं।

पश्चिम बंगाल में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी से शुरू हुआ सियासी घमासान इस कदर कटु रूप ले लेगा, इसकी उम्मीद नहीं थी। केंद्रीय एजेंसी की कार्रवाई के खिलाफ खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी मैदान में उतर आई हैं और उन्होंने एलान किया है कि अब उनका अगला पड़ाव निर्वाचन आयोग होगा। इससे पहले यह मामला कलकत्ता हाईकोर्ट में भी पहुंचा, जहां अदालत कक्ष में अव्यवस्था का हवाला देते हुए सुनवाई 14 जनवरी तक टाल दी गई। तृणमूल कांग्रेस ने स्पष्ट कर दिया है कि वह इस लड़ाई को सड़क पर भी लड़ने को तैयार है और अदालत में भी।

विपक्ष का बड़ा आरोप है कि बीते 10 साल में जितने चुनाव हुए हैं, उनमें से एक राज्य को छोड़कर सभी जगहों पर मतदान-प्रक्रिया शुरू होने से ऐन पहले ईडी सक्रिय हुआ और विरोधी दलों के नेताओं को लक्ष्य बनाकर कार्रवाइयां की गईं। उसका सवाल है कि ईडी का यूं इस्तेमाल क्या राजनीतिक हित साधने की कोशिश नहीं है? जाहिर है, उसके निशाने पर भारतीय जनता पार्टी है। हालांकि, भाजपा इस आरोप को खारिज करते हुए 'टाइमिंग' के बजाय 'कंटेंट' पर ध्यान देने की बात कह रही है। उसके मुताबिक, ईडी बिना किसी सुबूत के तो कार्रवाई नहीं कर रहा?

निस्संदेह, ईडी के पास सुबूत हो सकते हैं, फिर भी लोकतंत्र में 'समय' काफी महत्वपूर्ण होता है। सभी जानते हैं कि कौन सा काम कब करना है, इसका असर राजनीति पर पड़ता है और लोग भी इससे खूब प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि सामान्यतः ऐसी कार्रवाइयों से बचा जाता है, ताकि यह संदेश न निकले कि सरकारी एजेंसी का सत्ता पक्ष द्वारा दुरुपयोग किया जा रहा है। इससे नीयत पर सवाल उठने लगते हैं।

यह सही है कि सत्तासीन पार्टियां पहले भी विरोधी दलों को लक्ष्य बनाकर कार्रवाइयां करती रही हैं। सत्तारूढ़ कांग्रेस पर कभी अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग के खूब आरोप लगते थे। उस पर आरोप है कि अपने शासनकाल में उसने 91 गैर-कांग्रेसी सरकारों को हटाने का काम किया है। मगर इतिहास की दुहाई देकर वर्तमान को सही साबित नहीं किया जा सकता। जो बातें पहली गलत थीं, वे आज भी गलत ही मानी जाएंगी। विपक्ष जो आरोप आज लगा रहा है, उसकी दोषी वह भी एक समय पर रही है, लेकिन आज की सरकार ऐसी कार्रवाई में ज्यादा सक्षम है। इसीलिए, केंद्र और विपक्ष शासित राज्यों में टकराव बढ़ गया है। इसके कारण भारतीय लोकतंत्र को लेकर चिंताएं भी गहरा गई हैं।

यह कोई छिपा रहस्य नहीं है कि भारतीय जनता पार्टी के लिए चुनाव जीतना किसी सैन्य कार्रवाई जैसा महत्वपूर्ण माना जाता है। वह इसके लिए अपने तमाम संसाधानों का इस्तेमाल करती है और जमीनी स्तर पर भी अपने कार्यकर्ताओं को लगातार सक्रिय बनाए रखती है। उसकी इसी रणनीति का एक हिस्सा विरोधी दल को कमजोर करना भी रहा है।

फिलहाल तनाव का केंद्र पश्चिम बंगाल है और सवाल है कि वहां का चुनाव इतना महत्वपूर्ण क्यों बन गया है? वास्तव में, यह तृणमूल कांग्रेस और भाजपा, दोनों के लिए वहां 'करो या मरो' जैसी स्थिति है। ममता बनर्जी को यदि यहां शिकस्त का सामना करना पड़ा, तो उनके लिए सियासी अस्तित्व को बचाने का संकट बढ़ जाएगा। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने उस तरह से अपना उत्तराधिकारी तैयार नहीं किया, जिस तरह कभी हमने उत्तर प्रदेश में देखा था। उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव ने अखिलेश यादव को अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुख्यमंत्री बना दिया था।

उधर, भाजपा की हार से यही राजनीतिक संदेश जाएगा कि तमिलनाडु की तरह पश्चिम बंगाल का रण जीतना भी उसके बूते की बात नहीं है। ऐसी स्थिति में, वैसे मतदाता, जो वाम मोर्चा से छिटककर तृणमूल के विकल्प के रूप में भाजपा को देख रहे हैं, वे उदासीन होकर फिर से लेफ्ट की ओर मुड़ सकते हैं, जिसका नुकसान भाजपा को अगले चुनावों में होगा।

वहीं, बंगाल की जीत से उसके लिए पूरब का द्वार खुल जाएगा। फिलहाल पूरी हिंदी पट्टी उसके कब्जे में है। बिहार में बेशक चेहरा नीतीश कुमार हैं, लेकिन वहां के तमाम घटनाक्रम यही बता रहे हैं कि परदे के पीछे की सारी जिम्मेदारी भाजपा के कंधों पर है। ऐसे में, बंगाल की जीत से भाजपा का पूरे देश में आधार बढ़ जाएगा।

हालांकि, यह इतना आसान नहीं है। ममता बनर्जी के बारे में सर्वविदित है कि वह लड़ाकू हैं। अपनी इसी छवि के बूते उन्होंने 34 साल की वाम मोर्चा सरकार को बाहर किया था। उनका हालिया रुख उनकी पुरानी छवि के अनुरूप ही है। ऐसे में, नजर इस बात पर बनी रहेगी कि वह ईडी-कार्रवाई के विरोध में क्या साधन अपनाती हैं? उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि बंगाल में वह इस एजेंसी को सफल नहीं होने देंगी।

अगर ईडी से सीधे मोर्चा लेने की उनकी यह रणनीति सफल रही, तो ऐसी घटनाएं उन राज्यों में भी दिख सकती हैं, जहां विरोधी दलों की सरकारें हैं। इसकी आशंका इसलिए भी अधिक है, क्योंकि साल 2026 राजनीतिक रूप से विपक्ष के नाम हो सकता है। इस वर्ष पश्चिम बंगाल ही नहीं, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन पांच सूबों में से तीन (बंगाल, तमिलनाडु और केरल) में भाजपा कभी सरकार नहीं बना सकी है। इस बार भी उसके लिए तस्वीर सुखद नहीं दिख रही। बंगाल में जहां ममता बनर्जी मुखर हैं, वहीं तमिलनाडु में द्रमुक गठबंधन से पार पाना अन्नाद्रमुक गठबंधन (इसमें भाजपा भी शामिल है) के लिए आसान नहीं होगा। केरल में कांग्रेस मजबूत स्थिति में है। असम में हिमंत बिस्वा सरमा के जीतने की उम्मीद जरूर है, मगर कांग्रेस भी जमीन पर खूब सक्रिय है। ऐसे में, बंगाल के नतीजे दूरगामी असर डालेंगे, यह भाजपा बखूबी समझ रही होगी।

फिलहाल स्थिति अजीबोगरीब है। पुराने तरीके, पुराने नियम, पुराने कानून, सभी ध्वस्त हो रहे हैं। पहले ऐसी कटुता नहीं दिखती थी। मैंने संसद में खुद देखा है कि विपक्षी दलों द्वारा पूरा दिन हंगामा करने के बावजूद प्रमोद महाजन कहा करते थे कि चलिए, आपने अपने लोगों तक संदेश पहुंचा दिया, अब सदन में बैठते हैं और रास्ता निकालते हैं कि कैसे काम करना है? आखिरकार सबको मिलकर ही चलना है।

आज उसी तरह के प्रयास फिर से करने की जरूरत है। फिर भी, यदि दलों में सहमति नहीं बन पाती है, तो अंततः अदालत पर ही जिम्मेदारी आएगी। आने वाले दिन उसके लिए भी चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

जन्म के साथ पेंशन योजना से सुरक्षित होगा बुढ़ापा

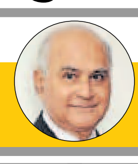

यहां स्कैन करें

जी.एन. बाजपेयी | पूर्व अध्यक्ष, सेबी

लोगों की सेहत दुरुस्त रखने के लिए स्वास्थ्य देखभाल, पोषणयुक्त भोजन और जीवन-स्तर में सुधार हो रहा है और इससे बड़ा बदलाव भी आ रहा है। बढ़ती जीवन प्रत्याशा, घटती जन्म दर और बड़ी होती बुजुर्ग आबादी के माहौल में बुजुर्गों के लिए सन् 1999 में लागू की गई 'सामाजिक सुरक्षा और आय (ओल्ड एज सोशल ऐंड इनकम सिक्योरिटी या ओएसिस)' योजना जरूरी हो जाती है। भारत में 60 और उससे ज्यादा उम्र के लोगों की आबादी 2023 में लगभग 15 करोड़ थी। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट-2023' में अनुमान लगाया गया है कि यह आबादी 2050 तक 35 करोड़ (आबादी का 25 प्रतिशत) हो जाएगी। इसी तरह, युवा लोगों पर निर्भर रहने का अनुपात 2020 के 16 से बढ़कर 2050 तक 34 प्रतिशत हो जाएगा।

बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए सरकार की ओर से पिछले दो दशकों में कई नीतिगत कदम उठाए गए हैं। इनमें सरकारी कर्मचारियों के लिए बिना फंड वाली निश्चित-लाभ पेंशन योजनाओं को निश्चित-योगदान योजनाओं में बदला गया है और आम नागरिकों के लिए राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) शुरू की गई है। हालांकि, एनपीएस के दायरे में आने वाले लोगों में वित्तीय समझ की कमी के कारण इस योजना में मामूली प्रगति हो पाई है। इसमें आर्थिक सुरक्षा की हीला-हवाली को भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता है, इसलिए इस नीति में बदलाव जरूरी हो गया है।

जन्म के समय ही एक 'परमानेंट रिटायरमेंट अकाउंट नंबर (प्रान)' दिया जाए। इसमें केंद्र की ओर से हजार रुपये का शुरुआती योगदान हो।

असल में, बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए एक ऐसी नीति बननी चाहिए, जो उनकी सामाजिक सुरक्षा और आय, दोनों सुनिश्चित करे। इसके लिए सेवानिवृत्ति या साठ साल के बाद पेंशन योजना लागू करने के बजाय जन्म से ही इस पर ध्यान देना चाहिए। बच्चों के लिए हाल ही में शुरू की गई 'एनपीएस-वात्सल्य योजना' इसी तरह की एक पहल है। इस योजना में 1,000 रुपये वार्षिक योगदान देने वाले 18 साल से कम उम्र के बच्चे को शामिल किया जाता है।

एक सुझाव यह है कि देश के हरेक बच्चे को जन्म के समय ही 'परमानेंट रिटायरमेंट अकाउंट नंबर (प्रान)' दिया जाए और केंद्र सरकार की तरफ से 1,000 रुपये के शुरुआती योगदान के साथ प्रान-डान कार्ड (डान का मतलब डिफेंडिंग अ न्यूबोर्न या नवजात की सुरक्षा) जारी किया जाए। अगर, 2026 से इस योजना को लागू किया जाता है, तो इसमें शामिल होने वाले बच्चे 2047 में 21 साल के होंगे। तब तक उनके प्रान खाते में इतनी रकम जमा हो जाएगी कि वे आर्थिक रूप से निश्चिंत हो सकेंगे। हिसाब लगाकर देखें, तो इस योजना में 25 साल की उम्र तक सालाना 1,200 रुपये, 26-30 साल की उम्र तक 1.2 लाख रुपये, 31-40 साल की उम्र तक 1.8 लाख रुपये, 41-50 साल की उम्र तक 2.4 लाख रुपये और 51-60 साल की उम्र तक सालाना 3 लाख रुपये जमा करने होंगे। इन्हें नौ प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से गणना की जाए, तो 60 साल की उम्र तक यह रकम 4.2 करोड़ रुपये से ज्यादा हो जाएगी। यह दर एनपीएस फंड पर मौजूदा रिटर्न रेट के लगभग बराबर है। इससे हर महीने 2.1 लाख रुपये से ज्यादा (छह प्रतिशत दर) की पेंशन मिल सकती है और मूलधन भी सुरक्षित रहेगा। दूसरी ओर, बिना कोष वाली पेंशन पा रही ज्यादातर बुजुर्ग आबादी 2047 तक गुजर चुकी होगी। तब, भारत बड़े पैमाने पर ओएसिस योजना को लागू करने की स्थिति में आ जाएगा।

दानदाताओं को ज्यादा प्रोत्साहित करने के लिए सरकार को हरेक बच्चे पर सालाना 1,000 रुपये निवेश की जरूरत है। पूरी रकम को 60 साल तक लॉक करने से भारत को लंबे समय तक चलने वाली परियोजनाओं में भी मदद मिलेगी। दशकों में जमा हुआ पेंशन फंड का यह बड़ा पूल (एनपीएस में 150 अरब रुपये से ज्यादा) आर्थिक विकास में मदद करेगा। अलग-अलग देशों के अनुभव बताते हैं कि जहां बड़ी आबादी को पेंशन दी जा रही है, वहां बुजुर्गों में गरीबी दर बहुत कम है।

कहा भी गया है कि आप खाई को पार करने के लिए दो बार छलांग नहीं लगा सकते। इसलिए देश की पेंशन की खाई को पार करने के लिए एक ही लंबी नीतिगत छलांग लगाने का समय आ गया है।

(साथ में प्रवीण तिवारी)

मनसा वाचा कर्मणा

कुंती ने दुख क्यों मांगा

कहते हैं कि कुंती ने श्रीकृष्ण से कहा था, मेरे पास हमेशा दुख भेजते रहना। कृष्ण ने हंसकर कहा कि मैं जिस पर कृपा करना चाहता हूं, उसे दुख दे ही देता हूं।

इसका क्या मतलब हुआ? लोग तो भगवान के पास सुख मांगने जाते हैं और यहां कृष्ण कहते हैं कि दुख ही मेरी कृपा है। दुख से दूर मत भागना। दुख यानी याद, अखंड स्मरण। इसलिए दुख की महिमा है। कुंती की बात एक साधारण सांसारिक स्त्री की याचना नहीं है, वरन एक भक्त की आह है, जिसके लिए भक्ति सबसे ऊपर है।

इस वार्तालाप का सार समझना हो, तो ओशो से ही समझ सकते हैं, क्योंकि यहां असली भक्त की बात हो रही है। जो भक्त भगवान से सांसारिक चीजें मांगने जाते हैं, उनकी नहीं। भक्त और भगवान का रिश्ता बहुत अद्भुत होता है। जो भगवान से सुख की प्रार्थना करता है, वस्तुतः वह भगवान को नहीं चाहता, उनसे मिलने वाले सुख के लिए प्रार्थना करता है।

भगवान का उपयोग वह साधन की तरह करता है, साध्य तो सुख है। वह असली भक्त नहीं है। कृष्ण जैसा विराट पुरुष सामने हो, तो क्या कोई छोटा सा सुख मांगेगा? वहां तो कोई मांग बचेगी ही नहीं! जब सच्चा भक्त दुख की प्रार्थना करता है, तो उसका आशय है कि तुम्हारे द्वारा दिया गया दुख भी सुख से बड़ा है, क्योंकि दुख में हम तुम्हारी याद करते हैं। इस बहाने हम तुम्हारे करीब तो आए। यह दुख विरह का दुख है, जो प्रेम को प्रगाढ़ करता है, सारी क्षुद्रता को छोड़कर मन को साफ-सुथरा करता है। उसे विकसित करता है।

दुख मांगने के और भी कई कारण हैं, जो बहुत मनोवैज्ञानिक हैं। सुख मन की तरंगें हैं। वे सांसारिक या मानसिक होती हैं। ऐसे सुख में कोई लंबी संतुष्टि नहीं मिलती और यह बड़ी जल्दी दुख में बदल जाता है। क्षण भर का होता है; आता है, चला जाता है। दुख में लंबाई है। सुख में लंबाई नहीं होती। दुख आता है, तो जाने का नाम लेता मालूम नहीं पड़ता। सुख में गहराई भी नहीं होती। सुख बहुत उथला होता है, इसलिए जिन्हें हम साधारणतः सुखी कहते हैं, वे हमेशा उथले हो जाते हैं।

जो लोग दुख से गुजरते हैं, उनकी आंखों में, उनकी जिंदगी में एक गहराई होती है, जो साधारणतः सुखी आदमी की जिंदगी में नहीं होती। दुख मांजता भी है, निखारता भी है। दुख में अपने भीतर जाने के सिवाय कोई चारा नहीं होता। उसे हम दुनिया को नहीं दिखा सकते। इसलिए वह कुएं की तरह भीतर खुदाई करता है। सुख यूक्लिड के बिंदु की तरह है। बिंदु की परिभाषा है, जिसकी न कोई लंबाई, न कोई चौड़ाई होती है। ऐसा सतही जीवन किस काम का? इसीलिए कुंती ने दुख मांगा, जो अंततः आनंद में बदल जाता है।

सुख बिंदु की तरह है। बिंदु की न कोई लंबाई, न चौड़ाई होती है। ऐसा सतही जीवन आखिर किस काम का? इसीलिए कुंती ने दुख मांगा, जो अंततः आनंद में बदल जाता है।

–अमृत साधना

द्रौपदी मुर्मु | राष्ट्रपति

विकसित भारत का सपना केवल ऊंची इमारतों या शक्तिशाली अर्थव्यवस्था के निर्माण से पूरा नहीं होगा, बल्कि एक ऐसे समाज के निर्माण से होगा, जिसमें अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के पास भी अवसर की समानता और गरिमापूर्ण जीवन जीने की सुविधा हो।

अनुलोम-विलोम

राष्ट्रीय युवा दिवस

अपने भीतर के विवेकानंद को जगाएं

स्वामी विवेकानंद की जयंती पर मनाया जाने वाला राष्ट्रीय युवा दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारत की चेतना को झकझोरने वाला अवसर है। यह कर्तव्य व राष्ट्र-निर्माण के पथ पर अग्रसर होने के लिए देश के युवाओं का आह्वान करता है। औपनिवेशिक दासता में जकड़े भारत में जब आत्मग्लानि और हीन भावना गहराती जा रही थी, तब विवेकानंद ने नौजवानों से कहा, वे उठें, जागें और अपनी अंतर्निहित शक्ति को पहचानें। यही विचार आज भी प्रासंगिक है। सन् 1985 में राजीव गांधी सरकार द्वारा उनकी जयंती को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' घोषित करने का उद्देश्य यही था कि देश का युवा वर्ग केवल नौकरी या व्यक्तिगत सफलता तक सीमित न रहे, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझे, स्वामी विवेकानंद का जीवन स्वयं में एक जीवंत प्रयोगशाला था, जिसमें ज्ञान, भक्ति, कर्म और सेवा का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

विवेकानंद का युवाओं के प्रति विशेष आग्रह था, क्योंकि वह मानते थे कि किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके नौजवानों के चरित्र, साहस और अनुशासन पर निर्भर करता है। उन्होंने शारीरिक बल, मानसिक दृढ़ता व नैतिक साहस को समान रूप से आवश्यक बताया और कहा कि कमजोर शरीर में मजबूत मन का विकास संभव ही नहीं। इसी सोच के तहत उन्होंने युवाओं को खेल, व्यायाम और अनुशासित जीवन अपनाने की प्रेरणा दी। वह शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण की प्रक्रिया मानते थे। उनके अनुसार, ऐसी शिक्षा निरर्थक है, जो मनुष्य को आत्मनिर्भर, निर्भीक और करुणामय न बनाए। आज के डिजिटल और उपभोक्तावादी युग में, जब युवा वर्ग भ्रम, तनाव और दिशाहीनता से जूझ रहा है, तब विवेकानंद के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

साल 2026 के राष्ट्रीय युवा दिवस की थीम 'उठो, जागो और अपनी शक्ति को पहचानो' और 'इग्नाइट द सेल्फ, इम्पैक्ट द वर्ल्ड' युवाओं को आत्मचिंतन से आगे बढ़कर सामाजिक प्रभाव की ओर ले जाने के संदेश देती है। यह थीम सिर्फ प्रेरक नारा नहीं, बल्कि एक कार्ययोजना है, जो युवाओं से अपेक्षा करती है कि वे अपनी आंतरिक ऊर्जा को राष्ट्रहित में रूपांतरित करें। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस की थीम 'एक सतत भविष्य के लिए युवा सशक्तीकरण' भी इसी दिशा में संकेत करती है कि वैश्विक चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन, विषमता व तकनीकी असंतुलन का समाधान युवा नेतृत्व से ही संभव है। राष्ट्रीय युवा दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम अपने भीतर के विवेकानंद को जगाएं।

विभूति बुपक्या, टिप्पणीकार

नशे की लत ने युवाओं का नुकसान किया

हमें आज इस बात पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि इस तेज रफ्तार दुनिया में हमारी युवा पीढ़ी किन चुनौतियों का सामना कर रही है? गौर से देखें, तो प्रमुख समस्या है नशे की लत, जो देश के युवाओं के बीच तेजी से फैल रही है। यह न केवल उनके स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति पर भी गहरा असर डाल रही है। नशे का प्रभाव और विस्तार इतना घातक है कि दूरदराज के गांवों में भी किशोरवय के युवा नशे के लती हो चुके हैं।

एक अनुमान के मुताबिक, भारत में लगभग 1.6 करोड़ युवा नशे की चपेट में हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है। यह चिंता तब और बढ़ जाती है, जब हम पाते हैं कि भारत दुनिया में सबसे युवा राष्ट्र है, जहां 40 प्रतिशत आबादी 18 वर्ष से कम की है। लेकिन इस युवा ऊर्जा को नशे की लत कमजोर कर रही है। इनमें अल्कोहल, गांजा, अफीम, कोकीन, एलएसडी और अन्य मादक पदार्थ शामिल हैं। युवा अवस्था में यह समस्या इसलिए अधिक गंभीर है, क्योंकि यह मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, युवाओं में नशे की शुरुआत आमतौर पर 12 से 17 वर्ष की आयु में होती है, जो उनके भविष्य को जोखिम में डालती है। भारत में यह समस्या महामारी का रूप ले चुकी है।

युवाओं में इस लत के कई कारण हैं। यह सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक व पर्यावरणीय कारकों से जुड़ी है। विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि युवा पीढ़ी इन कारकों से सबसे अधिक प्रभावित होती है। युवा अक्सर दोस्तों के दबाव में नशा शुरू करते हैं। यदि कोई दोस्त नशा करता है, तो दूसरा भी उसे आजमाने की कोशिश करता है, ताकि वह उस समूह में फिट हो सके। सोशल मीडिया पर नशे को ग्लैमराइज किया जाता है, जिससे भी युवा आकर्षित होते हैं। सेलिब्रिटी या भाई-बहन का नशा करना भी एक कारण बन जाता है। यदि परिवार में कोई सदस्य नशा करता है, तो नौजवान उसकी कॉपी कर सकते हैं। असामाजिक व्यवहार या अभिभावकों का नशा एक रोल मॉडल बन जाता है। भारत में युवा बेरोजगारी की दर ऊंची है, जो तनाव पैदा करती है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को इस लत से बाहर निकालें। इसके लिए सरकार और समाज, दोनों को भूमिका निभानी होगी। समाज के स्तर पर जहां युवाओं से संवाद स्थापित कर उनकी मनोगत समस्याओं को दूर किया जाए, तो सरकार के स्तर पर उनके लिए उचित शिक्षा, रोजगार की व्यवस्था करना लाजिमी होगा, तभी युवा दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

ऋतु दुबे तिवारी, शिक्षाविद

मन की सेहत के लिए निकालें समय

अपनी सेहत, समय और ऊर्जा की देखभाल करना खुदगर्जी नहीं है। यह समय की मांग है। अच्छी सेहत के लिए मानसिक मजबूती का होना भी जरूरी है। रोजाना कुछ देर ध्यान करना, डिजिटल उपकरणों से दूरी या फिर डायरी लिखना जैसे छोटे-छोटे अभ्यास हमारे काम और सोच को नई धार दे सकते हैं। आइए जानते हैं दिमागी मजबूती के दस उपाय...

फियोना
लेखिका और डिजाइनर, ध्यान व आध्यात्मिक सूत्रों के अभ्यास पर लिखना पसंद

वर्तमान आधुनिक दुनिया बेहद चुनौतीपूर्ण है। भागदौड़ भरी दिनचर्या और दूसरों की अपेक्षाओं पर खतरा उतरने के लिए अपनी देखभाल करना समय की मांग है। अगर आप स्वस्थ, खुश और जुझारू बने रहना चाहते हैं, तो अपनी देखभाल पर जोर देना, उसे प्राथमिकता बनाना और खुद को बेहतर बनाने के लिए निवेश करना जरूरी है। ऐसे में यह दस बातें आपके काम आ सकती हैं...

1 अपनी देखभाल का महत्व समझें

क्या आप हमेशा खुद को अंत में रखते हैं और अपनी जरूरतों की अनदेखी करते हैं? यदि हां, तो अब समय है, खुद को प्राथमिकता देने का। अपनी बेहतरी के लिए निवेश करने का। याद रखें, आप जितने मजबूत और खुश रहेंगे, अपनों के लिए उतने ही बेहतर ढंग से काम कर पाएंगे। आत्म-मंथन करें कि आप अनदेखी क्यों कर रहे हैं? इस कारण क्या नुकसान हो रहा है? और इसे सुधारने के लिए क्या बदलाव करना होगा?

2 प्रेरित रहें

प्रेरणा के नए स्रोतों का आनंद लें। पॉडकास्ट, किताबें या सोशल मीडिया के जरिये नई और पॉजिटिव जानकारी प्राप्त करें। पसंदीदा विषय पर ऑनलाइन कोर्स जॉइन करें। प्रेरित महसूस करने से रचनात्मकता और उत्पादकता बढ़ती है। मानसिक सेहत में भी सुधार होता है।

3 रोज ध्यान करें

ध्यान को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। शोध बताते हैं कि नियमित अभ्यास से यह आदत बन जाती है। ध्यान आपको जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक मजबूती देता है, आप स्वयं से और दूसरों से बेहतर ढंग से जुड़ पाते हैं।

4 प्रकृति के करीब जाएं

प्रकृति मानसिक सेहत के लिए 'ताजी हवा के झोंके' की तरह है। तकनीक से दूरी बनाकर प्रकृति के बीच समय बिताने से तनाव कम होता है और मानसिक स्पष्टता आती है। यह आपकी आत्मा को सुकून देने के साथ-साथ आपकी ऊर्जा को भी बढ़ाता है।

5 सामाजिक बनें

अपने परिवेश, दोस्तों और प्रियजनों के साथ समय बिताएं। ऐसे लोग, जो आपको हंसाते हैं। आपका भला चाहते हैं। मैसेजिंग तक सीमित न रहें, कॉल पर बात करें या व्यक्तिगत रूप से मिलें। अपनों का साथ मानसिक थकान को दूर करने की बेहतरीन दवा है।

6 शरीर को सक्रिय रखें

योग, तैराकी या व्यायाम जैसी शारीरिक गतिविधियां चिंता और अवसाद को कम करती हैं। अपने पसंदीदा गाने पर नृत्य करना या पार्क में तेज चलना भी आपकी ऊर्जा और उत्साह को तुरंत बढ़ा सकता है। ये सभी क्रियाएं नींद की गुणवत्ता में सुधार लाती हैं।

50% से अधिक वयस्क पर्याप्त शारीरिक श्रम और व्यायाम नहीं करते, लैंसेट की रिपोर्ट के अनुसार

7 अव्यवस्था दूर करें

अपने घर के किसी कोने, दराज या अलमारी की सफाई करें। जब आप बाहरी कचरे को हटाते हैं, तब आपका दिमाग भी साफ और व्यवस्थित महसूस करता है। बाहरी व्यवस्था और आंतरिक शांति का गहरा संबंध है।

8 डिजिटल डिटॉक्स अपनाएं

तकनीक के साथ अपनी सीमाएं तय करें। दिन में कुछ समय ऐसा रखें, जब आप स्क्रीन से दूर रहें। सोने से दो घंटे पहले फोन अलग रख दें, ताकि दिमाग शांत हो सके। खाली समय में फोन पर लगे रहने के बजाय अपनी सांसों पर ध्यान दें और खुद से जुड़ें।

9 शरीर को सही पोषण दें

भोजन का सीधा असर हमारे मूड पर पड़ता है। संतुलित और पोषक तत्वों से भरपूर आहार मस्तिष्क को ऊर्जा देता है। सही खान-पान, पर्याप्त पानी पीना और अच्छी नींद ये तीनों मिलकर आपकी मानसिक और भावनात्मक सेहत को मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

10 डायरी लिखें

अपने विचारों और भावनाओं को कागज पर उतारना मन को हल्का करने का एक शानदार तरीका है। यह एक मन के गुबार निकालने वाली आदत है, जो आपको खुद को गहराई से समझने और चीजों को नए नजरिये से देखने में मदद करती है।

www.earthmonk.com

काम की बात

अगर कोई आपको समझ न पाए

अक्सर हमारी शिकायत रहती है कि दूसरे हमारी बात क्यों नहीं समझते? कई बार तो अपनों को ही अपनी बात समझाना मुश्किल हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, बातों को समझने-समझाने के लिए दूसरों का नजरिया समझना और उनके प्रति हमदर्दी होना बेहद जरूरी है।

हमारे अपने जब हमारी बात नहीं समझते या हमसे सहमत नहीं होते, तब बुरा लगता है। बार-बार अपनी पसंद-नापसंद को समझाने के लिए संघर्ष करना कई बार रिश्तों में दूरी भी बढ़ा देता है।

साइकोलॉजी टुडे में मनोवैज्ञानिक हल शोरी कहते हैं, 'ऐसा नहीं है कि जो हमें नहीं समझ रहे, वे हमारा भला नहीं चाहते या हमें समझना नहीं चाहते। वे ऐसा नहीं कर पाते, क्योंकि उनमें 'रिफ्लेक्टिव फंक्शनिंग' और 'एम्पैथिक अट्यूनमेंट' की कमी होती है। यह बात दोनों पक्षों पर लागू होती है।'

मनोविज्ञान की भाषा में 'रिफ्लेक्टिव फंक्शनिंग' वह क्षमता है, जिसके जरिये आप दूसरों के नजरिये को समझते हैं, उनकी सोच से जुड़ते हैं और फिर अपनी बात को ऐसे शब्दों और व्यवहार से जाहिर करते हैं, जिसमें वे खुद को शामिल महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि उन्हें भी समझा गया है। वहीं, 'एम्पैथिक अट्यूनमेंट' का अर्थ है, सामने वाले के भावनात्मक अनुभव को महसूस करना। इसे समानुभूति और हमदर्दी भी कह सकते हैं।

रिश्तों में नहीं आएगी दूरी

अगर आप, दूसरों को अपनी बात नहीं समझा पा रहे हैं, तो हल शौरी द्वारा सुझाए गए ये तरीके आपकी मदद कर सकते हैं:

तर्क की उम्मीद न करें: हर बार सामने वाला व्यक्ति तर्क संगत ढंग से बात करे, यह जरूरी नहीं, इसलिए दूसरों की बेतुकी बातों में तर्क ढूंढ़ना बंद करें।

जानकारी का अभाव: कई बार लोग सिर्फ इसलिए नहीं समझ पाते, क्योंकि उनके पास पूरी जानकारी नहीं होती। उन्हें सही सूचना दें।

गुस्से से बचें: जब आप चिल्लाकर बात करते हैं, तो सामने वाले का ध्यान मुद्दे से हटकर आपके गुस्से पर टिक जाता है।

सही सवाल पूछें: उन्हें भाषण देने की बजाय उनके विचार को दिशा देने वाले सवाल पूछें, जैसे, 'जब आप किसी की हंसी उड़ाते हैं, तो उन्हें कैसा लगता होगा?' क्या आप व्यक्ति की पसंद या नापसंद के बारे में पूरी तरह जानते हैं आदि?' या फिर तुम अपनी बात नहीं कहोगे, तो दूसरे मदद कैसे कर पाएंगे?'

न्यूरोलॉजिकल कारणों को समझें: मुमकिन है कि सामने वाला व्यक्ति ऑटिज्म या अवसाद से जूझ रहा हो, ऐसे में धैर्य रखते हुए अपनी बात कहें।

अटैचमेंट स्टाइल समझें: कुछ लोग अपनी भावनाएं दबा देते हैं, इसलिए वे आपकी भावनाओं को भी महसूस नहीं कर पाते। जब हम उनके मानसिक जगत को समझते हैं, तो हमारे भीतर समानुभूति पैदा होती है और संघर्ष कम होता है।

स्पष्ट और सीधी बात: दूसरों को अपनी भावनाओं को समझने का मौका दें। बिना बचाव मुद्रा में आए सीधे अपनी बात कहें।

पूर्णिमा

नहीं सताएगा अधूरे कामों का बोझ

क्या आप स्वयं को समय की कमी से जूझता हुआ पाते हैं? या हर समय काम में लगे रहने के बावजूद आपके महत्वपूर्ण काम अधूरे ही रह जाते हैं? अगर हां, तो समय प्रबंधन के इन नियमों को अपनाना आपके लिए फायदेमंद हो सकता है...

विविध

चार 'डी' का नियम

डू (अभी करें): अगर किसी काम को तुरंत और जल्दी किया जा सकता है, तो उसे कर दें।

डेफर (बाद के लिए टालें): अगर काम कुछ बहुत जरूरी नहीं है और बाद में किया जा सकता है, तो उसे फिलहाल के लिए टाल दें।

डेलिगेट (दूसरों को सौंपें): अगर वह काम कोई और भी कर सकता है, तो उसे उन्हें करने के लिए दें।

डिलीट: अगर वह काम जरूरी नहीं है, उससे कोई फायदा भी नहीं हो, तो उसे अपनी सूची से हटा दें।

लाभ: इस तरह जरूरी और गैर जरूरी कामों को बांट पाना आसान हो जाता है। साथ ही कई छोटे-छोटे काम अधूरे रहने से बच जाते हैं।

10/10/10 नियम

कोई भी फैसला करने से पहले सोचें कि वह फैसला आपको अगले 10 मिनट, 10 महीने और 10 साल बाद कैसा महसूस कराएगा।

लाभ: इससे दूरगामी महत्व के कामों का चुनाव करने में मदद मिलेगी।

20-20-20 का नियम

आंखों के तनाव को कम करने के लिए, हर 20 मिनट में, 20 फीट दूर किसी चीज को 20 सेकंड तक देखें।

लाभ: डिजिटल स्क्रीन से होने वाली थकान कम होती है और आप देर तक काम कर पाते हैं।

80/20 का नियम

उन 20% कामों की पहचान करें, जिन पर आपके 80 प्रतिशत नतीजे निर्भर करते हैं। उन्हें प्राथमिकता दें।

लाभ: इस तरह कम काम करके भी प्रभावी नतीजे पाने में कामयाबी मिलती है। महत्वपूर्ण काम भी पूरे हो जाते हैं।

50/10 का नियम

काम की उत्पादकता बनाए रखने के लिए 50 मिनट काम करें और फिर शरीर की कुदरती घड़ी से तालमेल बिठाने के लिए 10 मिनट का ब्रेक लें। इसे दोहराते रहें।

लाभ: इससे देर तक काम करने की ऊर्जा और सजगता बनी रहती है।

2 मिनट का नियम

अगर किसी काम को करने में दो मिनट से कम का समय लगता है, तो उसे तुरंत करें। काम तुरंत निपटाएं।

लाभ: छोटे-छोटे काम अधूरे नहीं रहते।

1/3/5 का नियम

अपने कामों की इस तरह सूची बनाएं, जिसमें एक सबसे बड़ा काम, 3 सामान्य काम और 5 छोटे-मोटे काम शामिल रहें।

लाभ: उनके लिए यह नियम बेहतर है, जिनके पास किए जाने वाले कामों की लंबी सूची होती है। साथ ही कई दूसरे उनके काम पर निर्भर करते हैं।

दो घंटे महत्वपूर्ण काम के लिए

दिन के सबसे बड़े या महत्वपूर्ण काम के लिए बिना किसी रुकावट 2 घंटे का समय देने का प्रयास करें।

लाभ: महत्वपूर्ण व जटिल कामों को जल्दी पूरा करने में मदद

एकदा

आदत

एक अमीर आदमी अपने बेटे की किसी बुरी आदत से परेशान था। वह जब बेटे से आदत छोड़ने को कहते तो एक ही जवाब मिलता, 'अभी मैं छोटा हूं। धीरे-धीरे ये आदत छोड़ दूंगा।' इस तरह दिन बीतते चले गए।

उन दिनों एक महात्मा गांव में पधारे। जब आदमी को उनकी ख्याति के बारे में पता चला, तो वह तुरंत उनके पास गया और उन्हें अपनी समस्या बताई। महात्मा जी ने उसकी बात सुनी और कहा, 'ठीक है, आप अपने बेटे को कल सुबह बगीचे में लाना, मैं वहीं आपको उपाय बताऊंगा।'

अगले दिन सुबह पिता-पुत्र बगीचे में पहुंचे। महात्मा जी बेटे से बोले, 'आइए, हम दोनों सैर करते हैं। वे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। चलते-चलते महात्मा जी अचानक रुके और बेटे से कहा कि क्या तुम इस छोटे से पौधे को उखाड़ सकते हो?'

'जी हां, इसमें कौन-सी बड़ी बात है।' ऐसा कहकर बेटे ने आसानी से पौधा उखाड़ दिया। वे फिर आगे बढ़ गए। थोड़ी देर बाद महात्मा जी ने थोड़े बड़े पौधे की तरफ इशारा किया, 'क्या तुम इसे भी उखाड़ सकते हो?'

बच्चे को मजा आ रहा था। वह तुरंत पौधा उखाड़ने में लग गया। इस बार उसे पौधा उखाड़ने में थोड़ी मेहनत लगी। वे दोनों आगे बढ़ गए। कुछ देर बाद महात्मा जी ने एक गुड़हल के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए बेटे से इसे उखाड़ने के लिए कहा। बेटे ने तना पकड़ा और उसे खींचने लगा। जब बहुत प्रयास के बाद भी पेड़ हिला नहीं तो बेटा बोला, 'ये बहुत मजबूत है, इसे उखाड़ना असंभव है'।

महात्मा जी ने उसे प्यार से कहा, 'बेटा, ऐसा ही बुरी आदतों के साथ होता है। जब वे नई होती हैं, तो उन्हें छोड़ना आसान होता है, पुरानी होने पर इन्हें छोड़ना कठिन होता जाता है।'

बेटा समझ गया था।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष: मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

वृष: मन परेशान हो सकता है। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। पिता का साथ मिलेगा। कारोबार में बदलाव संभव।

मिथुन: मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में कारोबार में सुधार होगा।

कर्क: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन परेशान भी हो सकता है। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। खर्च बढ़ेंगे।

सिंह: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। आत्म संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि हो सकती है।

कन्या: वाणी में मधुरता रहेगी। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। सुस्वादु खान-पान में मन रमेगा। कारोबार से लाभ में वृद्धि होगी।

तुला: मन प्रसन्न रहेगा। पिता का साथ मिल सकता है। किसी मित्र के सहयोग से किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। भागदौड़ अधिक रहेगी।

वृश्चिक: मन परेशान रहेगा। आत्म संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिल सकता है।

धनु: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार का साथ मिलेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है।

मकर: आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। नौकरी में बदलाव के योग हैं। किसी रुके धन की प्राप्ति हो सकती है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के साथ किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

कुंभ: मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। क्रोध से बचें। बातचीत में संतुलित रहें। शैक्षिक कार्यों में मान-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। बौद्धिक कार्यों में आय बढ़ेगी।

मीन: मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ भी अधिक रहेगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार का साथ मिलेगा।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

12 जनवरी, सोमवार, **शक संवत्:** 22 पौष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 29 पौष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 22 रज्जब, 1447, **विक्रमी संवत्:** माघ कृष्ण नवमी तिथि दोपहर 12.43 बजे तक पश्चात दशमी तिथि, धृति योग सायं 06.12 बजे तक पश्चात शूल योग, गर करण, चंद्रमा तुला राशि में (दिन रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य दक्षिण गोल। हेमंत ऋतु। प्रातः 07.30 बजे से प्रातः 09 बजे तक राहुकालम्। भद्रा रात्रि 02.01 मिनट से।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

ऐसा क्या ध्यान रखें जो कि हमारे जीवन को सही प्रकार से आगे बढ़ाने में सहायक हो।
–चंद्रकांता शर्मा, मेरठ

- घर में जहां बिल, ईएमआई या उधार के कागज हों तो उन्हें बंद फाइल में रखना चाहिए। अगर ये खुले रहते हैं या ज्यादा दिखते हैं तो मन हमेशा अभाव की स्थिति में ही रहेगा।
- आपके भवन में जो दरवाजा सबसे अधिक इस्तेमाल होता है उसकी कुंडी टूटी नहीं होनी चाहिए, उसे जाम नहीं होना चाहिए। ऐसे में आने वाले अवसर टिकते नहीं है।
- रसोई में गैस बर्नर के नीचे या आसपास की गंदगी हमेशा साफ करें। घर में कोई भी टूटी टांग वाली कुर्सी है उसे तुरंत निकाल दें।

वर्ग पहेली : 8207

ऊपर से नीचे

1. अत्यंत रोष प्रकट करना; आग-बबूला होना; जलन से व्याकुल होना (3,2,3)
2. निठल्ला; खाली; निकम्मा; खराब (3)
4. चीरना; फाड़ना (2,3)
6. बहुत कमजोर करना; निढाल करना (2,2,4)
9. कंचन; स्वर्ण; धतूरा (3)
10. बहरा होने की स्थिति; सुनाई न देने का रोग (5)
13. कुल; सब कुछ; समस्त; सारा (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

बाएं से दाएं

3. खबर; वृतांत; संवाद; सूचना (4)
5. महाकाव्य का रचयिता; गाथा रचने वाला; गायक; गवैया (4)
7. अनर्गल प्रलाप; बकवाद (4)
8. तैयार; दृढ़; स्थिर; पका हुआ; मजबूत; प्रामाणिक; न टलने वाला (2)
10. बताना; न्यायालय वक्तव्य देना; विवरण देना (3,2)
11. क्षति; नाश; नुकसान (2)
12. भेंट होना; मिलना; उलझना; भिड़ना (4)
14. भयानक; भीषण (4)
15. जंतु; पशु (4)

वर्ग पहेली : 8206

सुडोकू : 8189

* मध्यम

	8			2			6	
7			3		5			4
4			6		8			3
		2				4		
			2	8	1			
		6				1		
5			8		2			7
6			1		9			2
	1			7			3	

खेलने का तरीका: दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8188

4	3	9	7	8	6	2	1	5
6	1	2	3	5	9	4	7	8
5	8	7	2	4	1	3	9	6
9	6	8	4	7	5	1	3	2
2	4	5	6	1	3	9	8	7
3	7	1	8	9	2	6	5	4
8	9	6	5	3	4	7	2	1
7	2	3	1	6	8	5	4	9
1	5	4	9	2	7	8	6	3

पेंशन फंड रेग्युलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी ने योजना के नए दिशा निर्देश जारी किए

एनपीएस वात्सल्य योजना में निवेश और निकासी के नियमों में बदलाव

सुविधा

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आपने अपने बच्चे के सुनहरे भविष्य के लिए एनपीएस वात्सल्य योजना में निवेश किया है या करने की सोच रहे हैं, तो जान लीजिए पेंशन फंड रेग्युलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी ने बच्चों के लिए शुरू की गई इस योजना को लेकर नए दिशा निर्देश जारी कर दिए हैं।

ये बदलाव खास तौर पर नाबालिग बच्चों के निवेश, निकासी, संपत्ति आवंटन, तथा टैक्स लाभों को लेकर किए गए हैं, ताकि इस योजना को और अधिक लचीला, पारदर्शी और परिवारों के लिए उपयोगी बनाया जा सके। आंशिक निकासी की स्पष्ट गाइडलाइन्स ने योजना को अस्थायी जरूरतों के लिए भी उपयोगी बना दिया है, जबकि इक्विटी में ऊंचे कोश आवंटन से दीर्घकालिक रिटर्न क्षमता बढ़ी है।

एनपीएस वात्सल्य एक सरकारी पेंशन योजना है जिसे नाबालिग बच्चों के लिए शुरू किया गया था। माता-पिता/अभिभावक अपने बच्चों के नाम पर इस खाते में निवेश करके उनके लिए भविष्य में पेंशन सुनिश्चित कर सकते हैं। यह योजना बजट 2024-25 में पेश की गई थी और इसे 18 सितंबर 2024 को आधिकारिक रूप से लॉन्च किया गया। यह बचत और निवेश का एक दीर्घकालिक साधन है, जिसमें बच्चे की उम्र 18 वर्ष तक निवेश संचालित रहता है। उस उम्र के बाद बच्चे के लिए आगे विकल्प उपलब्ध होते हैं।

पूंजी का आवंटन

1 अब यह स्पष्ट हो गया है कि एनपीएस वात्सल्य के तहत निवेशित राशि का अधिकतम 75% तक शेयर में लगाया जा सकता है। इससे निवेशकों को पूंजी वृद्धि के अवसर मिलेंगे। पारंपरिक पेंशन स्कीम में कठिनाई रही है कि लोगों को वृद्धावस्था में जीवनयापन के लिए आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।

आंशिक निकासी नियम

2 पांच वर्ष के निवेश के बाद अभिभावक अब बच्चे की शिक्षा, गंभीर बीमारी या चिकित्सा स्थितियों के लिए आंशिक निकासी कर सकते हैं। पहले यह स्पष्ट नहीं था कि कब और किन परिस्थितियों में धन निकाला जा सकता है, लेकिन अब पीएफआरडीए ने व्यापक दिशा निर्देश जारी किए हैं। यदि बच्चे की शिक्षा, इलाज या चिकित्सा सहायता जैसी स्थिति उत्पन्न होती है तो निकासी के ये नियम तीन बार तक कुल जमा योगदान का 25% तक की सीमा में उपलब्ध होंगे।

निकासी और योजना समापन नियम

3
- जब बच्चा 18 वर्ष का हो जाता है तो अब उसके पास कई विकल्प है, वह वात्सल्य खाता जारी रख सकता है और तीन अतिरिक्त वर्ष तक निवेश कर सकता है, या उसे सामान्य एनपीएस मॉडल में ट्रांसफर कर सकता है अथवा वर्तमान संपत्ति निकाल सकता है।
- समापन पर, अब 80% तक की राशि एकमुश्त रूप में निकाली जा सकती है जबकि 20% को वार्षिक आय यानी एन्यूटी में लगाया जाएगा। कुल जमा राशि आठ लाख से कम है, तो पूरा पैसा एक साथ निका सकेंगे।
- 21 साल तक विकल्प न चुना गया, तो खाता फंड के मल्टीपल स्कीम फ्रेमवर्क के उच्च जोखिम वाले इक्विटी विकल्प में शिफ्ट हो जाएगा।

एनपीए सार्वजनिक करने का बैंकों ने किया विरोध

नई दिल्ली, एजेंसी। बैंक ऑफ बड़ौदा, आरबीएल बैंक, यस बैंक और भारतीय स्टेट बैंक ने केंद्रीय सूचना आयोग से संपर्क कर डिफॉल्टरों और एनपीए की सूची, जुर्माने और निरीक्षण रिपोर्ट जैसी सूचनाओं को सार्वजनिक करने पर आपत्ति जताई है।

दूसरी ओर आरबीआई ने कहा कि आरटीआई अधिनियम के तहत इन अभिलेखों का खुलासा किया जा सकता है। आरटीआई आवेदनकर्ताओं धीरज मिश्रा, वथिराज, गिरीश मित्तल और राधा रामन तिवारी ने आरबीआई में अलग-अलग आवेदन देकर इस बारे में जानकारी मांगी थी। उन्होंने यस बैंक के शीर्ष 100 एनपीए और जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों, एसबीआई और आरबीएल की निरीक्षण रिपोर्ट और बैंक ऑफ बड़ौदा पर वैधानिक निरीक्षण के बाद लगे 4.34 करोड़ रुपये के मौद्रिक जुर्माने से संबंधित दस्तावेजों सहित अन्य जानकारियां मांगी थीं।

स्पेन, जर्मनी और पोलैंड बन रहे प्रमुख निर्यात केंद्र

नई दिल्ली, एजेंसी। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार स्पेन, जर्मनी, बेल्जियम और पोलैंड 27 देशों के यूरोपीय संघ ब्लॉक के भीतर भारतीय वस्तुओं के लिए स्थिर और प्रमुख निर्यात गंतव्य के रूप में उभर रहे हैं। आंकड़ों बताते हैं कि भारतीय निर्यात के लिए स्पेन एक उच्च विकास वाला यूरोपीय बाजार बनकर उभरा है।

चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-नवंबर के दौरान स्पेन को निर्यात में 56 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई और यह पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में तीन अरब डॉलर से बढ़कर 4.7 अरब डॉलर हो गया। भारत के कुल निर्यात में स्पेन की हिस्सेदारी बढ़कर 2.4% हो गई, जिसमें 0.5% अंकों की उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

आठ महीनों में जर्मनी को भारत का निर्यात 9.3 प्रतिशत बढ़कर 6.8 अरब डॉलर से 7.5 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि के दौरान पोलैंड को निर्यात 1.82 अरब डॉलर हो गया।

बाजार 30s

एफएमसीजी ने मजबूत सुधार दिखाया

नई दिल्ली। जीएसटी सुधारों, त्योहारों की अच्छी बिक्री और कच्चे माल की कीमतों में कमी के कारण चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में एफएमसीजी उद्योग की बिक्री और मुनाफे में सुधार देखने को मिला। जीएसटी के कारण उत्पन्न व्यवधानों के कम होने के बाद एफएमसीजी कंपनियों में धीरे-धीरे सुधार के संकेत दिखाई देने लगे।

सात कंपनियों के बाजार पूंजीकरण में गिरावट

नई दिल्ली। बीते सप्ताह शेयर बाजार में कमजोरी के बीच भारत की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में सात कंपनियों का कुल बाजार मूल्य 3,63,412.18 करोड़ रुपये घट गया। इस दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे अधिक प्रभावित हुई। पिछले सप्ताह बीएसई सेंसेक्स में 2,185.77 अंकों या 2.54 प्रतिशत की गिरावट आई।

बजट में आयकर सरचार्ज न बढ़ाए सरकार

नई दिल्ली। कर विशेषज्ञों के अनुसार सरकार को बजट में अत्यधिक-धनी लोगों पर आयकर सरचार्ज बढ़ाने और संपत्ति कर को फिर से शुरू करने से बचना चाहिए। इस समय 50 लाख से अधिक की आय पर आयकर सरचार्ज लागू है। उन पर 50 लाख से एक करोड़ तक 10 प्रतिशत, एक करोड़ से दो करोड़ पर 15 प्रतिशत और दो करोड़ से पांच करोड़ पर 25 प्रतिशत सरचार्ज लगाया जाता है।

सभी उर्वरकों पर पांच प्रतिशत जीएसटी लागू हो

नई दिल्ली। इंडियन माइक्रो-फर्टिलाइजर्स मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने आम बजट से पहले केंद्र सरकार से आग्रह किया है कि उर्वरक नियंत्रण आदेश के तहत अधिसूचित सभी उर्वरकों पर पांच प्रतिशत जीएसटी लागू किया जाए। उद्योग निकाय ने इसके अलावा अतिरिक्त जीएसटी क्रेडिट के रिफंड की प्रक्रिया तेज करने और एक एकीकृत लाइसेंसिंग प्रणाली लागू करने की मांग की।

फोनपे पेमेंट गेटवे ने बोल्ट पेश किया

नई दिल्ली। फोनपे पेमेंट गेटवे ने वीजा और मास्टरकार्ड के क्रेडिट और डेबिट कार्ड लेनदेन के लिए फोनपे पीजी बोल्ट पेश किया है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि यह समाधान डिवाइस टोकनाइजेशन का इस्तेमाल करता है, जिससे फोनपे मंच के उपयोगकर्ताओं और व्यवसाय साझेदारों को ऐप के भीतर ही सुरक्षित और कुशल भुगतान अनुभव मिलेगा।

एनटीपीसी एसएनजी परियोजना स्थापित करेगी

नई दिल्ली। एनटीपीसी छत्तीसगढ़ में 10,000 करोड़ रुपये के निवेश से कोयला से कृत्रिम प्राकृतिक गैस (एसएनजी) बनाने वाली सुविधा स्थापित करेगी। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि कंपनी एसएनजी उत्पादन के तहत कोयले के शोधन और गैसीकरण जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए प्रौद्योगिकी साझेदारों की तलाश कर रही है।

निजीकरण के लिए मांग-आधारित नीति सुझाई

नई दिल्ली। उद्योग जगत के संगठन सीआईआई ने सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के विनिवेश से मूल्यवर्धन करने के लिए एक त्वरित चार-सूत्रीय रणनीति का सुझाव दिया है, जिसमें निजीकरण के लिए इकाइयों के चयन में मांग-आधारित दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया गया है। सीआईआई ने वित्त वर्ष 2026-27 के आम बजट के लिए सुझाव देते हुए कहा कि सरकार को निजीकरण के माध्यम से संसाधन जुटाने चाहिए।

सड़क परियोजनाओं के लिए सहयोग मांगा

भुवनेश्वर। ओडिशा सरकार ने राज्य में सड़कों और राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के विकास के लिए केंद्र सरकार से सहयोग मांगा है, जिसमें 41,580 करोड़ रुपये के निवेश का अनुमान है। उपमुख्यमंत्री प्रवती परिदा ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के वित्त मंत्रियों की बजट-पूर्व परामर्श बैठक में यह मांग उठाई।

क्रिप्टो पर 20 फीसदी कर लगाने की मांग

बजट बैठक

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। वित्त मंत्रालय अब तक राज्यों और अलग-अलग क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर उनसे आगामी बजट को लेकर सुझाव ले चुका है। बड़ी संख्या में लोग ऑनलाइन सुझाव भेज रहे हैं।

अभी तक क्रिप्टो करेंसी पर लगने वाले कर को कम करने और उसकी निगरानी के लिए समुचित प्रावधान को लेकर सबसे ज्यादा सुझाव मिले हैं।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि क्रिप्टो पर सीधे 20 फीसदी कर लगाया जाना चाहिए। लोगों का सुझाव है कि क्रिप्टो और ब्लॉकचेन सेक्टर के लिए स्पष्ट, संतुलित और व्यावहारिक नीति बनाई जाए।

वर्तमान में 30 फीसदी कर और एक फीसदी टीडीएस लगता है जो छोटे निवेशकों व स्टार्टअप्स के लिए बाधा है, जिसे तर्कसंगत किया जाना चाहिए। क्रिप्टो को डिजिटल एसेट की स्पष्ट परिभाषा मिले और नुकसान को लाभ से समायोजित करने की अनुमति दी जाए। इससे नवाचार बढ़ेगा, रोजगार सृजित होंगे और भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनेगा।

क्रिप्टोकरेंसी को नियंत्रित ढंग से लागू करने के लिए भी सुझाव दिए जा रहे हैं। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि इसके लिए स्पष्ट कानूनी ढांचा एवं व्यापक कानून बनाया जाए, जिसमें इसकी कानूनी स्थिति, उपयोग और सीमाएं स्पष्ट हों। इसकी निगरानी के लिए एक नियामक प्राधिकरण का गठन किया जाए। केवाईसी एवं एंटी मनी लॉन्ड्रिंग (एएमएल) नियमों का पालन सभी क्रिप्टो प्लेटफॉर्म पर नियमों को अनिवार्य किया जाए, जिससे अवैध गतिविधियों पर रोक लगाई जाए।

न्यूनतम वेतन बढ़ाने की मांग

इसके बाद कर्मचारियों का न्यूनतम वेतन बढ़ाए जाने को लेकर सुझाव आए हैं। काफी लोगों ने www.mygov.in वेबसाइट पर जाकर सुझाव दिया है कि कर्मचारियों की न्यूनतम वेतनमान सीमा को बढ़ाया जाएगा। करीब 11 वर्षों से न्यूनतम वेतन न बढ़ाए जाने के चलते लोगों का ईपीएफओ में जमा होने वाला अंशदान सीमित है। ऐसी स्थिति में निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को लंबी नौकरी करने के बाद भी पेंशन बहुत कम मिलती है।

पीएफ योगदान पर न लगाया जाए कर

मौजूदा नियमों के तहत किसी कर्मचारी के पीएफ खाते में सालाना 2.5 लाख रुपये के योगदान पर अर्जित ब्याज कर मुक्त होती है लेकिन 2.5 लाख रुपये से अधिक के योगदान पर अर्जित ब्याज पर कर्मचारी को कर देना होता है। लोगों ने सुझाव रखा है कि ईपीएफओ में होने वाले योगदान में कर से जुड़े प्रावधान को हटाया जाए क्योंकि इस प्रावधान से अनिवार्य पीएफ योगदान करने वाले कर्मचारी प्रभावित होते हैं।

जीएसटी सुधारों से एसयूवी में रुचि बढ़ी

नई दिल्ली, एजेंसी। लक्जरी कार विनिर्माता वोल्वो के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि जीएसटी सुधारों के बाद आंशिक-हाइब्रिड एसयूवी ग्राहकों के लिए और भी आकर्षक हो गई हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी पूरी तरह इलेक्ट्रिक भविष्य के लिए प्रतिबद्ध है और भारत में बेची जाने वाली हर चार कारों में एक इलेक्ट्रिक वाहन है।

वोल्वो कार इंडिया ने बताया कि जीएसटी 2.0 का कार्यान्वयन एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक रहा है, और इसने कर संरचना को तर्कसंगत बनाकर लक्जरी खंड को सुव्यवस्थित किया है। कंपनी ने 2025 में अपने आईसीई पोर्टफोलियो को आगे बढ़ाया और एक्ससी90 और एक्ससी60 की बिक्री में जीएसटी सुधारों के बाद दो अंकों की वृद्धि हुई।

'बहु-तकनीकी नजरिया जरूरी'

नई दिल्ली, एजेंसी। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के अनुसार भारत की भौगोलिक विविधता और उभरती भू-राजनीतिक स्थितियों को देखते हुए कारों में कई हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

कंपनी ने कहा कि भौगोलिक विविधता और उपभोक्ता स्वीकार्यता के कारण बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन, हाइब्रिड, फ्लेक्स-ईंधन वाहन और हाइड्रोजन जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों, सभी की अपनी भूमिका है। टोयोटा और किर्लोस्कर समूह के संयुक्त उद्यम वाली कंपनी ने कहा कि कार्बन उत्सर्जन से निपटने के लिए अकेले ईवी और हाइब्रिड हल नहीं कर सकते। चार्जिंग अवसंरचना बढ़ने से देश भर में इसे अपनाने में तेजी आएगी।

दिसंबर में खुदरा महंगाई मामूली बढ़ने की संभावना

नई दिल्ली, एजेंसी। दिसंबर 2025 में भारत की खुदरा महंगाई दर में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की जा सकती है। लाइवमिंट के एक सर्वेक्षण के मुताबिक, दिसंबर में खुदरा महंगाई बढ़कर करीब 1.5-1.6 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जबकि नवंबर में यह लगभग 0.7 प्रतिशत थी।

अगर यह अनुमान सही रहता है तो यह पिछले चार महीनों का उच्चतम स्तर होगा, हालांकि अब भी यह आरबीआई के तय लक्ष्य दायरे से काफी नीचे रहेगी।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि महंगाई में इस हल्की तेजी की सबसे बड़ी वजह खाद्य कीमतों में गिरावट की रफ्तार का थमना है।

पिछले कई महीनों से खाद्य महंगाई नकारात्मक यानी डिफ्लेशन में रही है, लेकिन दिसंबर में इसमें सुधार के संकेत मिले हैं। पिछले साल इसी अवधि में कीमतों में तेज गिरावट दर्ज की गई थी। गौरतलब है कि दिसंबर महीने के लिए खुदरा महंगाई के आंकड़ों की घोषणा सोमवार को की जाएगी।

सोना-चांदी की कीमतों में तेजी का रुझान कायम

नई दिल्ली, एजेंसी। इस हफ्ते सोना और चांदी की कीमतों में सकारात्मक रुझान बने रहने की उम्मीद है। जानकारों का मानना है कि वैश्विक स्तर पर बढ़ते तनाव और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीति पर अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के आने वाले फैसले को लेकर अनिश्चितता, सर्राफा बाजार को समर्थन देती रहेगी।

इसके अलावा अमेरिका, भारत और जर्मनी से आने वाले महंगाई के आंकड़े, चीन के व्यापार और निवेश से जुड़े डेटा और अमेरिकी फेडरल रिजर्व के अधिकारियों के बयान भी अहम भूमिका निभाएंगे।

जानकारों के मुताबिक, तकनीकी तौर पर सोना अगले हफ्ते 1,41,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर की ओर बढ़ सकता है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने ने मजबूती दिखाई और कीमतें करीब 4 फीसदी उछलकर 4,500 डॉलर प्रति औंस के आसपास बंद हुईं। वहीं चांदी में भी जबरदस्त तेजी दिखाई।

कारोबारी चर्चा

कंज्यूमर कनेक्ट इनिशिएटिव

एशियन फुटवियर्स ने समर 2026 के लिए 2,500 नए डिजाइन पेश किए

एशियन फुटवियर्स ने होटल क्राउन प्लाजा, रोहिणी में आयोजित दो दिवसीय ट्रेड इवेंट (3-4 जनवरी) के दौरान 500 से अधिक डिस्ट्रीब्यूटर्स, लार्ज-फॉर्मेट रिटेलर्स और ई-कॉमर्स पार्टनर्स के समक्ष समर 2026 के लिए 2,500 नए डिजाइन्स की झलक पेश की। यह कलेक्शन ओपन फुटवियर, एथलीजर, स्कूल और कम्फर्ट कैटेगरी को कवर करता है, जो हल्के और बहुउपयोगी दैनिक पहनावे की वैश्विक प्रवृत्तियों को दर्शाता है। खरीदारों ने हल्के और अधिक हवा लेने योग्य मटीरियल के साथ अपडेटेड डिजाइन्स की समीक्षा की, जिनमें हालिया अंतरराष्ट्रीय ट्रेंड्स से प्रेरित कलर स्टोरीज शामिल थीं।

चर्चाएं हीरो स्टाइल्स, प्राइसिंग फिट और बाजार-विशिष्ट बदलावों पर केंद्रित रहीं, ताकि शुरुआती ऑर्डर प्लानिंग को समर्थन मिल सके। एशियन फुटवियर्स के चेयरमैन श्री राजिंदर जिंदल ने कहा, "ये 2,500 डिजाइन एथलीजर, स्कूल और कम्फर्ट जैसे क्षेत्रों में व्यापक विकल्प प्रदान करते हैं, जहां अभिभावक और दैनिक उपयोगकर्ता भरोसेमंद चुनाव चाहते हैं। ग्राहक आज इस बात को लेकर बेहद सजग हैं कि वे क्या पहनते हैं और कैसे दिखते हैं, और फुटवियर उनके पहनावे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए ग्राहक प्रतिक्रिया हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और हम उसके आधार पर अपने प्रोडक्ट पोर्टफोलियो को नियमित रूप से अपडेट करते हैं।"

सी.वी. रमन ग्लोबल यूनिवर्सिटी अपना पहला सैटेलाइट CGUSAT-1 लॉन्च करेगी

सी.वी.रमन ग्लोबल यूनिवर्सिटी भारत के ईस्टर्न जोन की पहली यूनिवर्सिटी बनकर इतिहास रचेगी जो अपना सैटेलाइट लॉन्च करेगी। यूनिवर्सिटी का पहला सैटेलाइट, CGUSAT-1, भारत सरकार के इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (ISRO) के पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) C-62 का इस्तेमाल करके स्पेस में लॉन्च किया जाएगा।

इस बड़ी कामयाबी की नींव चार साल पहले रखी गई थी, जब यूनिवर्सिटी के स्पेस सिस्टम्स इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के तहत भारत सरकार का लाइसेंस वाला सैटेलाइट ग्राउंड स्टेशन (कॉल साइनः VU2CGU बनाया गया था। कैपेसिटी बिल्डिंग के हिस्से के तौर पर, CGU के एडवाइजर प्रोफेसर सुनील कुमार सारंगी ने दूसरे फैकल्टी मेंबर्स के साथ, स्टूडेंट्स द्वारा बनाए गए सैटेलाइट डेवलपमेंट में दुनिया भर में सबसे अच्छी प्रैक्टिस की स्टडी करने के लिए टेक्नियन यूनिवर्सिटी और हर्जलिया साइंस सेंटर, इजराइल का दौरा किया।

यूको बैंक ने धूमधाम और डिजिटल नवाचार के साथ मनाया अपना 84वां स्थापना दिवस

देश के जाने-माने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक, यूको बैंक ने 06 जनवरी, 2026 को अपना 84वां स्थापना दिवस पूरे जोश और शानदार तरीके से मनाया। यह खास अवसर बैंक के भरोसे की विरासत तथा नवाचार और डिजिटल रूपांतरण पर उसके लगातार ध्यान केंद्रित रहने को दर्शाता है। स्थापना दिवस समारोह का विषय "यूको गो डिजिटल' था, जो प्रौद्योगिकी पर आधारित बैंकिंग, प्रचालनीय दक्षता और बेहतर ग्राहक अनुभव के लिए बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष अरवमुदन कृष्ण कुमार, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ अश्विनी कुमार, कार्यकारी निदेशक राजेंद्र कुमार साबू, कार्यकारी निदेशक विजयकुमार निवृत्ति कांबले, साथ ही निदेशक मंडल के सदस्यगण और बैंक के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। उत्सव के हिस्से के तौर पर, बैंक ने 61 शाखाएं बढ़ाने और ग्राहकों तक पहुंच कार्यक्रम किए, ग्राहक मिलन आयोजित किए, सीएसआर गतिविधि की और पूरे देश में रक्तदान कैंप लगाया, जिससे सामाजिक जिम्मेदारी और देश सृजन हेतु इसकी प्रतिबद्धता सुनिश्चित हुई।

अच्युत सामंत भारतीय वॉलीबॉल महासंघ के मुख्य संरक्षक निर्वाचित

KIIT और KISS के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत को सर्वसम्मति से भारतीय वॉलीबॉल महासंघ (VFI) का मुख्य संरक्षक निर्वाचित किया गया है। यह निर्णय वाराणसी में आयोजित 72वीं सीनियर नेशनल वॉलीबॉल चैंपियनशिप 2026 के दौरान लिया गया। इस चैंपियनशिप का उद्घाटन रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया।

भारतीय वॉलीबॉल महासंघ की वार्षिक आम परिषद की बैठक वाराणसी में संपन्न हुई, जिसमें देशभर के सभी राज्यों के वॉलीबॉल संघों के अध्यक्ष, सचिव एवं पदाधिकारी शामिल हुए। इसी बैठक में डॉ. सामंत को मुख्य संरक्षक नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। पूर्व निर्धारित व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं के कारण डॉ. सामंत बैठक में उपस्थित नहीं हो सके।

हालांकि VFI के अध्यक्ष और महासचिव ने उनसे टेलीफोन पर संपर्क किया और उनकी सहमति प्राप्त करने के बाद औपचारिक रूप से उन्हें मुख्य संरक्षक नामित किया गया।

जब पानी बन जाए अदृश्य खतराः इंदौर से सबक और निवारक जल सुरक्षा की जरूरत

इंदौर में हाल ही में हुई घटना, जहां सीवेज मिला पेयजल कई लोगों की मौत और सैकड़ों के बीमार होने का कारण बना, यह स्पष्ट करता है कि भारत में जल प्रदूषण अक्सर बिना चेतावनी के होता है और तब सामने आता है जब नुकसान हो चुका होता है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, पुराने पाइप लाइनों के कारण सीवेज का पानी, पीने के पानी में मिल गया। लेकिन जांच और कार्रवाई से पहले ही लोग वह पानी पी चुके थे। यह स्थिति केवल इंदौर तक सीमित नहीं है - यह देश के कई शहरों, औद्योगिक क्षेत्रों और आवासीय परिसरों की वास्तविकता है।

इंदौर की घटना बताती है कि अब हमें Preventive Water Safety अपनानी होगी। Silver P4 International इसी सोच पर काम करता है। कंपनी की भारत सरकार से अनुमोदित, पेटेंटेड अल्कलाइन सिल्वर तकनीक जल भंडारण के पहले 30 मिनट में ही सक्रिय हो जाती है।

अपना देश

पेशकार को कार से खींच मार डाला

उत्तर प्रदेश

- कार और बाइक की टक्कर को लेकर विवाद में दिया वारदात को अंजाम
- आरोपियों ने पत्नी, भतीजे और बच्चों के सामने बेदर्दी से मौत के घाट उतारा

जोया (अमरोहा), संवाददाता। बंबूगढ़-जोया बाइपास पर रविवार दोपहर एक मामूली सड़क हादसे ने खौफनाक मोड़ ले लिया। कार और बाइक की टक्कर के बाद भड़के युवकों ने पत्नी और बच्चों के सामने जज के पेशकार की पीट-पीटकर हत्या कर दी।

हमलावर पीछा करते हुए संभल चौराहे तक पहुंचे और बीच सड़क पर वारदात को अंजाम देने के बाद फरार हो गए। दिनदहाड़े हुई इस वारदात से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। हंगामे के बीच पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पेशकार के भतीजे की तहरीर पर चार लोगों को नामजद करते हुए कुछ अज्ञात के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने दो आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

शहर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला नल निवासी राशिद हुसैन अमरोहा जिला न्यायालय में सिविल जज (जूनियर डिवीजन) की अदालत में पेशकार के पद पर तैनात थे। रविवार दोपहर करीब दो बजे वह पत्नी रुखसार, भतीजे सलमान और तीन बच्चों के साथ कार से मुरादाबाद जिले के गांव पट्टी स्थित अपनी रिश्तेदारी में जा रहे थे। पुलिस के अनुसार, जब उनकी कार बंबूगढ़-जोया बाइपास पर नहर की पुलिया के पास पहुंची, तभी पीछे से आ रही बाइक पर सवार दो युवकों ने गलत दिशा से ओवरटेक किया। इसी दौरान बाइक और कार की टक्कर हो गई। इसके बाद राशिद हुसैन की बाइक सवार युवकों से कहासुनी और झड़प हो गई। विवाद बढ़ता देख स्थानीय लोगों ने बीच-बचाव कर उस समय मामला शांत करा दिया, जिसके बाद राशिद हुसैन कार लेकर आगे निकल गए। बाइक सवार युवक यहीं नहीं रुके। उन्होंने फोन कर अपने परिजनों और दोस्तों को बुला लिया और कार का पीछा करते हुए डिडौली कोतवाली क्षेत्र के संभल चौराहे तक पहुंच गए। वहां आरोपियों ने राशिद हुसैन की कार को घेरकर रोक लिया और उन्हें कार से नीचे उतारकर बीच सड़क बेरहमी से पीट-पीटकर मौत के घाट उतार दिया। पत्नी और बच्चों के गिड़गिड़ाने के बावजूद आरोपी हमला करते रहे। भीड़ जुटती देख आरोपी धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए।

अल फलाह परिसर हो सकता है कुर्क

तैयारी

- मामले में पीएमएलए के तहत जांच कर रही है केंद्रीय एजेंसी
- विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियां जारी रहेंगी

नई दिल्ली, एजेंसी। फरीदाबाद आतंकी मॉड्यूल मामले में मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत ईडी अल फलाह विश्वविद्यालय के परिसर को कुर्क कर सकती है। सूत्रों के हवाले से यह जानकारी सामने आई है।

सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय जांच एजेंसी का दावा है कि अल फलाह समूह से जुड़े शिक्षण संस्थानों के पास पढ़ाने के लिए जरूरी वैध मान्यता नहीं थी। जांच में सामने आया है कि इन संस्थानों से हुई अवैध कमाई का एक बड़ा हिस्सा विश्वविद्यालय के निर्माण में लगाया गया था।

ईडी इस मामले में पहले ही अल फलाह समूह के चेयरमैन जवाद अहमद सिद्दीकी को मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार कर चुकी है। इसके अलावा, ईडी अल फलाह ट्रस्ट से जुड़ी विभिन्न चल और अचल संपत्तियों की पहचान और उनका मूल्यांकन कर रही है। समूह के सभी शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालय का स्वामित्व इसी ट्रस्ट के पास है। सूत्रों के अनुसा ईडी मामले की जांच कर रही है।

सूत्रों का कहना है कि जांच प्रक्रिया पूरी होने के बाद ईडी आगे की कार्रवाई करेगी। हालांकि, अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि कुर्की की संभावित कार्रवाई के बावजूद विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियां जारी रहेंगी और छात्रों की पढ़ाई पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

पटना एयरपोर्ट पर महिला यात्री की मौत

पटना, हिन्दुस्तान प्रतिनिधि। पटना एयरपोर्ट पर रविवार को एक महिला यात्री की तबीयत खराब होने के बाद मौत हो गई। बेगूसराय की रहने वाली 61 वर्षीय निर्मला देवी स्पाइसजेट की विमान से मुंबई जाने वाली थी। अचानक तबीयत खराब होने के कारण उनकी मौत हो गई।

तबीयत खराब होने के बाद महिला छटपटाती रही, लेकिन डॉक्टर की मदद नहीं मिलने के कारण स्थिति नाजुक होती चली गई। महिला को राजाबाजार स्थित अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

संपादकीय जागरण
सोमवार, 12 जनवरी, 2026: माघ कृष्ण - 9 वि. 2082

अपनी प्रतिभा का उपयोग न करना स्वयं के प्रति अन्याय है

ईरान को ट्रंप की धमकी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान में सैन्य हस्तक्षेप करने के जो नए संकेत दिए, उससे यह स्पष्ट है कि वेनेजुएला पर हमले के बाद वे पूरी तरह से बेलगाम हो गए हैं। उनका मनमानापन इसलिए बढ़ता चला जा रहा है, क्योंकि वेनेजुएला में अमेरिकी सेनाओं के हमले का विश्व समुदाय की ओर से एक सुर में विरोध और प्रतिरोध नहीं हुआ। चार वर्ष पहले जब रूस ने यूक्रेन पर हमला किया था तो अमेरिका और उसके सहयोगी राष्ट्रों ने उस पर अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों की अनदेखी करने के आरोप लगाए थे। पिछले चार वर्षों में ये आरोप लगातार दोहराए गए हैं, लेकिन अब ट्रंप रूसी राष्ट्रपति पुतिन की ही तरह मनमानी कर रहे हैं। स्पष्ट है कि उनका रवैया विश्व को और अधिक अस्थिर एवं अशांत करने वाला ही है। यह सही है कि ईरान की कट्टरपंथी इस्लामी सत्ता के खिलाफ वहां के लोग सड़कों पर हैं और उनके प्रति सख्ती दिखाई जा रही है, लेकिन यह स्थिति अमेरिका अथवा किसी अन्य देश को वहां पर सैन्य हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देती। यदि ईरान में किसी तरह के हस्तक्षेप की आवश्यकता है तो उसकी पूर्ति संयुक्त राष्ट्र की सहमति से और उसके नेतृत्व में ही होनी चाहिए। इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि ईरानी शासक और विशेष रूप से वहां की सत्ता का संचालन कर रहे सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई यह समझें कि अपने लोगों का दमन करके स्थितियों को नहीं सुधारा जा सकता।

ईरान के लोग जिन कारणों से सड़कों पर हैं, उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। वे बढ़ती महंगाई से बुरी तरह त्रस्त हैं। ईरान की आर्थिक स्थिति इसलिए गड़बड़ाई हुई है, क्योंकि अमेरिका ने इस आधार पर उस पर कठोर प्रतिबंध लगा रखे हैं कि वह परमाणु हथियार बनाने की चेष्टा कर रहा है। ईरान की ऐसी किसी चेष्टा से इजरायल भी सशंकित है और कुछ महीनों पहले इसी कारण उसने वहां पर हमला भी किया था। इस हमले में अमेरिका ने भी इजरायल का साथ दिया था। एक बार फिर अमेरिका और इजरायल ईरान की घेराबंदी करें तो हैरानी नहीं, लेकिन इससे पश्चिम एशिया की स्थितियां और अधिक बिगड़ेंगी। ईरान अमेरिकी प्रतिबंधों के चलते पहले ही आर्थिक रूप से पस्त है। विडंबना यह है कि इसके बावजूद वह हिजबुल्ला, हमास जैसे संगठनों के साथ-साथ यमन में काबिज हाउती विद्रोहियों को आर्थिक एवं सैन्य सहायता देने में लगा हुआ है। स्वाभाविक रूप से ईरान की जनता इसके भी खिलाफ है। यदि ईरानी सत्ता अमेरिकी हस्तक्षेप से बचना चाहती है तो उसे अपने रवैये में परिवर्तन करना होगा। पता नहीं ऐसा होगा या नहीं, लेकिन भारत को ईरान के बिगड़ते हालात के प्रति सतर्क रहना होगा, क्योंकि वहां उसके व्यापक हित निहित हैं।

लापरवाह रवैया

दिल्ली में मथुरा रोड पर निजामुद्दीन थाने के पास प्रतिदिन जाम लगना निराशाजनक है। मामला तब और भी गंभीर हो जाता है, जब ये सामने आता है कि इस थाने की पुलिस थाने के ठीक सामने रोज लगने वाले जाम को हटाने के लिए भी यातायात पुलिस के भरोसे है। वास्तव में थाने के सामने व आसपास नो पार्किंग जोन में बड़ी संख्या में आटो व ई रिक्शा खड़े रहते हैं, जो यातायात जाम का कारण बनते हैं। इसी इलाके में हुमायूं का मकबरा, सुंदर नर्सरी और निजामुद्दीन दरगाह भी है। ऐसे में शनिवार-रविवार को यहां जाम की स्थिति इस कदर गंभीर हो जाती है कि मथुरा रोड पर एक किलोमीटर की दूरी तय करने में एक घंटे से अधिक का समय लग जाता है।

> यातायात जाम को गंभीरता से लेना चाहिए और सिर्फ मथुरा रोड ही नहीं, दिल्ली के सभी स्थानों को जाम से मुक्त कराना चाहिए

यह सही है कि देश के अन्य शहरों की तरह दिल्ली में भी यातायात प्रबंधन का काम यातायात पुलिस ही देखती है, लेकिन रोज लगने वाले जाम व सप्ताहांत में जाम की गंभीर स्थिति उसे नजर नहीं आती। यही वजह है कि मात्र एक डायवर्जन बनाकर उसने अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली है। वहीं, निजामुद्दीन थाने की पुलिस भले स्वयं भी इस जाम से त्रस्त हो, लेकिन वह नो पार्किंग में अवैध रूप से खड़े आटो, ई रिक्शा को हटाने का प्रयास नहीं करती। पुलिस का ये लापरवाह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण है, जबकि उसके जरा से प्रयास से इस समस्या से चालकों को निजात मिल सकती है। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को इसे गंभीरता से लेना चाहिए और सिर्फ मथुरा रोड ही नहीं, दिल्ली के ऐसे सभी स्थानों को जाम से मुक्त कराना चाहिए।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या यूरोपीय देश ट्रंप को ग्रीनलैंड पर कब्जा करने से रोकने में समर्थ दिख रहे हैं?

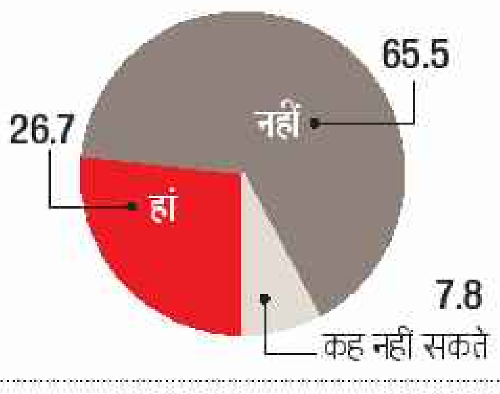

आज का सवाल

क्या एआइ से तस्वीरों के मामले में ग्रोक की कार्रवाई भरोसेमंद कही जा सकती है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

नए अध्यक्ष के नेतृत्व में नई परीक्षा

डा. मनिष दभाडे

इस साल विधानसभा चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन बताएगा कि पार्टी उत्तर-पश्चिम भारत तक सीमित न होकर एक अखिल भारतीय शक्ति बनने में सक्षम है या नहीं

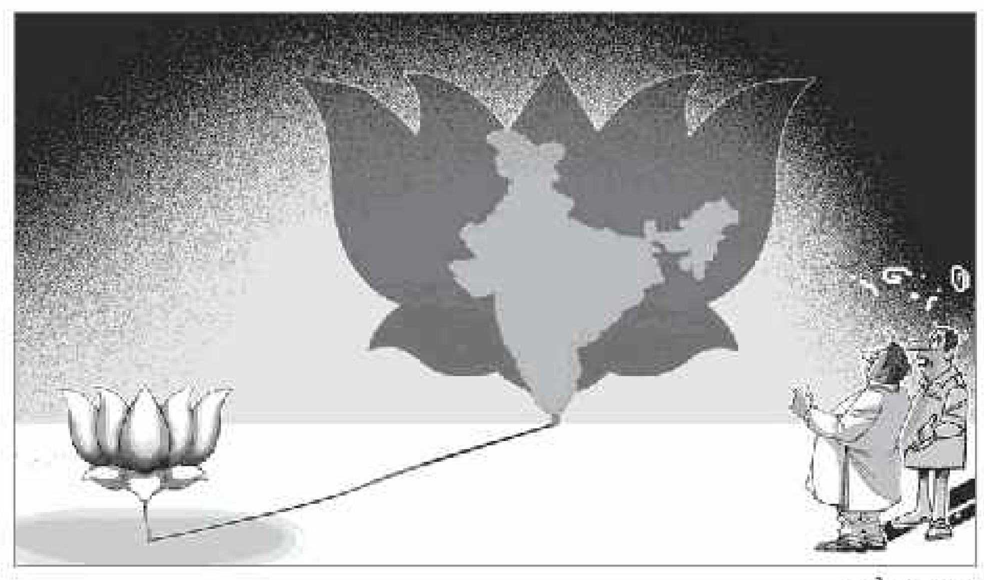

अवधेश राजपूत

सत्तारूढ़ भाजपा के लिए नया साल नई चुनौतियां लेकर आया है। पार्टी ने नए अध्यक्ष नितिन नवीन की इसी साल पहली बड़ी परीक्षा भी होगी। ये परीक्षा बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के विधानसभा चुनावों में देखने को मिलेगी। ये सभी राज्य पार्टी की संभावनाओं के हिसाब से अलग-अलग रुझान दर्शाते हैं। बीते एक दशक में भाजपा ने बंगाल में जो विस्तार किया है, वह भारतीय राजनीति में एक मिसाल है। एक समय इस प्रदेश में अप्रासंगिक मानी जाने वाली पार्टी आज राज्य की मुख्य विपक्षी शक्ति बन चुकी है। हालांकि राज्य की सत्ता अभी भी उससे दूर है। यहां ममता बनर्जी केवल एक लोकप्रिय मुख्यमंत्री नहीं हैं, बल्कि एक अनुभवी राजनीतिक योद्धा हैं। उनके पास प्रशासन, संगठन और भावनात्मक राजनीति-तीनों का गहरा अनुभव है। ऐसे में भाजपा की चुनौती बंगाल में वैचारिक प्रवेश की नहीं, बल्कि संगठनात्मक परिपक्वता से जुड़ी है। गुटबाजी, नेतृत्व प्रतिस्पर्धा, पुराने कार्यकर्ताओं और नए चेहरों के बीच संतुलन-ये सभी मुद्दे भाजपा की प्रगति को धीमा कर सकते हैं। ऐसे में, नितिन नवीन के लिए बंगाल में जीत का अर्थ केवल सत्ता प्राप्त करने से भी बढ़कर एक ऐसा संगठन खड़ा करने से जुड़ा होगा, जो चुनावों के बीच भी सक्रिय, अनुशासित और जनता से जुड़ा रहे। यदि भाजपा बंगाल में सत्ता तक पहुंचती है तो यह ऐतिहासिक उपलब्धि होगी, लेकिन यदि वह मजबूत संगठन और स्थिर वोट आधार के साथ मुकाबला करती है तो भी यह भविष्य के लिए निर्णायक निवेश होगा।

तमिलनाडु और केरल में भाजपा की चुनौती अलग प्रकृति की है। यहां राजनीति केवल सत्ता का खेल नहीं, बल्कि पहचान, संस्कृति और सामाजिक संरचना के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति की मजबूत विरासत और केरल में वामपंथी तथा कांग्रेस का सामाजिक आधार भाजपा के लिए आसान चुनौती नहीं है। यहां नितिन नवीन को जल्दबाजी से बचते हुए दीर्घकालिक विस्तार की रणनीति अपनानी होगी। गठबंधन, सामाजिक संवाद और स्थानीय नेतृत्व का विकास-ये सभी तत्व यहां निर्णायक होंगे। असम में तस्वीर भिन्न है। वहां भाजपा सत्ता में है और चुनौती उसे बनाए रखने की है। सुशासन, स्थिरता और स्थानीय आकांक्षाओं को पूरा करना नितिन नवीन के संगठनात्मक समर्थन के बिना संभव नहीं होगा। इन राज्यों में भाजपा का प्रदर्शन यह बताएगा कि पार्टी केवल उत्तर और पश्चिम भारत तक सीमित न होकर एक अखिल भारतीय शक्ति बनने में सक्षम है या नहीं।

भाजपा की दूसरी बड़ी चुनौती सरकार और संगठन के बीच तालमेल को मजबूत बनाए रखने की है। मोदी सरकार की योजनाएं और उपलब्धियां तभी राजनीतिक शक्ति में बदल सकती हैं, जब संगठन उन्हें जनता की भाषा में समझा सके। सरकारी योजनाएं फाइलों में प्रभावी हो सकती हैं, लेकिन राजनीति में उनका असर तभी दिखता है जब जनता उन्हें अपने जीवन से जोड़ती है। नितिन नवीन को यह सुनिश्चित करना होगा कि भाजपा का हर कार्यकर्ता सरकार की नीतियों का प्रभावी संवाहक बने, न कि केवल चुनाव के समय सक्रिय होने वाला एजेंट। इसके साथ-साथ यह भी उतना ही जरूरी है कि संगठन जनता की नाराजगी और जमीनी समस्याओं को सरकार तक पहुंचाए। लंबे समय तक सत्ता में रहने वाली पार्टियों के लिए सबसे बड़ा खतरा यही होता है कि वे जमीनी सच्चाइयों से कट जाती हैं।

तीसरी बड़ी चुनौती संगठनात्मक पुनर्गठन और पीढ़ीगत परिवर्तन से जुड़ी है। नितिन नवीन की नियुक्ति स्वयं इस बदलाव का प्रतीक है, लेकिन इसे पूरे संगठन में लागू करना कहीं अधिक कठिन है। युवा और सक्षम नेताओं को आगे लाना आवश्यक है, लेकिन वरिष्ठ नेताओं के अनुभव और योगदान को दरकिनार किए बिना। संगठनात्मक बदलाव अक्सर असंतोष और असुरक्षा को जन्म देता है। ऐसे में नितिन नवीन को स्पष्ट संदेश देना होगा कि भाजपा में पद नहीं, बल्कि प्रदर्शन सबसे बड़ा मानदंड है। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि संगठन का विकेंद्रीकृत स्वरूप कमजोर न पड़े। राज्य इकाइयों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, लेकिन राष्ट्रीय दिशा और अनुशासन से समझौता नहीं होना चाहिए।

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संबंध बहुत विशिष्ट है। हाल के वर्षों में इस रिश्ते में कुछ दूरी की चर्चाएं हुई हैं। नितिन नवीन की भूमिका इसमें संतुलन साधने की है। संगठनात्मक पृष्ठभूमि से आए नितिन नवीन संघ की कार्यसंस्कृति को भलीभांति समझते हैं। उनकी चुनौती यह है कि संघ की वैचारिक अपेक्षाओं और भाजपा की चुनावी व्यावहारिकताओं के बीच संतुलन बनाए रखें। ऐसी चुनौतियों के बीच एक निर्णायक बिंदु 2029 के लोकसभा चुनाव की तैयारी का भी है। भाजपा को अपनी कहानी को अतीत की उपलब्धियों से भविष्य की आकांक्षाओं की ओर मोड़ना होगा। युवाओं, नए मतदाताओं और उन क्षेत्रों में जहां पार्टी अभी भी विस्तार की प्रक्रिया में है, विशेष ध्यान देना होगा। राजग को मजबूत और लचीला बनाए रखना भी आवश्यक होगा। क्षेत्रीय दलों के साथ संतुलन, नए संभावित सहयोगियों के लिए स्थान और पुराने साथियों के साथ विश्वास-ये 2029 की सफलता में निर्णायक होंगे। नितिन नवीन की भूमिका यहां एक सेतु की है।

देखा जाए तो नितिन नवीन एक ऐसे समय में भाजपा की संगठनात्मक कमान संभाल रहे हैं, जब पार्टी अपने राजनीतिक शिखर पर है और यही उसकी सबसे बड़ी परीक्षा भी है। चुनाव जीतना, संगठन को कसना, सरकार और पार्टी के बीच सामंजस्य बनाए रखना, वैचारिक साझेदारी को संतुलित करना और 2029 की नींव मजबूत करने जैसे कार्यों को एक साथ मूर्त रूप देना आसान नहीं है। अगर वे इन चुनौतियों को सफलतापूर्वक साध लेते हैं, तो भाजपा न केवल सत्ता में बनी रहेगी, बल्कि भारतीय राजनीति की सबसे स्थायी, संगठित और प्रभावशाली पार्टी के रूप में अगले दशक में प्रवेश करेगी।

(लेखक जेएनयू में एसोसिएट प्रोफेसर और 'द इंडियन फ्यूचर्स' के संस्थापक हैं)

response@jagran.com

बौद्धिक अवसाद से मुक्त हो जेएनयू

रामानंद शर्मा

जेएनयू जैसे संस्थानों के भीतर किसी की आलोचना तो वैध है, पर राष्ट्र की वैधता को अपमानित करना स्वीकार्य नहीं है

हाल में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में जो कुछ हुआ, वह केवल छात्र राजनीति की हलचल नहीं है। यह भारतीय गणराज्य के यथार्थ और परिसर की पुरानी जकड़न के बीच एक बड़ा विचलन है। साबरमती छात्रावास के पास हुई सभा जिस तरह हिंसक नारेबाजी में बदली, वह चौंकाती नहीं है। यह उस रुग्ण मानसिकता का प्रकटीकरण है, जो संवैधानिक संस्थाओं के निर्णयों को स्वीकार करने के बजाय सड़क पर चुनौती देने की आदी हो चुकी है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसे 'नफरत की प्रयोगशाला' कहा है। दरअसल यह उस अकादमिक वामपंथ की विफलता है, जो आज भी समय की आहट नहीं सुन पा रहा। प्रखर चुनावी जनादेश के इस दौर में अब 'दिखावे का विद्रोह' अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। विश्वविद्यालय किसी विचारधारा की छावनी नहीं, बल्कि संविधान के अधीन चलने वाली सार्वजनिक संस्थाएं हैं। उनका दायित्व केवल प्रश्न उठाना नहीं, बल्कि संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर रहकर विवेक विकसित करना भी है। जब कोई परिसर स्वयं को वैचारिक युद्धभूमि में बदल लेता है, तब वह अपनी संवैधानिक पहचान खो देता है। लोकतंत्र में प्रतिरोध का स्थान है, पर वह संस्थागत संतुलन के भीतर होना चाहिए, उसके विरुद्ध नहीं। यहां नीतिगत विरोध नहीं हो रहा, बल्कि सीधे सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को ललकारा जा रहा है। जब छात्र राजनीति न्यायालय को भी सत्ता का औजार बताने लगती है, तब गणराज्य की अंतिम तटस्थ भूमि भी असुरक्षित हो जाती है। यह असहमति नहीं, बल्कि संवैधानिक विश्वास का क्षरण है। ऐसी स्थिति में लोकतंत्र केवल टकराव का अखाड़ा बनकर रह जाता है।

उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिका पर न्यायिक फैसला साक्ष्यों पर आधारित था, किंतु जेएनयू के एक वर्ग ने इसे 'अन्याय' बता दिया। उन्होंने संस्थान को अदालत के सामने खड़ा कर दिया है। जब छात्र संगठन देश के शीर्ष नेतृत्व के विरुद्ध अमर्यादित नारे लगाते हैं, तो वह वैचारिक मतभेद नहीं रहता। वह संविधान की मूल भावना का अनादर है। किसी व्यक्ति के प्रति सहानुभूति अलग बात है, पर न्यायिक प्रक्रिया को शत्रु मान लेना न्यायपालिका की अखंडता पर प्रहार है। लोकतंत्र में असहमति का स्थान न्यायालय में होता है, सड़कों पर उकसावे में नहीं। यदि छात्र राजनीति खुद को न्यायपालिका से ऊपर मान ले, तो यह गणराज्य के लिए बड़ी चिंता है।

दुराग्रह में न बदलें वैचारिक आग्रह ● फाइल

जेएनयू जैसे संस्थान आम नागरिकों की गाढ़ी कमाई से चलते हैं। यह समाज के साथ एक नैतिक अनुबंध है। इस अनुबंध के भीतर आलोचना वैध है, पर राष्ट्र की वैधता को अपमानित करना स्वीकार्य नहीं है। करदाताओं से यह आशा करना कि वे अपनी ही बर्बादी के नारों के लिए धन दें, किसी भी समाज में संभव नहीं है। यह जवाबदेही की मांग दमन नहीं, बल्कि एक लोकतांत्रिक आवश्यकता है। शैक्षणिक स्वतंत्रता का सबसे बड़ा शत्रु प्रशासनिक नियंत्रण नहीं, बल्कि वैचारिक एकाधिकार है। जब किसी एक दृष्टिकोण को नैतिक ऊंचाई और अन्य को संदेह की दृष्टि से देखा जाए, तब परिसर स्वतः असहिष्णु हो जाता है। संस्थानों का क्षरण दमन से नहीं, विचारों की एकरूपता से होता है। विविधता पाठ्यक्रम में ही नहीं, विमर्श में भी होनी चाहिए।

कोई भी परिपक्व लोकतंत्र अपने संस्थानों को राष्ट्र के विरुद्ध भावनात्मक उभार का मंच नहीं बनने देता। परिसर की उग्र राजनीति का सबसे अनदेखा प्रभाव उन छात्रों पर पड़ता है, जो पढ़ने आए हैं, नारे लगाने नहीं। पहली पीढ़ी के विद्यार्थी, ग्रामीण पृष्ठभूमि के युवा और सीमित संसाधनों वाले छात्र सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। उनकी चुप्पी सहमति नहीं, विवशता है। विश्वविद्यालय यदि उनकी आकांक्षाओं की रक्षा नहीं करता, तो वह अपने सामाजिक दायित्व से चूक जाता है। परिसर में 'स्थायी आंदोलन' की प्रवृत्ति शैक्षणिक क्षरण पैदा कर रही है। जब पहचान पढ़ाई के बजाय प्रदर्शनों से होने लगे, तो छात्रों का भविष्य दांव पर लग जाता है। दीर्घकाल में यह संस्थान को भीतर से खोखला कर देता है। वैश्विक परिदृश्य को देखिए। विकसित लोकतंत्रों ने भी अभिव्यक्ति की सीमाएं तय की हैं। फ्रांस में आतंकी समूहों के समर्थन पर गिरफ्तारियां होती हैं। अमेरिका में हिंसा भड़काने वाले भाषणों को संरक्षण नहीं मिलता। फिर भारत से ही यह अपेक्षा क्यों कि वह अपने अस्तित्व पर प्रहार करने वाली भाषा के प्रति मौन रहे? दुनिया का कोई भी उदार समाज राष्ट्र की अखंडता को खंडित करने वाले आह्वान सहन नहीं करता। भारत इस वैश्विक व्यवस्था का अपवाद नहीं हो सकता। 'आपातकाल' और 'फासीवाद' जैसे शब्दों का प्रयोग अब समाज में एक नैतिक थकान पैदा कर रहा है।

जेएनयू का मौजूदा संकट एक गहरे बौद्धिक अवसाद का लक्षण है। आंदोलनकारियों को समझना होगा कि विरोध का अधिकार देश की जनता के सामूहिक विवेक से ऊपर नहीं है। आपातकाल का कल्पित भय उन लोगों का आवरण है, जो लोकतांत्रिक संवाद का साहस खो चुके हैं। यदि जेएनयू को अपनी प्रतिष्ठा बचानी है, तो उसे कर्मकांडीय राजनीति छोड़नी होगी। उसे नफरत की प्रयोगशाला के बजाय नवाचार का केंद्र बनना होगा। अब समय आ गया है कि परिसर की राजनीति गणतांत्रिक जिम्मेदारियों को स्वीकार करे।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट कालेज में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

चरित्र का उत्कर्ष

मानव जीवन की सार्थकता भौतिक उपलब्धियों में ही निहित नहीं होती, अपितु चरित्र की श्रेष्ठता में भी प्रतिबिंबित होती है। चरित्र वस्तुतः वह अदृश्य एवं अतुल्य निधि है, जो व्यक्ति के जीवन को सर्वोत्तम दिशा प्रदान करती है। चरित्र से वंचित होकर ज्ञान, शक्ति एवं साधन एक अभिशाप बन जाते हैं। किसी व्यक्ति की वास्तविक प्रगति का मापदंड उसके चरित्र का उत्कर्ष ही होता है। चरित्र का निर्माण सतत साधना, आत्मानुशासन और मूल्यबोध की एक दीर्घ प्रक्रिया है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है। वैचारिक शुद्धता से जनित आचरण की पवित्रता ही चरित्र का स्वरूप गढ़ती है। चरित्र अंतरात्मा की उस सजगता का नाम है, जो अकेले में भी सही और गलत का स्पष्ट भेद रखती है।

चरित्र का उत्कर्ष आत्मसंयम से आरंभ होता है। इच्छाओं का अनियंत्रित विस्तार व्यक्ति को भीतर से खोखला कर देता है। वासनाओं पर नियंत्रण करके ही नैतिक शक्ति का विकास होता है। आत्मसंयम का अर्थ जीवन से पलायन कदापि नहीं, अपितु जीवन को संतुलित ढंग से जीना है। संयमित व्यक्ति ही कठिन परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय ले सकता है और प्रलोभनों के बीच भी अपने मूल्यों को अक्षुण्ण रख सकता है।

सत्यनिष्ठा चारित्रिक उत्कर्ष का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। सत्य केवल वाणी की सच्चाई नहीं, बल्कि विचार और कर्म की एकरूपता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक अद्भुत स्थिरता होती है। ऐसी स्थिरता ही चरित्र के उत्कर्ष का आधार बनती है। कर्तव्यबोध भी चरित्र को ऊंचाई प्रदान करता है। अधिकारों की चर्चा की तुलना में कर्तव्यों की चेतना सदैव प्रबलतर होनी चाहिए। चरित्र का उत्कर्ष एक सतत यात्रा है। यह यात्रा व्यक्ति को नैतिक उन्नयन की ओर उन्मुख करते हुए परिस्थितियों का स्वामी बनने की प्रेरणा देती है। चरित्र का उत्कर्ष मनुष्य जीवन को आशाओं से रंग देता है।

प्रेरणा अवस्थी

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

शक्ति का उच्छृंखल प्रदर्शन

'विश्व को खतरे में डालते ट्रंप' शीर्षक से प्रकाशित संजय गुप्त का लेख पढ़ा। अमेरिका द्वारा वेनेजुएला के राष्ट्रपति को बलपूर्वक पकड़कर अपने नियंत्रण में लेने की घटना और साथ ही ग्रीनलैंड को हथियाने की लालसा उसकी उच्छृंखल और वर्चस्ववादी मानसिकता को उजागर करती है। यह आचरण न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवता और संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सिद्धांतों के भी सर्वथा विपरीत है। यह वही मानसिकता है जो सभ्यता के प्रारंभिक दौर में कबीलों के बीच देखने को मिलती थी, जहां शक्ति ही न्याय का पैमाना होती थी और ताकतवर का वर्चस्व ही अंतिम सत्य माना जाता था। चिंताजनक तथ्य यह भी है कि अमेरिका ने चीन, भारत और ब्राजील जैसे उभरते और प्रभावशाली देशों पर 500 प्रतिशत टैरिफ लगाने का प्रस्ताव लाया है। इससे उसकी मंशा पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है-वह मुक्त व्यापार या निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि आर्थिक दादागीरी और दबाव की राजनीति में विश्वास रखता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से जिस अमेरिकी नेतृत्व और नैतिक श्रेष्ठता का भ्रम दुनिया को दिखाया जाता रहा, अब वह मुखौटा उतरता दिखाई दे रहा है। आज अमेरिकी विदेश नीति का स्थायी चरित्र लोकतंत्र नहीं, बल्कि डालर आधारित प्रभुत्व, डर और दबाव बन चुका है। ऐसे में समय की मांग है कि ब्रिक्स देश अब निर्णायक पहल करें, अपनी साझा व्यापारिक मुद्रा को शीघ्र व्यवहार में लाकर अमेरिकी डालर के साम्राज्यवादी पाश से स्वयं को मुक्त करें। यह वैश्विक शक्ति संतुलन को अधिक न्यायपूर्ण बना सकता है और दुनिया को एकध्रुवीय दादागीरी से बहुध्रुवीय सहयोग की ओर ले जा सकता है। अब इसे व्यवहार में लाने का समय आ चुका है।

मानसिंह चुंडावत, नंदानगर, मंदसौर

बुलडोजर पर रार क्यों

भारत के विभिन्न शहर, नगर और गांव में समय-समय पर अवैध निर्माण पर बुलडोजर चला है। सरकार किसी भी राजनीतिक दल की हो। दिल्ली नगर निगम, दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा और अन्य विभिन्न विभागों की सरकारी जमीन पर देखते ही देखते अवैध निर्माण हो जाते हैं। अदालत का आदेश आता है और अवैध निर्माण पर बुलडोजर चलता है। इसके बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष एक-दूसरे पर गंभीर आरोप लगाते हैं तथा राजनीति का दौर प्रारंभ हो जाता है। यहां तक कि 2025 में दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के पश्चात रामलीला मैदान के पास जमीन से अतिक्रमण हटाने का आदेश जारी किया गया। उसके साथ ही राजनीति का दौर शुरू हो गया। समय-समय पर अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई होती रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की पहचान सुशासन और कानून के राज वाली है। सरकार ने कभी तुष्टिकरण की राजनीति नहीं की, इस बात को विपक्ष को समझना चाहिए कि अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई किसी धर्म के खिलाफ नहीं बल्कि कानून के पक्ष में है। यही लोकतंत्र है और इसी में संविधान की आत्मा रहती है।

मीना धानिया, सिरसपुर दिल्ली

विश्व व्यवस्था का संकट

आज की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था गहरे संक्रमण के दौर से गुजर रही है। जिस नियम-आधारित विश्व व्यवस्था को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक शांति, स्थिरता और सहयोग का आधार माना गया था, वही व्यवस्था अब कमजोर होती दिखाई दे रही है। संप्रभुता का सम्मान, क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा, अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन और विवादों का शांतिपूर्ण समाधान-ये सिद्धांत कागजों तक सीमित होते जा रहे हैं। वास्तविकता यह है कि शक्तिशाली देश नियमों की व्याख्या अपने हितों के अनुसार करते हैं और जहां हित बाधित होते हैं, वहां नियमों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाएं इस व्यवस्था के स्तंभ मानी जाती थीं, लेकिन हाल के वर्षों में इनकी प्रभावशीलता पर गंभीर प्रश्न खड़े हुए हैं। डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका की एकतरफा नीतियां, चाहे जलवायु समझौतों से दूरी हो, व्यापार युद्ध हों या अंतरराष्ट्रीय संगठनों को कमजोर करना, ये वैश्विक अस्थिरता को और बढ़ाती हैं। ऐसे में विश्व समुदाय के लिए आवश्यक है कि वह सामूहिक रूप से बहुपक्षीयता को मजबूत करे और किसी एक शक्ति के दबाव में न आए। अमेरिका की दादागिरी दुनिया के लिए खतरा भी है, लेकिन उसकी तकनीकी और वैचारिक प्रगति भविष्य की नींव भी रख रही है। असली जरूरत शक्ति के संतुलन और जिम्मेदार नेतृत्व की है, ताकि ताकत विनाश नहीं, बल्कि मानवता के विकास का साधन बने।

कमल सिंह भाकुनी, सरोजिनी नगर, दिल्ली

पोस्ट

भारत में 'आजादी' के नाम पर हिजाब की हिमायत वाला तथाकथित 'नारीवादी' वर्ग ईरान की महिलाओं की हिम्मत पर शांत है। ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल के दौरान भारत को अमेरिका की तरफ से और मुश्किल परिस्थितियों के लिए तैयार रहना चाहिए।
आर. जगन्नाथन@TheJaggi

अमेरिकी खेमे के बयान भारत के लिए चिंताजनक हैं। वसंत-ग्रीष्म सीजन से पहले ट्रेड डील न हो पाने से भारतीय निर्यातकों को कठिन चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। वैसे तो भारत के पास यूरोपीय संघ के साथ व्यापार संधि का विकल्प भी है, किंतु वह शीघ्र सिरे चढ़ती नहीं दिख रही। राजेश शुक्ला@astroraj

क्या आज से 11 साल पहले कोई ऐसी कल्पना भी कर सकता था कि हमारे प्रधानमंत्री सोमनाथजी में शौर्य यात्रा निकालेंगे। क्या हमने यह कल्पना की थी कि अयोध्याजी में धर्म ध्वजा फहरेगी। देश का इतिहास नए सिरे से लिखा जा रहा है और हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसा होते हुए देख रहे हैं। यह सब एक वोट की शक्ति से ही संभव हो सका है। अमि गणात्रा@6amiji

जनपथ

जिसने-जिसने आ किया सोमनाथ का ध्वंस,
सभी आतताई मिटे रहा न उनका अंश।
रहा न उनका अंश मिले सारे मिट्टी में,
जिंदा हैं कुछ 'छद्म' जलेंगे वे भट्ठी में!
विध्वंसी को याद किया है आखिर किसने,
आते हैं वे याद पुन: बनवाया जिसने!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए, डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 178

हां 87% नहीं 13% — क्या अमेरिका की आर्थिक ताकत के पीछे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के तौर पर डालर की प्रमुख भूमिका है?

हां 76% नहीं 24% — क्या दुनिया में डी-डालराइजेशन का बढ़ता ट्रेंड अमेरिकी प्रभुत्व को खतरे में डाल रहा है?

मुद्दा से संबंधित अपनी राय, सुझाव और प्रतिक्रिया mudda@jagran.com पर भेज सकते हैं।

खतरे में अमेरिकी साम्राज्य!

अमेरिका दुनिया का सबसे ताकतवर और समृद्ध देश है। 1990 में सोवियत संघ के विघटन के बाद करीब तीन दशक तक अमेरिका को वैश्विक मंच पर कोई खास चुनौती नहीं मिली और इसका मुख्य कारण उसकी मुद्रा डालर है। वैश्विक मोर्चे पर आर्थिक व्यवस्था में डालर का प्रभुत्व बना हुआ है। लेकिन बीते कुछ वर्षों से वैश्विक मंचों पर चीन और भारत का उभार डालर के इस प्रभुत्व को चुनौती दे रहा है। एक तरफ चीन जहां तमाम देशों के साथ स्थानीय मुद्रा में कारोबार को बढ़ावा दे रहा है। वहीं, भारत, चीन, रूस और ब्राजील जैसे देशों का संगठन ब्रिक्स डालर से इतर अपनी मुद्रा लाने पर विचार कर रहा है। इससे अमेरिका को डालर की बादशाहत खतरे में नजर आ रही है। यदि डालर का वैश्विक प्रभुत्व कमजोर होता है तो इससे अमेरिका का आर्थिक दबदबा भी खत्म हो जाएगा। इसी खतरे को देखते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप डी-डालराइजेशन के प्रयासों को बढ़ावा देने वाले देशों को टैरिफ समेत अन्य प्रकार की धमकी दे रहे हैं। इन देशों में रूस, चीन और भारत प्रमुख हैं। डी-डालराइजेशन के इस ट्रेंड पर अमेरिका की चिंता और इससे निपटने के लिए अपनाई जा रही है उसकी नीतियों की पड़ताल आज का अहम मुद्दा है...

क्या है डी- डालराइजेशन

डी-डालराइजेशन का मतलब है वैश्विक व्यापार, वित्त और विदेशी मुद्रा भंडार में अमेरिकी डालर के प्रभुत्व को कम करना। इसमें देश डालर के बजाय अन्य मुद्राओं जैसे- युआन, रूबल, रुपया, या सोने का उपयोग करके अंतरराष्ट्रीय लेन-देन के लिए मुद्रा के तौर पर डालर से अपनी निर्भरता घटाते हैं, ताकि अमेरिकी प्रतिबंधों और विदेश नीति के प्रभावों से बचा जा सके और अपनी आर्थिक स्वायत्तता बढ़ाई जा सके।

डालर का विकल्प तलाश रही है दुनिया

डालर का दशकों से अंतरराष्ट्रीय आरक्षित मुद्रा के तौर पर प्रभुत्व रहा है। हालांकि, अब चीजें बदल रही हैं। रूस, चीन और भारत सहित कई देश अमेरिका से निर्भरता कम करने और अमेरिकी प्रतिबंधों के असर से बचने के लिए अपनी मुद्रा में दूसरे देशों से व्यापार को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा केंद्रीय बैंक भी अपने विदेशी मुद्रा भंडार में विविधता लाने के लिए बड़े पैमाने पर सोना खरीद रहे हैं। डालर के प्रभुत्व और डी- डालराइजेशन के मजबूत हो रहे ट्रेंड पर प्रकाश डाल रहे हैं **महेन्द्र सिंह**-

साझा मुद्रा पर विचार कर रहे ब्रिक्स देश

40% वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है ब्रिक्स

26% वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी है ब्रिक्स के सदस्य देशों की

- डोनाल्ड ट्रंप डालर के प्रभुत्व को चुनौती देने की संभावना पर ब्रिक्स देशों को दे चुके हैं धमकी
- वैश्विक व्यापार और पूंजी प्रवाह में दशकों से अमेरिकी डालर का प्रभुत्व रहा है
- बहुत से देश अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए डालर का विकल्प तलाश रहे हैं। वे अपनी मुद्रा में दूसरे देशों से व्यापार को बढ़ावा दे रहे हैं

डालर के प्रभुत्व का इतिहास

1920 का दशक
डालर ने अंतरराष्ट्रीय आरक्षित मुद्रा के तौर पर स्टर्लिंग और पाउंड की जगह लेनी शुरू की। विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका में सबसे ज्यादा सोना आया

1944
ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट के तहत अंतरराष्ट्रीय व्यापार डालर में किया गया

1960 का दशक
यूरोप और जापान के उत्पाद निर्यात बाजार में अमेरिकी उत्पादों को कड़ी टक्कर देने लगे। दुनिया में डालर की आपूर्ति काफी अधिक हो गई। ऐसे में डालर को सोने का समर्थन देना मुश्किल हो गया

1971
अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने अमेरिकी डालर को सीधे सोने में बदलने पर रोक लगा दी

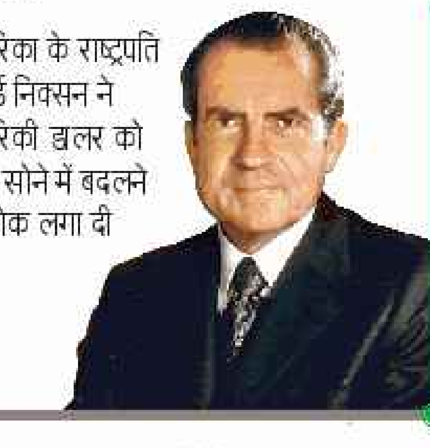

1981
वर्षों तक काफी अधिक महंगाई (हाइपर इन्फ्लेशन) के कारण डालर ने अपनी दो तिहाई खरीद क्षमता गवां दी

2007-2008
वैश्विक वित्तीय संकट: निवेशकों में डालर की मांग बढ़ी। उनको उम्मीद थी कि डालर अपनी वैल्यू बरकरार रखेगा

शुरू हुआ डी- डालराइजेशन

2014
क्रीमिया पर कब्जे के बाद रूस ने पश्चिमी देशों के प्रतिबंध के जवाब में डी-डालराइजेशन को प्राथमिकता दी। उसने दूसरे देशों के साथ रूबल में व्यापार शुरू किया

2022
- केंद्रीय बैंकों ने 1987 के बाद सबसे ज्यादा सोना खरीदा। दुनिया के तमाम देश अपने विदेशी मुद्रा भंडार में डालर कम करते हुए विविधता लाना चाहते थे
- यूक्रेन युद्ध शुरू होने पर पश्चिमी देशों ने रूस पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए। इसके बाद रूस और चीन ने रूबल और युआन में द्विपक्षीय व्यापार शुरू किया। रूबल-युआन व्यापार आठ महीनों में 80 गुना बढ़ गया

रूबल-युआन में चीन और रूस का व्यापार

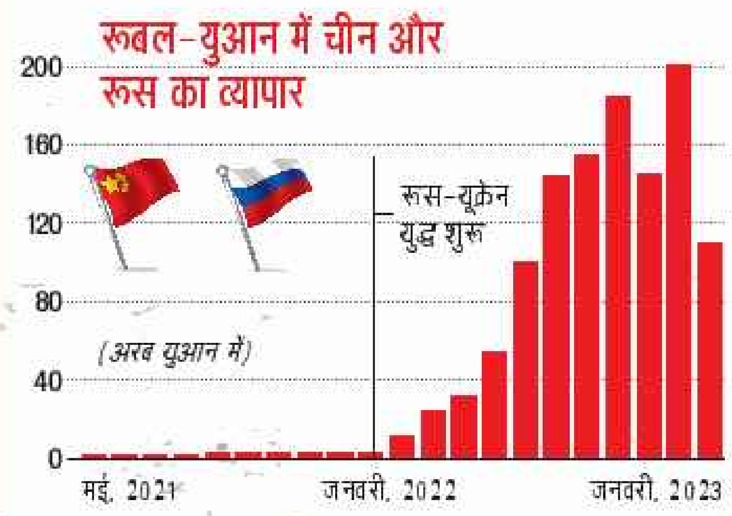

2023
- ब्राजील और अर्जेंटीना ने साझा मुद्रा शुरू करने पर विचार-विमर्श किया
- संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और भारत ने तेल के अलावा दूसरी वस्तुओं का व्यापार रुपये में करने की संभावनाओं पर बातचीत शुरू की
- रूस- ईरान सोना समर्थित क्रिप्टोकरेंसी लाने पर पर काम कर रहे हैं
- रूस और भारत रुपये-रूबल में आपसी व्यापार को बढ़ावा दे रहे हैं
- 48 वर्षों में पहली बार सऊदी अरब ने कहा है कि तेल निर्यातक देश डालर के अलावा दूसरी मुद्रा में भी व्यापार कर सकते हैं

विदेशी मुद्रा भंडार में मुद्राओं की हिस्सेदारी

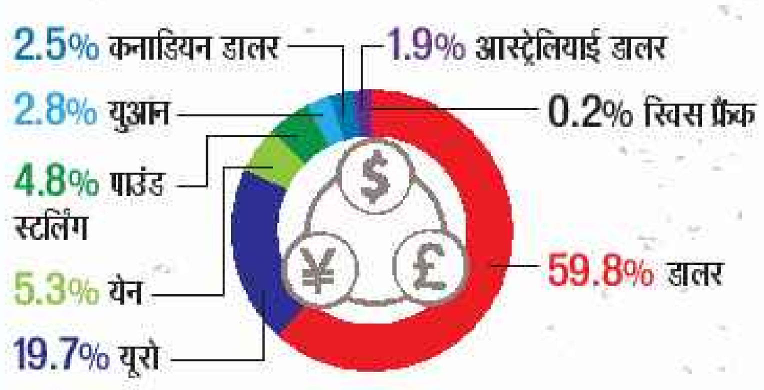

वेनेजुएला पर अमेरिका का हमला

303 अरब बैरल अनुमानित तेल के साथ दुनिया का सबसे बड़ा तेल भंडार है वेनेजुएला के पास

10 अरब डालर का कर्ज है चीन का वेनेजुएला पर

- वेनेजुएला कर्ज के बदले चीन को तेल की कर रहा था आपूर्ति
- हमले के बाद अमेरिका के नियंत्रण में आ गया है वेनेजुएला का तेल कारोबार
- अमेरिका की कंपनियां बढ़ाएंगी वेनेजुएला में तेल उत्पादन
- तेल व्यापार पर अमेरिका के नियंत्रण से डालर में सुनिश्चित होगा ट्रांजैक्शन

बहु-मुद्रा व्यवस्था की ओर जाएगी दुनिया

डा. अभिषेक श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, जेएनयू

अमेरिका की टैरिफ को भू-राजनीतिक हितों के लिए हथियार बनाने की नीतियां दुनिया को डालर से दूर जाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। कई देशों को यह लग रहा है कि अमेरिका पर निर्भरता उन्हें आर्थिक और राजनीतिक रूप से असुरक्षित बना रही है। अगर अमेरिका ने सहयोग की नीति नहीं अपनाई तो दुनिया बहु-मुद्रा व्यवस्था की ओर जा सकती है

हाल के महीनों में वैश्विक राजनीति में जो तीव्र उथल-पुथल देखने को मिल रही है, उसके केंद्र में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लिए गए कई विवादास्पद निर्णय हैं। देशों पर मनमाने ढंग से टैरिफ लगाना, अमेरिकी व्यापारिक हितों के नाम पर आर्थिक प्रतिबंध थोपना, अंतरराष्ट्रीय संधियों और बहुपक्षीय नियमों की अनदेखी करना, वेनेजुएला के खिलाफ सख्त कार्रवाई, अटलांटिक क्षेत्र में रूसी तेल टैंकरों पर सैन्य हस्तक्षेप और तेल व प्राकृतिक संसाधनों पर अमेरिकी नियंत्रण से जुड़े फैसले- ये सभी कदम किसी एक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि एक गहरे आर्थिक-राजनीतिक संघर्ष की कड़ियां हैं।

इस संघर्ष को समझने के लिए, सबसे पहले 1970 के दशक की ओर लौटना आवश्यक है। उस समय अमेरिका और सऊदी अरब के बीच एक रणनीतिक समझौता हुआ, जिसके तहत यह तय किया गया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की खरीद-फरोख्त मुख्य रूप से अमेरिकी डालर में ही होगी। इसके बदले अमेरिका सऊदी अरब और उसके सहयोगी देशों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। इस व्यवस्था को पेट्रोडालर सिस्टम कहा गया। इससे अमेरिका को अभूतपूर्व लाभ मिला। दुनिया भर के देशों को तेल खरीदने के लिए डालर की आवश्यकता पड़ने लगी, जिससे डालर की मांग स्थायी बनी रही। अमेरिका को सस्ता कर्ज मिला और वैश्विक वित्तीय प्रणाली पर उसका प्रभाव निर्णायक हो गया। धीरे-धीरे डालर केवल एक मुद्रा नहीं, बल्कि अमेरिकी शक्ति और भू-राजनीतिक प्रभाव का आधार बन गया। परंतु समय के साथ यह व्यवस्था सवालों के घेरे में आने लगी। अनेक देशों को यह महसूस होने लगा कि डालर पर अत्यधिक निर्भरता उन्हें आर्थिक और राजनीतिक रूप से असुरक्षित बना रही है। जब भी अमेरिका किसी देश पर प्रतिबंध लगाता है, वह देश वैश्विक बैंकिंग और व्यापार प्रणाली से लगभग कट जाता है। इसी पृष्ठभूमि में रूस, चीन तथा कई अन्य देशों ने आपसी व्यापार अपनी-अपनी राष्ट्रीय मुद्राओं में करने की दिशा में कदम बढ़ाए, जिसे डी-डालराइजेशन कहा जाता है। डी-डालराइजेशन की यह प्रक्रिया अमेरिका के लिए गंभीर चिंता का विषय बन गई। अमेरिका को यह डर सताने लगा कि यदि अंतरराष्ट्रीय व्यापार और तेल लेन-देन में डालर की भूमिका कमजोर हुई, तो उसकी वैश्विक शक्ति भी क्षीण हो जाएगी। इसी क्रम में वेनेजुएला का मामला सामने आता है। अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद जब इस देश ने डालर के बजाय युआन, यूरो और अन्य मुद्राओं में तेल बेचना शुरू किया, तो यह पेट्रोडालर व्यवस्था के लिए सीधी चुनौती बन गया। डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने वेनेजुएला पर राजनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक दबाव तेज कर दिया। इन कार्रवाइयों को आधिकारिक तौर पर लोकतंत्र की बहाली और अवैध गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई बताया गया, लेकिन इसके पीछे तेल और डालर से जुड़ी रणनीति स्पष्ट दिखाई देती है। अमेरिका का उद्देश्य वेनेजुएला के तेल व्यापार को फिर से डालर आधारित बाजार व्यवस्था में लाना और उसके ऊर्जा संसाधनों पर अमेरिकी कंपनियों का प्रभुत्व स्थापित करना है। यह केवल ऊर्जा सुरक्षा का सवाल नहीं, बल्कि डालर की वैश्विक बादशाहत को बनाए रखने की कोशिश है। अमेरिकी कार्रवाई का संदेश स्पष्ट है कि जो देश डालर आधारित व्यवस्था से बाहर जाकर तेल व्यापार करेगा, उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा।

इसी तरह ब्रिक्स देशों को भी यह संकेत दिया गया कि यदि वे डालर के विकल्प को बढ़ावा देंगे, तो उन्हें अमेरिका के 500 प्रतिशत टैरिफ और अन्य आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार अमेरिका ने टैरिफ को व्यापार नीति से आगे बढ़ाकर भू-राजनीतिक दबाव का हथियार बना लिया है। आज अमेरिका की इस आक्रामक रणनीति ने कई देशों को असहज कर दिया है। अनेक सरकारें इसे आर्थिक दबाव और जबरदस्ती के रूप में देख रही हैं। नतीजतन, डालर से दूरी बनाने की कोशिशें और तेज हो रही हैं। ब्रिक्स देशों के बीच सहयोग तेजी से बढ़ सकता है जिसके लिए, वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों तथा मुद्रा व्यवस्थाओं पर गंभीरता से काम हो रहा है। विडंबना यह है कि डालर को बचाने की अमेरिकी कोशिशें ही कहीं-न-कहीं डालर के खिलाफ वैश्विक माहौल को और मजबूत कर रही हैं। वेनेजुएला संकट, टैरिफ की राजनीति और डी-डालराइजेशन की बढ़ती बहस इस बात की ओर संकेत करती है कि दुनिया एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है।

आपकी आवाज

ट्रंप तानाशाही की राह पर चल रहे हैं और अपने हिटलर जैसे फैसलों से दुनिया को चिंता में डाल रहे। इसके लिए सारी दुनिया को एकजुट होना चाहिए और अमेरिका से अपने सभी व्यापारिक संबंध तब तक तोड़ लेने चाहिए जब तक यह अपनी तानाशाही नीतियों को लागू करने से बाज नहीं आते, हालांकि ऐसा करने से नुकसान भी उठाना पड़ सकता है, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि जानलेवा बीमारी से बचने के लिए कभी-कभी कड़वी दवाई भी पीनी पड़ती है।
राजेश कुमार चौहान

अमेरिकी आर्थिक ताकत के पीछे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में डालर की भूमिका बेहद अहम है। विदेशी मुद्रा भंडार और वित्तीय लेनदेन का मुख्य साधन है जिससे अमेरिका को आर्थिक और भू राजनीतिक लाभ मिलता है। इससे वह प्रतिबंधों जैसे उपकरणों का उपयोग कर पता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका गहरा प्रभाव रहता है।
मीना धानिया

आज कई देश डालर पर निर्भर नहीं रहना चाहते। इसे डी डालराइजेशन कहते हैं। अमेरिका ने लंबे समय तक डालर की ताकत से वैश्विक व्यापार और राजनीति में प्रभुत्व रखा। अब रूस, चीन और ब्रिक्स देश अपनी मुद्राओं में व्यापार करना शुरू कर रहे हैं। इससे दुनिया में अमेरिका की ताकत और आर्थिक प्रभुत्व धीरे-धीरे कम हो सकता है। डी- डालराइजेशन से दुनिया में अर्थव्यवस्था का संतुलन आएगा और विकासशील देशों को अवसर मिलेंगे। मेरी राय में यह बदलाव धीरे-धीरे होगा, लेकिन दुनिया के लिए लाभकारी साबित होगा।
ओम प्रकाश पासवान

दूसरी मुद्राओं में व्यापार बढ़ने से खत्म हो जाएगा अमेरिका का प्रभुत्व

विकास सिंह
विशेषज्ञ, समग्र आर्थिक विकास

डी- डालराइजेशन के तेज हो रहे चलन से अमेरिका चिंतित है। उसको पता है कि अगर डालर अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए प्राथमिक करेंसी नहीं रहा तो पूरी दुनिया में उसका आर्थिक प्रभुत्व खत्म हो जाएगा। इसीलिए वह दूसरे देशों को डालर में ही व्यापार करने के लिए धमका रहा है

डी डालराइजेशन की शुरुआत करीब एक दशक पहले हुई। उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का दूसरा कार्यकाल चल रहा था और चीन के साथ अमेरिका का व्यापार चीन में पक्ष में झुकना शुरू हो गया था। अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश था। इसलिए पहले किसी देश के साथ उसका व्यापार घाटा नहीं होता था। लेकिन पहली बार चीन का अमेरिका को निर्यात अमेरिका से आयात की तुलना में अधिक हो गया था। धीरे-धीरे अमेरिका का व्यापार घाटा काफी बढ़ गया।

इसको लेकर अमेरिका में चिंता शुरू हो गई कि इसका प्रबंधन कैसे करें। किसी भी देश का जब व्यापार घाटा बढ़ जाता है तो इसका प्रबंधन करने का एक ही तरीका है कि ज्यादा नोट छापे जाएं और ज्यादा नोट छापने का मतलब है कि महंगाई बढ़ जाएगी। वहीं, चीन जब दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया तो उसे लगा कि वह अमेरिका के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। ऐसे में वह अमेरिकी डालर में व्यापार क्यों करे, क्यों न अपनी करेंसी युआन को बढ़ावा दे। उसने ऐसे देशों के साथ अपनी करेंसी में व्यापार शुरू किया जिनके साथ व्यापार संतुलन उसके पक्ष में था। उसने छोटे-छोटे देशों से कहा कि आप हमारे साथ व्यापार युआन में करें। जब चीन ने ऐसा किया तो अमेरिका में इसको लेकर चिंता बढ़ गई। उनको लगा कि एक समय ऐसा आएगा जब युआन, डालर को चुनौती देने की स्थिति में आ जाएगा और अमेरिका का प्रभुत्व खतरे में पड़ जाएगा। इसके जवाब में अमेरिका ने अपने व्यापारिक सहयोगियों से कहा कि आपको डालर में ही व्यापार करना है, आप किसी और करेंसी में डील नहीं कर सकते हैं। इसके साथ अमेरिका ने डालर की कीमतों को स्थिर कर दिया। ऐसा अमेरिका ने इसलिए किया क्योंकि युआन एक नियंत्रित मुद्रा है। इसका रेट चीन की कम्युनिस्ट पार्टी तय करती है। वहीं, अमेरिका का डालर या भारत के रुपये का रेट बाजार में मांग और आपूर्ति के हिसाब से तय होता है। उस समय अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के प्रमुख ने डी-डालराइजेशन के खिलाफ आवाज उठाई। उनका कहना था कि अगर डालर अंतरराष्ट्रीय कारोबार की प्राथमिक मुद्रा नहीं रही तो अमेरिका का आर्थिक प्रभुत्व भी खत्म हो जाएगा।

इसके बाद जब यूक्रेन युद्ध शुरू हुआ और अमेरिका ने रूस पर प्रतिबंध लगाए तो रूस भी दूसरे देशों से कहने लगा कि आप हमारे साथ रूबल में व्यापार कीजिए। इसकी वजह से अमेरिका को जहां सिर्फ डी-डालराइजेशन को लेकर चीन से शिकायत थी अब उनको रूस से भी शिकायत है। हाल में भारत ने एक चतुराई भरा काम किया है। भारत रुपये को डालर और युआन के बराबर तो कर नहीं सकता लेकिन हमारे यहां यूपीआइ बहुत अच्छा चल रहा है तो भारत ने कई देशों को प्रस्ताव दिया है कि आप हमारे यूपीआइ के साथ जुड़ जाइये। सिंगापुर इस नेटवर्क में आ चुका है। मलेशिया के आने के संभावना है और थाईलैंड आ चुका है। अगर आप थाईलैंड जाते हैं तो आप यूपीआइ के जरिये पेमेंट कर सकते हैं। यह भी डीडालराइजेशन का एक रूप है। अमेरिका की मौजूदा नीतियों से डी- डालराइजेशन का चलन और तेज होगा।

यमुना की मासिक रिपोर्ट दो माह बाद जारी, बिगड़ी हुई है स्थिति

- **डीपीसीसी ने नवंबर व दिसंबर की जारी की रिपोर्ट**
- **पिछले साल के इन्हीं महीनों की तुलना में बेहतर हुई नदी की सेहत**
- **हालांकि रिपोर्ट को लेकर विशेषज्ञों ने उठाए हैं कुछ सवाल**

राज्य ब्यूरो, जागरण • नई दिल्ली: दो माह से भी अधिक समय बीतने के बाद दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने यमुना के लिए नवंबर व दिसंबर की मासिक रिपोर्ट जारी की है। हालांकि इसमें दिखाया गया है कि पिछले साल के उन्हीं महीनों की तुलना में नदी की सेहत बेहतर हुई है। लेकिन, निगरानी के ताजा नतीजों में कुछ विसंगतियां भी हैं, जो विशेषज्ञों के अनुसार ''तर्कसंगत नहीं'' लगती और सवाल खड़े करती हैं।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले दो महीनों में हालात बिगड़े हैं। नजफगढ़ नाला मिलने के ठीक बाद आइएसबीटी ब्रिज पर फीकल कोलीफार्म का स्तर, जो बिना शोधित सीवेज को दर्शाता है। अक्टूबर में छठ पूजा के दौरान 8,000 यूनिट था, नवंबर में बढ़कर 20,000 और दिसंबर में 92,000 एमपीएन प्रति 100 मिली तक पहुंच गया। जबकि सुरक्षित सीमा 2,500 और वांछित सीमा 500 एमपीएन प्रति 100 मिली तक है। बायोकैमिकल आक्सीजन डिमांड (बीओडी), जो पहले 25 मिलीग्राम प्रति लीटर थी, नवंबर में बढ़कर 33 मिग्रा प्रति लीटर व दिसंबर में फिर से 25 मिग्रा प्रति लीटर पर आ गई। यह अभी भी तीन मिग्रा प्रति लीटर की सुरक्षित सीमा से आठ गुना अधिक है।

बीते वर्ष अक्टूबर में छठ पर्व के दौरान ऊपरी बैराज से अतिरिक्त पानी छोड़कर नदी को साफ किया गया था। 21 से 25 अक्टूबर के बीच ताजा पानी नीचे की ओर भेजने और प्रदूषण को कम करने के लिए जानबूझकर 6,68,000 क्यूसेक से अधिक पानी यमुना में छोड़ा गया। एक समय पर, बैराज से नदी में 225 क्यूमेक (7,990 क्यूसेक) पानी छोड़ा गया, जबकि पूर्वी और पश्चिमी यमुना नहरों में केवल 53 क्यूमेक पानी ही मोड़ा गया। इससे नदी में बहाव बढ़ा, वह साफ हुई, बीओडी और डीओ के स्तर में सुधार हुआ।

रिपोर्ट पर उठते सवाल: रविवार 11 जनवरी 2026 को डीपीसीसी की वेबसाइट पर जारी रिपोर्ट कुछ संदेह पैदा करती है। विशेषज्ञों का कहना है कि अक्टूबर में जब नदी का बहाव अच्छा था और झाग नहीं था, तब ओखला बैराज जैसे कुछ इलाकों में बीओडी 20 मिलीग्राम/लीटर था। लेकिन, नवंबर और दिसंबर में बहाव कम होने से झाग और दुर्गंध लौट आई थी, तब उसी स्थान पर बीओडी सुधरकर 14 और 17 मिलीग्राम/लीटर दिखाया गया है। इसके अलावा कुछ नालों और उनके मिलने वाले बिंदुओं की गुणवत्ता के आंकड़े भी मेल नहीं खाते।

यमुना में प्रदूषण को लेकर ऐसी रही है स्थिति

	नवंबर 2025			नवंबर 2024		
स्थान	डीओ	फीकल कोलीफार्म	बीओडी	डीओ	फीकल कोलीफार्म	बीओडी
पल्ला	8.5	1100	3	6.1	1100	3
आइएसबीटी ब्रिज	शून्य	20,000	24	शून्य	4,90,000	47
ओखला बैराज	2.3	4,600	14	शून्य	70,00,000	37
असगरपुर	शून्य	24,000	33	शून्य	79,00,000	54
	दिसंबर 2025			दिसंबर 2024		
पल्ला	8	1300	1.5	4	1200	4
आइएसबीटी ब्रिज	0.3	92,000	24	शून्य	6,40,000	51
ओखला बैराज	2.7	28,000	17	शून्य	3,30,000	37
असगरपुर	0.8	54,000	20	शून्य	84,00,000	70

जल गुणवत्ता के ये हैं मानक

- **डिजाल्व्ड आक्सीजन (डीओ):** पानी में मौजूद ऑक्सीजन की मात्रा। यदि यह तय सीमा से कम हो जाए, तो जलीय जीवन के लिए हानिकारक होता है। (मानक : प्रति लीटर पांच मिलीग्राम तक)
- **बायोकेमिकल आक्सीजन डिमांड (बीओडी):** अधिक बीओडी का मतलब है कि पानी में प्रदूषण ज्यादा है और ऑक्सीजन की कमी है। (मानक : प्रति लीटर तीन मिलीग्राम से कम होना चाहिए)
- **फीकल कोलीफार्म:** यह मुख्य रूप से बिना शोधित सीवेज के कारण होता है। (वांछित सीमा : प्रति 100 मिलीलीटर में 500 एमपीएन। अधिकतम सीमा : प्रति 100 मिलीलीटर में 2500 एमपीएन)

जड़ों से जुड़े लोग अपनी भाषा में ही करते हैं बात : बिरला

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली; तीन दिन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन के समापन पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि भाषा मात्र संवाद का साधन नहीं बल्कि हमारी आत्मा और संस्कृति की संवाहक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो लोग अपनी मिट्टी और जड़ों से जुड़े होते हैं, वह अपनी भाषा में बात करने में गर्व महसूस करते हैं।

ओम बिरला

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आइजीएनसीए) में आयोजित तीन दिवसीय तृतीय अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि आगामी बजट सत्र में उनका प्रयास रहेगा कि सभी सांसद संसद में अपनी ही भाषा में बात करें। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वैश्विक मंचों पर भारतीय भाषा में ही अपनी बात रखते हैं, जो हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है। हमारा प्रयास है कि वैश्विक मंचों पर भारतीय भाषाओं का विस्तार हो।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित दिल्ली विस अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि भारत में भाषाई विविधता कभी विभाजन का कारण नहीं बनी, बल्कि यह सदैव संवाद का माध्यम रही है। हमारी भाषाएं समुदायों, आस्थाओं और ज्ञान परंपराओं के परस्पर संवाद से विकसित हुई हैं। सत्र की अध्यक्षता पद्म भूषण राम बहादुर राय ने की। इस दौरान शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के ए. विनोद, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के श्याम परांडे और सम्मेलन निदेशक अनिल जोशी उपस्थित रहे।

स्वामी विवेकानंद ने अंग्रेजी, बांग्ला और संस्कृत में बहुत-सी कविताओं की सर्जना की थी, जिनमें आध्यात्मिक चिंतन, राष्ट्रबोध और जीवनदर्शन की अनुभूतियां दिखाई देती हैं। उनकी कविताओं का हिंदी में काव्यात्मक अनुवाद छायावाद के दो प्रमुख कवियों सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत ने किया था। आज स्वामी जी की जन्मजयंती पर उनके कवि रूप पर आलेख...

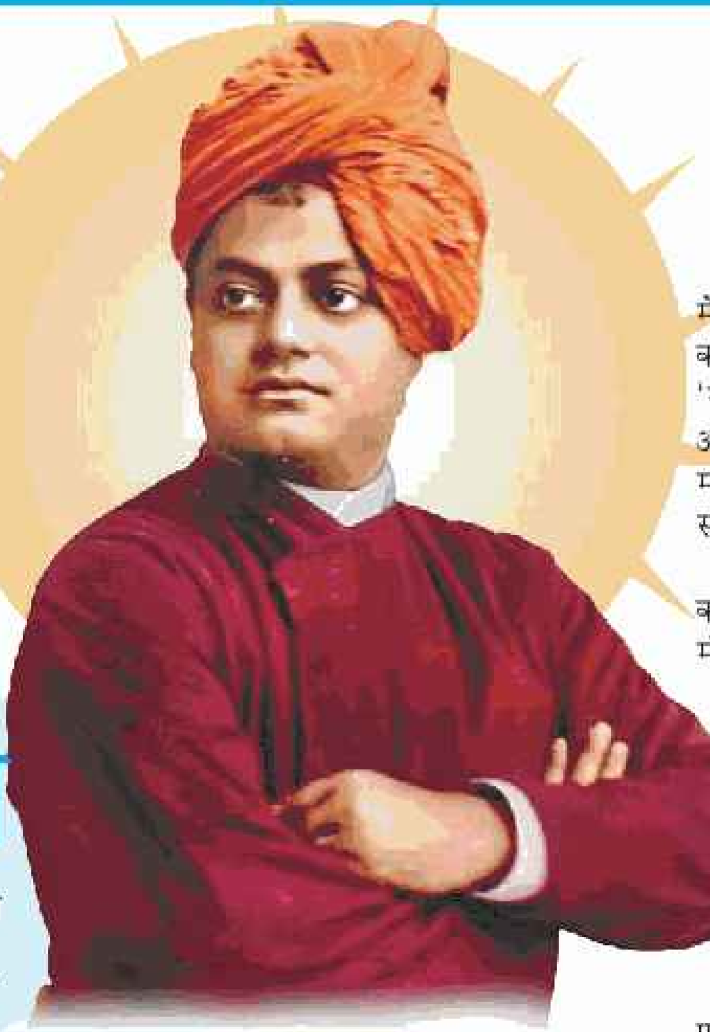

स्वामी विवेकानंद का विलक्षण कवित्व

सत्साहित्य

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

महान दार्शनिक, संन्यासी व विश्व में हिंदू धर्म के प्रचारक स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक कार्यों, व्याख्यानों व गद्य लेखन के बारे में सभी जानते हैं, लेकिन कम लोग जानते हैं कि उन्होंने कविताएं भी लिखी थीं। उनकी कविताओं में भी वेदांत-दर्शन, राष्ट्रचेतना, आत्मबल, मानवता और आध्यात्मिक उन्नयन की सशक्त अभिव्यक्तियां हैं। उनका काव्य आध्यात्मिक परमानंद और रहस्यवादी अनुभूतियों का प्रवाह है, जहां विचार, भाव और अनुभूति एकाकार हो जाते हैं। उनकी अधिकतर कविताएं अंग्रेजी में हैं, जो उनके अनुयायियों के नाम लिखे पत्रों का अंग हैं। कुछ कविताएं बांग्ला और संस्कृत में भी हैं। स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित भक्ति गीत (भजन) श्रीरामकृष्ण मठों में भक्ति भाव से गाए जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित कविताओं का एक प्रमुख काव्य-संग्रह है 'विवेक लहरी', जो रामकृष्ण मठ द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस संग्रह में अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला की हिंदी में अनूदित कविताएं हैं। इनका काव्यानुवाद हिंदी के महान कविद्वय सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा सुमित्रानंदन पंत ने किया था। स्वामी जी अंग्रेजी और बांग्ला के साथ संस्कृत के भी विद्वान थे। अतः उन्होंने संस्कृत में न सिर्फ 'आमंत्रणम्', 'शिवस्तोत्रम्', 'अंबास्तोत्रम्', 'श्रीरामकृष्ण प्रणामः' और 'श्रीरामकृष्ण-स्तोत्राणि' आदि काव्य-रचनाओं की सर्जना की, बल्कि संस्कृत के ग्रंथों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी किया था।

स्वामी जी की एक कविता का अनुवाद चुनौती के रूप में रामविलास शर्मा ने भी किया था। 'साहित्य अमृत' पत्रिका के फरवरी, 2017 अंक में प्रकाश मनु लिखते हैं कि उन्होंने रामविलास शर्मा से यह किस्सा सुना था। हुआ यह कि निराला जी ने स्वामी विवेकानंद के अद्वैत वेदांत से प्रभावित होकर उनकी कविताओं के अनुवाद का बीड़ा उठा लिया। निराला जो अनुवाद करते, उसे रामविलास जी को सुनाते थे। विवेकानंद की एक कविता में वे अटक गए, उन्होंने रामविलास जी से कहा- इस कविता में सूक्ष्म आध्यात्मिक अनुभूतियों की इतनी जटिलता है कि इसका हिंदी में अनुवाद संभव ही नहीं लगता। रामविलास जी ने इसे चुनौती के रूप में लिया और कविता का अनुवाद कर निराला जी को सुनाया, तो निराला जी ने उन्मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा की।

विवेकानंद की कविता 'संन्यासी का गीत' में उनका व्यक्तित्व और चिंतन दृष्टिगत होता है। यह कविता उन्होंने न्यूयार्क के थाउजेंड आइलैंड पार्क में जुलाई, 1895 में रची थी, जहां स्वामी जी अमेरिका प्रवास में कुछ दिन रुके थे। यह लंबी कविता ब्रह्मवादिन पत्रिका के अंक-2 में सितंबर, 1895 को प्रथमतः प्रकाशित हुई थी। सुमित्रानंदन पंत द्वारा अनूदित कविता का एक छंद प्रस्तुत है :

छेड़ो हे वह गान, अनंतोद्भव अबंध वह गान,
विश्व-ताप से शून्य, गह्वरों में गिरि के अम्लान,
निभृतअरण्य प्रदेशों में जिसका शुचि जन्मस्थान,
जिनकी शांति न कनक, काम, यश, लिप्सा का निःश्वास,
भंग कर सका, जहां प्रवाहित सत् चित् का अविलास,
स्रोतस्विनी, उमड़ता जिसमें वह आनंद अयास
गाओ, बढ़ वह गान, वीर संन्यासी, गूंजे व्योम।
ओम् तत्सत् ओम्!

यह कविता विवेकानंद के जीवन-दर्शन का घोषणा-पत्र है। इसमें त्याग, निर्भीकता और आत्मस्वरूप की पहचान का उद्घोष है। इस कविता में संन्यासी को निर्भय होकर संसार के बंधनों से मुक्त होने और आत्मसत्ता की अनुभूति करने का आह्वान है।

'स्वदेशी का गान' कविता आध्यात्मिक आनंद और अद्वैत वेदांत की भूमिका को भी स्पष्ट करती है, जो आत्मा के अविनाशी होने का घोष है-

पृथ्वी शशि रवि से पहले
धूमकेतु-नक्षत्रों से भी पहले
कालोत्पत्ति के अत्यंत पहले मैं था
अब मैं हूं, आगे भी रहूं।

'समाप्त मेरी कहानी' शीर्षक कविता में स्वामी विवेकानंद ने मानव जीवन की नश्वरता और उसके अनुभवों को स्पष्ट कर मायावाद (आदि शंकराचार्य का अद्वैतवाद का सिद्धांत) का समर्थन किया है।

विवेकानंद की कविता 'काली द मदर' का अनुवाद सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने किया था। उस कविता की अनूदित पंक्तियां इस प्रकार हैं -

आधि-व्याधि बिखेरती
ऐ नाचती पागल हुलसकर
आ, जननि, आ जननि, आ, आ!
नाम है आतंक तेरा, मृत्यु तेरे श्वास में है,
चरण उठकर सर्वदा को
विश्व एक मिटा रहा है,
समय तू है, सर्वनाशिनि,
आ, जननि, आ जननि, आ, आ!

'शांति' कविता में उन्होंने निर्जन में साधना की मनःस्थिति का चित्रण अत्यंत भावप्रवणता से किया है। इसी प्रकार 'जाग्रत भारत', 'अज्ञात देवदूत', 'जाग्रत देवता', 'ओ स्वर्गीय स्वप्न', 'मेरा खेल खत्म हुआ', 'प्रबुद्ध भारत', 'प्याला', 'चौथी जुलाई के प्रति', 'मंगलाशीष', 'किसे दोष दूं' इत्यादि भावपूर्ण कविताएं स्वामी विवेकानंद के विलक्षण कवित्व का प्रमाण हैं।

स्वामी जी की बांग्ला में लिखी कविताओं में 'सखार प्रति' (मित्र के प्रति) लंबी कविता का एक अंश भावानुवाद रूप मे प्रस्तुत है -

गूंज रहा रव घोर स्वार्थ का,
कहां शांति का शुचि आकार।
कहां नरक प्रत्यक्ष स्वर्ग है-
कौन छोड़ सकता संसार?
कर्मपाश से बंधा गला-
वह क्रीत दास जाए किस ओर?
सोचा, समझा है मैंने पर,
एक उपाय न देखा और।

'प्रलय वा गंभीर समाधि' नामक बांग्ला कविता में स्वामी जी ने ध्यान की क्रमशः चार अवस्थाओं का वर्णन किया है। 'गाई गीत शुनाते तोमाय', 'नाचुक ताहते श्यामा', 'सृष्टि', 'सागर वक्षे' आदि बांग्ला कविताओं में जगत का नयनाभिराम माधुर्य, कोमलता, प्रवणता, पुरुष एवं प्रकृति के समन्वय का सजीव चित्रण दृष्टव्य है।

स्वामी विवेकानंद ने संस्कृत में भी उत्कृष्ट कविताएं रची हैं। यह 'प्रणाम मंत्र' स्वामी जी ने मौखिक ही रचा था -

स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्म स्वरूपिणे।
अवतार वरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः।।

(धर्म के प्रतिष्ठाता एवं सकल धर्मस्वरूप, सब अवतारों में श्रेष्ठ, हे रामकृष्ण, तुम्हें प्रणाम है।)

स्वामी जी द्वारा रचित तीन स्तोत्र एवं 'श्रीरामकृष्ण प्रशस्तिः' अत्यंत उद्बोधक हैं। अपने गुरुदेव श्रीरामकृष्ण परमहंस की वंदना के दो श्लोकों का यहां उल्लेख करना समीचीन होगा :

यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च।
रामकृष्ण सदा वंदे सर्वस्वतंमीश्वरम्।।

(जिनकी शक्ति से हम सभी तथा समस्त लोक कृतार्थ हैं, उन शिवस्वरूप, स्वाधीन ईश्वर श्रीरामकृष्ण की मैं सर्वदा वंदना करता हूं।)

कूर्मास्तारकचर्वणम् त्रिभुवनमुत्पाट्यामो वलात्।
किं भो न विजानास्यस्मान्, रामकृष्णदासा वयम्।।

(हम तारों को चबा डालेंगे, त्रिभुवन को बलपूर्वक उखाड़ देंगे। क्या हमें जानते नहीं? हम रामकृष्ण के दास हैं।)

स्वामी जी ने आदि शंकराचार्य के 'निर्वाणषट्कम् स्तोत्र का आंशिक अनुवाद संस्कृत से अंग्रेजी में 'सिक्स स्टैंजाज आन निर्वाण' नामक कविता में किया था, जिसका पद्यानुवाद छायावाद के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने किया। ऐसे ही स्वामी विवेकानंद ने संस्कृत ग्रंथ 'नासदीय सूक्त (ऋग्वेद 10. 129.1-7)' का अंग्रेजी में अनुवाद कविता के रूप में किया था, इसका भी हिंदी में भावानुवाद सुमित्रानंदन पंत ने ही किया।

gsvaish51@gmail.com

गीत

गिरीश पंकज
रायपुर, छत्तीसगढ़

आया है नूतन वर्ष

नव संकल्पों की गठरी लेकर आया है नूतन वर्ष।
जो पीछे रह गए सभी का, करना है सुंदर उत्कर्ष।।

दुर्घटनाएं पास न फटकें, हर जीवन खुशहाल रहे।
सबके हिस्से रोजाना ही सब्जी-रोटी-दाल रहे।
प्रेमभाव से रहे जगत यह, कहीं न हो कोई संघर्ष।।

सीमाओं पर अम्न रहे, जो शत्रु उन्हें सदबुद्धि मिले।
कब तक हों कटुताजीवी, निर्मल मन को शुद्धि मिले।
हिंसा से हो मुक्त विश्व यह, चौतरफा फैला हो हर्ष।।

सभी राष्ट्रहित की ही सोचें, ऐसा देश बनाएं हम।
पीछे नहीं देखना है अब, आगे बढ़ते जाएं हम।
नित्य नई उपलब्धि मिले, सब करें शिखर का ही स्पर्श।।
नव संकल्पों की गठरी लेकर आया है नूतन वर्ष।

girishpankaj1@gmail.com

पुस्तक परिचय

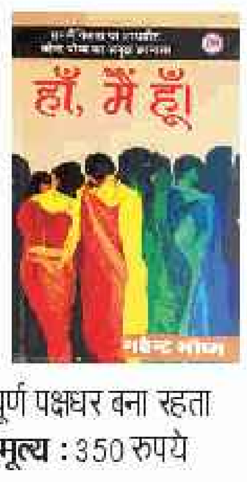

समलैंगिकता पर उपन्यास

समलैंगिकता पर आधारित महेन्द्र भीष्म का उपन्यास हां, मैं हूं अपने प्रयोगधर्मी शिल्प की नव्यता के साथ तथ्यों से भी अवगत कराता है। वंचितों के पक्ष में बात करते हुए भी यह उपन्यास भारतीय संस्कृति का पूर्ण पक्षधर बना रहता है। **प्रकाशक :** अद्विक पब्लिकेशन, **मूल्य :** 350 रुपये

पुस्तक मिली

तेरे इश्क में पड़ जाऊंगा
कविता संग्रह
लेखक : बादल शर्मा
प्रकाशक : मंजुल कथाकार
मूल्य : 199 रुपये

साहित्य में वैचारिक पहल

भावांजलि
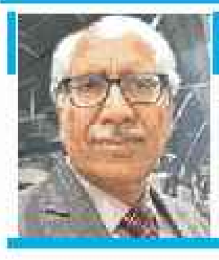
डा.ओम निश्चल
नईदिल्ली

ज्ञानरंजन ने न सिर्फ अपनी कहानियों व अन्य गद्य रचनाओं से, बल्कि पहल पत्रिका के माध्यम से साहित्य में हस्तक्षेप किया। गत सात जनवरी को वह संसार में नहीं रहे, किंतु साहित्य में उनकी पहल की अनुगूंज सदा रहेगी...

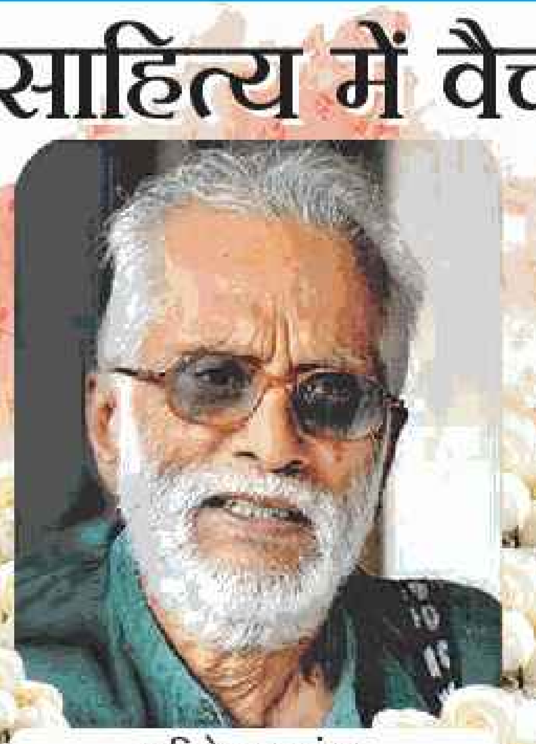
स्मृतिशेष : ज्ञानरंजन
(21 नवंबर, 1936 – 7 जनवरी, 2026)

लगभग सात दशकों तक साहित्य को सक्रिय रखने वाले और 'पहल' पत्रिका के माध्यम से स्तरीय लेखन की मुहिम चलाने वाले कथाकार-संपादक ज्ञानरंजन अब नहीं रहे। उनका जाना साठोत्तरी कहानी के उन्नायक और एक ऐसे संपादक का अवसान है, जिसने किसी भी तरह का समझौता नहीं किया। 'पहल' में छपना लेखक होने की गारंटी हुआ करता था।

उनका पानीदार गद्य अपने आप में एक मिसाल है, जिसकी धमक उनकी पुस्तक 'कबाड़खाना' के संस्मरणों-रिपोर्ताजों और 'पहल' के संपादकीयों में सुनी जा सकती है। 'बहिर्गमन', 'घंटा', 'पिता' और 'फेंस के इधर और उधर' जैसी उनकी कहानियों को अनूठे शिल्प के लिए याद किया जाता है। 'अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा' जैसे उनके संस्मरणों से गुजरते हुए इलाहाबाद के प्रतिबिंब आंखों में समा जाते हैं, जिसे बाद में ममता कालिया ने 'कितने शहरों मे कितनी बार' में पुनः रचने की कोशिश की है।

अकोला, महाराष्ट्र मे जन्मे ज्ञानरंजन इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा के बाद जीएस कालेज, जबलपुर में हिंदी के अध्यापक हुए और 1996 में सेवानिवृत्त हुए। वे गांधीवादी लेखक रामनाथ सुमन के पुत्र थे, किंतु विचारों के स्तर पर उनकी गांधीवादियों से सुनिश्चित दूरी बनी रही।

ज्ञानरंजन ने गिनी-चुनी कहानियां लिखकर विराम दे दिया, फिर 'पहल' का संपादन संभाला। 'पहल' के कारण जबलपुर एक साहित्यिक केंद्र बन गया। ज्ञानरंजन ने पहल सम्मान भी स्थापित किया, जिससे अनेक स्थापित लेखकों को सम्मानित किया गया।

ज्ञानरंजन मध्यप्रदेश में प्रगतिशील लेखक संघ के लंबे समय तक महासचिव रहे। वह सादगी पसंद इंसान थे। दोटूक बात कहते थे और विचारों में दृढ़ थे। जीवन भर अशोक वाजपेयी जैसे कलावादियों से उनकी नहीं बनी। एक संकुचित दृष्टि उनमें छंद को लेकर भी थी। बहुत दिनों तक उन्होंने पहल में गीतों-गजलों को प्रतिबंधित रखा। बाद में आश्वस्त होने पर उन्होंने गजलें छापीं, किंतु गीत से उनका नाता नहीं बन सका। हालांकि उन पर बनी एक फिल्म में जब उनकी प्रिय कविताएं सुनने का आग्रह किया गया तो वे ठाकुरप्रसाद सिंह के 'वंशी और मादल' के दो गीत गुनगुनाते दिखे। आज ज्ञानरंजन नहीं हैं, किंतु उनकी कहानियों का तेवर भुलाया नहीं जा सकता। ज्ञानरंजन की कहानियां अपने कथ्य, शिल्प और बुनावट की दृष्टि से चुनौती की तरह खड़ी मिलेंगी। उन्हें खोकर हमने साहित्य की एक और विभूति खो दी है।

dromnishchal@gmail.com

भारत की आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक संतूर

संगीतायन

दिव्यांश हर्षित श्रीवास्तव
दिल्ली

संतूर शैव व सूफी परंपरा का वाद्य है, जिसे शिवकुमार शर्मा ने शास्त्रीय और फिल्म संगीत में प्रतिष्ठा दिलाई। उनकी जन्मजयंती (13 जनवरी) पर जानें इस वाद्य के बारे में...

संतूर भारतीय संगीत परंपरा का प्राचीन तंतु-वाद्ययंत्र है। इसका प्राचीन नाम शततंत्री वीणा है, क्योंकि इसमें सौ तार होते हैं। नीलमत पुराण में इसका उल्लेख है।

संतूर एक समलंब चतुर्भुज आकार का वाद्ययंत्र है। इसमें लगे सौ तार लकड़ी के खोखले साउंड-बाक्स पर समूहों में तने होते हैं। इन तारों को लकड़ी की पतली छड़ियों से बजाया जाता है, जिन्हें 'कलम' कहते हैं। इन कलमों से उत्पन्न ध्वनि अनुनादी, गूंजदार और भावप्रवण होती है। प्राचीन काल में संतूर मुख्यतः शैव परंपरा से जुड़ा हुआ था। शिव के उपासक इस वाद्य का उपयोग पूजा, भजन, ध्यान में आध्यात्मिक वातावरण की सृष्टि के लिए करते थे। संतूर की तरंगित ध्वनि साधना के लिए उपयुक्त मानी जाती थी, जो मन और चेतना को एकाग्र करने में सहायक मानी गई। संतूर की आध्यात्मिक प्रकृति को सूफी संतों ने भी आत्मसात किया। यह वाद्य सूफियाना संगीत का प्रमुख माध्यम बना। यह वाद्य भारत के कश्मीर की उपज है, जो अफगानिस्तान होते हुए ईरान भी पहुंचा। वहां इसे विकसित किया गया, किंतु इसका मूल स्वरूप भारतीय ही रहा।

शास्त्रीय संगीत में संतूर का प्रवेश मात्र 60 वर्ष पुराना है। इसके शास्त्रीय वादन में पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित भजन सोपोरी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। जम्मू निवासी पंडित शिवकुमार शर्मा ने संतूर को शास्त्रीय मंचों पर प्रतिष्ठा दिलाई तथा फिल्म संगीत के माध्यम से इसे व्यापकता दी। सिलसिला, लम्हे, चांदनी आदि कुछ फिल्मों में बतौर संगीतकार संतूर का सुंदर उपयोग किया। वहीं सोपोरी सूफियाना घराने के पंडित शंभूनाथ सोपोरी जी ने संतूर में कुछ बदलाव किए। उनके पुत्र भजन सोपोरी ने इसमें शैलीगत परिवर्तन कर इसे गायकी अंग के अनुकूल बनाया। उनके द्वारा विकसित शैली को 'सोपोरीबाज' के नाम से जाना जाता है। आज पं. सतीश व्यास, पं. तरुण भट्टाचार्य, पं. अभय रुस्तम सोपोरी जैसे कलाकार संतूर की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

संगीत के सुधी श्रोतागण आज यूट्यूब के माध्यम से पं. शिव कुमार शर्मा के काल आफ द वैली, मार्निंग टू मिड नाइट राग और पं. भजन सोपोरी जी के संगीत सरताज, नादयोग आन संतूर, अर्बन ग्रूव्स आदि एल्बमों को सुन सकते हैं। वस्तुतः संतूर मात्र वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है, जिसकी यात्रा शततंत्री वीणा से लेकर शास्त्रीय संगीत मंचों तक निरंतर विकसित होती रही है।

divyanshsrivastava2@gmail.com

मनोरंजन

टीम समीर

मेरी जिंदगी में ड्रामा नहीं मिलेगा : समीर सोनी

सात सवाल

फिल्म, टीवी, थिएटर से लेकर अब डिजिटल प्लेटफार्म तक अभिनेता समीर सोनी ने हर दौर को करीब से जिया है। अलग-अलग तरह के किरदार निभाकर उन्होंने खुद को बार-बार साबित किया है। हाल ही में वेब सीरीज 'छुपा रुस्तम बिलेनियर' में नजर आए समीर का मानना है कि कलाकार के लिए सबसे जरूरी है अपनी मौलिकता को बनाए रखना। उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश :

● अब डिजिटल का दौर है। पहले के दौर और अब के दौर में किसे ज्यादा कठिन पाते हैं?

-हर माध्यम के अपने चैलेंज होते हैं। अपनी अच्छाई-बुराई होती है। आपको उसके साथ सामंजस्य बनाना होता है। पहले फिल्मों का दौर था, तब कहा जाता था कि टीवी कौन करता है। फिर अमिताभ बच्चन, शाह रुख खान, सलमान जैसे बड़े सितारे टीवी पर आए। अब ओटीटी का दौर है। हर दौर अच्छा है, बस आपको खुद को उसके अनुसार ढालना होता है।

● क्या यह कहना सही होगा कि इंडस्ट्री से आपको आपकी योग्यता के अनुसार सम्मान नहीं मिला?

-(मुस्कुराते हुए) वो दौर अब पीछे छूट चुका है। मैंने उसे कब का स्वीकार कर लिया। कहते हैं कि किसी को वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा नहीं मिलता है। मेरी किस्मत में जितना लिखा था उतना मिला। मैं अपने काम का लुत्फ लेता हूं।

● कलाकार की छवि काम से बनी होती है। ऐसे में उसकी वास्तविक चीजें सामने आना कितना जरूरी मानते हैं?

-मेरी पहली फिल्म साल 1988 में आई थी। उस समय अभिनेता राजेश खन्ना का करियर ढलान पर था। मैंने ईश्वर से कहा था कि मुझे इतना ऊंचा मत उठाना कि नीचे गिरने पर बहुत दर्द हो। मैं इसके लिए हमेशा सजग रहा। जब मैं बाजार जाता हूं तो आम लोगों की तरह ही खरीददारी करता हूं, लेकिन जब एक्टिंग कर रहा होता हूं तो कोई दूसरा इंसान होता हूं। अगर वास्तविक जीवन में भी मैं एक्टिंग करता रहूं, तो आदमी पागल हो जाएगा। मेरे लिए जरूरी है कि आप जैसे हैं वैसे रहें।

● लेकिन आपने रियलिटी शो बिग बास भी किया था?

-बिग बास करने से पहले ही तीन साल से शो का आफर आ रहा था। तब मैंने मना कर दिया था। मुझे लगा कि लोग पता नहीं क्या कहेंगे। आखिर में सोचा कि खुद पर भरोसा होना चाहिए। आपको मेरी जिंदगी में ड्रामा नहीं मिलेगा।

● आप किन मामलों में छुपे रुस्तम हैं?

मैंने कहीं सुना था कि अगर कोई चुप है तो इसका यह मतलब नहीं है कि वो आपसे सहमत है। अगर मुझे कुछ गलत लगता है तो उसे थोड़ा सा सही करुंगा। उसके बाद मुझे समझ आ जाएगा कि मैं समय बर्बाद कर रहा हूं। उस इंसान का जो मानना है, वो वही है। तो मैं उससे सहमति जता दूंगा। हालांकि, दिमाग में चल रहा है कि कैसे समझाऊं कि बकवास कर रहा है। (हंसते हैं)

जिन्होंने कभी एक्टिंग नहीं की है, 12 घंटे सेट पर नहीं बिताए हैं, उन्हें नहीं पता कि काम खत्म होने के बाद कलाकार की मानसिक अवस्था क्या होती है। घर आने पर आपको एक-दो घंटा तो सामान्य होने में लगता है। आपको निजी क्षण मिलते हैं वो आपको रिचार्ज करते हैं।

● बीच में आपने फिल्में देखना बंद कर दिया था। जबकि अपनी कला को निखारने के लिए कलाकार दूसरों का काम भी देखते हैं...

-देखिए यह दोधारी तलवार है। यह आपको सीखा भी सकता है और प्रभावित भी कर सकता है। पहले चार-पांच साल मैंने हिंदी फिल्में नहीं देखी थीं। अभी भी मैं ज्यादा फिल्में नहीं देखता हूं। इसकी वजह यह थी साल 2000 के आसपास हर कोई अमिताभ बच्चन बनना चाहता था। एक लेखक ने मुझसे कहा था कि सर मैंने आपके लिए एक ऐसा सीन लिखा है जैसे फिल्म शराबी में बच्चन साहब करते हैं, मैंने सर पकड़ लिया। मैंने कहा कि मेरा एकमात्र लक्ष्य रहा है कि किसी की नकल न करूं।

● आपकी पत्नी और अभिनेत्री नीलम की किन खूबियों के बारे में बाद में पता चला?

-ईमानदारी से कहूं तो उन्हें देखकर मैं फिसल गया था। मुझे उनसे सुंदर लड़की नहीं मिल सकती थी। वह जिस गरिमा से खुद को पेश करती हैं वो मुझे पसंद है। वह कहीं भी रहे, उन्हें चिंता रहती है कि घर में खाना क्या बनेगा। **(स्मिता श्रीवास्तव)**

द राजा साब से मालविका ने किया तेलुगु में पदार्पण ● इंटरनेट मीडिया

रंग नहीं जमा पाई द राजा साब

साहो, राधे श्याम और आदिपुरुष के बाद पैन इंडिया स्टार कहे जाने वाले प्रभास का जादू हिंदी पट्टी में फिर नहीं चला। 2024 की हिट फिल्म कल्कि 2898 एडी के बाद उनकी नई फिल्म द राजा साब शुक्रवार को तेलुगु के साथ हिंदी, तमिल, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज हुई। फिल्म को तेलुगु में ठीक-ठाक, लेकिन अन्य भाषाओं में कमजोर प्रतिक्रिया मिली। रिलीज से एक दिन पहले तेलुगु में रखे गए स्पेशल प्रीव्यू से 9.15 करोड़ रुपये मिले। शुक्रवार को तेलुगु में फिल्म ने 47 करोड़ और हिंदी में सिर्फ छह करोड़ की ओपनिंग ली। शनिवार को कमाई में भारी गिरावट आई। तेलुगु में 20.65 करोड़ और हिंदी में 5.1 करोड़ का कारोबार हुआ। इस तरह दो दिनों में फिल्म ने तेलुगु में 76.8 करोड़ और हिंदी में 11.1 करोड़ कमाए। सभी भाषाओं को मिलाकर घरेलू कलेक्शन 88.9 करोड़ रुपये रहा। वहीं, दूसरी ओर फिल्म धुरंधर ने नया रिकार्ड बनाते हुए शनिवार तक घरेलू बाक्स आफिस पर 850.55 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है।

मनोरंजन से जुड़ी अन्य खबरों के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

आज का भविष्यफल- 12 जनवरी, 2026 सोमवार

पं. के.ए. दुबे पद्मेश

आज की ग्रह स्थिति
माघ मास कृष्ण पक्ष नवमी का राशिफल।
आज का राहुकाल : प्रातः 07 बजकर 30 मिनट से 09 बजे तक। दिशाशूल : पूर्व
आज की भद्रा : रात्रि 2.02 बजे से 13 जनवरी को दोपहर 3.18 बजे तक।
विशेष : शुक्र मकर राशि में और मकर के नवमांश में।

कल 13 जनवरी, 2026 का पंचांग

कल का दिशाशूल : उत्तर
कल की भद्रा : दोपहर 03 बजकर 18 मिनट तक।
कल का पर्व एवं त्योहार : लोहड़ी
विक्रम संवत 2082 शके 1947 दक्षिणायण, दक्षिणगोल, हेमंत ऋतु माघ मास कृष्ण पक्ष की दशमी 15 घंटे 19 मिनट तक तत्पश्चात एकादशी, विशाखा नक्षत्र 24 घंटे 07 मिनट तक तत्पश्चात अनुराधा नक्षत्र, शूल योग तत्पश्चात गंड योग, तुला में चंद्रमा तत्पश्चात वृश्चिक में।

मेष : दांपत्य जीवन सुखमय होगा। प्रयास फलीभूत होंगे। जीविका के क्षेत्र में प्रयास सार्थक होगा।

वृष : सम्मान में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। व्यावसायिक प्रयास फलीभूत होगा।

मिथुन : धन, यश, कीर्ति में वृद्धि होगी। पारिवारिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी।

कर्क : पारिवारिक कार्य में व्यस्त रहेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

सिंह : धन, यश, कीर्ति में वृद्धि होगी। पुरुषार्थ सार्थक होगा। योजना फलीभूत होगी।

कन्या : आर्थिक सुधार होगा। धन, यश, कीर्ति में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

तुला : कार्य संपन्न होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय होगा।

वृश्चिक : शासनसत्ता का सहयोग रहेगा, लेकिन जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

धनु : आर्थिक सुधार होगा। रचनात्मक प्रयास फलीभूत होंगे। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी।

मकर : उपहार या सम्मान में वृद्धि होगी। रिश्तों में निकटता आएगी। पारिवारिक जीवन सुखमय होगा।

कुंभ : आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। गृह उपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। रिश्तों में निकटता आएगी।

मीन : स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। संतान या शिक्षा के कारण चिंतित रहेंगे।

वर्ग पहेली-3217

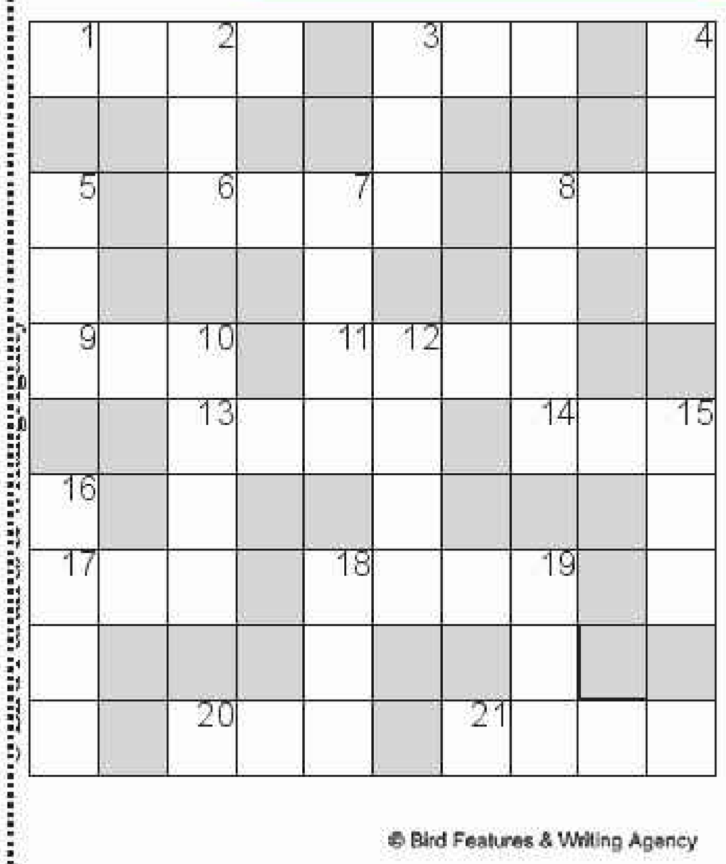

© Bird Features & Writing Agency

बाएं से दाएं:
1. जज, न्याय करने वाला (4)। 3. उन्नति, उठान, विकास, चढ़ाव (3)। 6. प्रलय (4)। 8. संकोची, लज्जाशील (3)। 9. गलीचा, कारपेट (3)। 11. नमक के स्वाद का (4)। 13. बहुत पहले से चला आता हुआ (4)। 14. हास-परिहास (3)। 17. मन से उत्पन्न (3)। 18. जीवन भर (4)। 20. आजमाइश, इम्तिहान, जांच (3)। 21. वन में रहने वाला (4)।

ऊपर से नीचे:
2. धैर्य, धीरता (3)। 3. सफेद (3)। 4. फुसलाना, बातों में उलझाना (4)। 5. प्रकार, ढंग (3)। 7. बंधक, गारंटी, जिम्मा लेना (4)। 8. ओस (4)। 10. रग-रग (2,2)। 12. अपने ही मन का करने वाला (4)। 15. इस देश की राजधानी दोहा है (3)। 16. समान या बराबर होने का भाव (4)। 18. लेख, दस्तावेज, निबंध (3)। 19. नया, नूतन (3)।

कल का हल

अ[1]	का	र	थ[2]	■	■	अ[3]	मा	व	स[4]
न	■	■	ल[5]	म्हा	■	■	■	■	मा
म	■	■	च	■	■	बी[6]	■	■	हा
न	■	पा[7]	र	स[8]	■	मा[9]	न्य	वं[10]	र
■	■	■	■	वा[11]	नि[12]	र	■	क्र	■
■	हे[13]	■	बा[14]	ल	क	■	■	■	■
ग[15]	द	ग	द	■	ल[16]	ह[17]	र	■	ब[18]
म	■	■	ल	■	■	म	■	■	रा
नी	■	■	■	■	बा[19]	ना	■	■	ब
य[20]	म	रा	ज	■	■	मं[21]	जे	दा	र

सुडोकू-3217

7		4		6		9		5
	2			5				
		9	2		7		6	
5			7			2		
	9	3		2	6			
4			1					6
2			6				8	
	6	5		3		7	4	
9			4		2			1

कल का हल

7	1	8	9	5	4	6	2	3
9	5	3	6	2	8	7	1	4
4	2	6	7	3	1	8	9	5
6	4	9	2	1	5	3	8	7
3	7	2	8	9	6	4	5	1
5	8	1	4	7	3	9	6	2
8	9	7	5	4	2	1	3	6
1	6	5	3	8	7	2	4	9
2	3	4	1	6	9	5	7	8

चिंतन

अमेरिका का दूसरों के मामलों में दखल क्यों

जब आकांक्षाएं बदलती हैं तो इसका असर कहीं न कहीं दिखाई देता ही है। ऐसा ही काम अब दुनिया का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका कर रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हर देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करते नजर आते हैं। हाल ही में टैरिफ से दुनिया में हलचल मचाने वाले ट्रंप यूक्रेन, वेनेजुएला के बाद अब ईरान में भी हस्तक्षेप कर रहे हैं। हालांकि अमेरिका की शुरू से ही दूसरों के मामलों में टांग अड़ाने की आदत रही है। आखिर अमेरिका जैसे देश का दूसरे देशों के मामले में हस्तक्षेप कहां तक उचित है। वह भी तब, जब दुनिया में बदलाव की बयार चल रही हो। अब मामला ईरान का है। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान का कहना है कि अमेरिका और इजराइल ईरान में दंगे भड़काकर अराजकता और अव्यवस्था फैलाना चाहते हैं। उन्होंने ईरानियों से दंगाइयों और आतंकवादियों से दूरी बनाए रखने का आह्वान किया। बता दें कि ईरान में धार्मिक सत्ता को चुनौती देने वाले राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शनों को दो सप्ताह से अधिक समय हो चुका है। हिंसक प्रदर्शनों में अब तक 190 लोगों की जान जा चुकी है। ईरान के संसद अध्यक्ष ने चेतावनी दी कि अगर अमेरिका राष्ट्रपति ट्रम्प की धमकी के अनुसार इस्लामी गणराज्य पर हमला करता है, तो अमेरिकी सेना और इजराइल उसके वैध लक्ष्य होंगे। ईरान का कहना है कि अमेरिका न सिर्फ अशांति एवं असुरक्षा का वातावरण बना रहा है, अपितु आतंकवाद और हिंसा भी भड़का रहा है। साथ ही, उसने यह भी आरोप लगाया कि ईरान में आर्थिक समस्याओं की बड़ी वजह अमेरिका द्वारा लगाए गए अवैध एवं अन्यायपूर्ण प्रतिबंध हैं। हालांकि अमेरिका का कहना है कि वह ईरान में मानवाधिकारों की रक्षा और परमाणु समझौते के पालन को सुनिश्चित करना चाहता है। ईरान का मानना है कि वह उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है और अशांति फैला रहा है। अमेरिका एक वैश्विक शक्ति है और वह अपने हितों को बचाने के लिए दूसरों के मामलों में दखल देता है। बता दें कि ईरान में अमेरिका के दखल का इतिहास 1953 से शुरू होता है, जब अमेरिका ने ईरान के प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसादेग की सरकार का तख्तापलट करवा दिया था। इसके बाद ईरान में शाह वंश का शासन स्थापित हुआ, जो अमेरिका के इशारों पर काम करता था। 1978 के बाद से अमेरिका की दुश्मनी ईरान के साथ ज्यादा बढ़ गई। ईरान को कंट्रोल करने के लिए 1979 के बाद से अमेरिका ने कई कवायद की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल पाई। आखिरी बार जून 2025 में जब अमेरिका ने ईरान पर हमला किया था, तो उस वक्त ईरान ने होर्मुज के नीचे बारूद बिछवा दिया। इसकी वजह से आनन-फानन में अमेरिका को सीजफायर करना पड़ा। अब ट्रंप नए सिरे से ईरान पर कंट्रोल हासिल करने की प्लानिंग में हैं। कहा यह भी जा रहा है कि ईरान की इकोनॉमी मुख्य रूप से ऑयल और नैचुरल गैस पर निर्भर है। ईरान के पास 208209 अरब बैरल तेल अभी भी है। ये दुनिया के कुल प्रमाणित तेल भंडार का 12% हिस्सा है। ईरान को सऊदी अरब और इजराइल का विरोधी माना जाता है। ये दोनों ही देश अमेरिका के करीबी हैं। अमेरिका की नजर ईरान के ऑयल और गैस रिजर्व पर है। अगर अमेरिका, ईरान पर कंट्रोल कर लेता है, तो दुनिया के व्यापार का 20% उसके कब्जे में आ जाएगा। अमेरिका की खास दिलचस्पी होर्मुज स्ट्रेट और फारस की खाड़ी को लेकर भी बताई जा रही है।

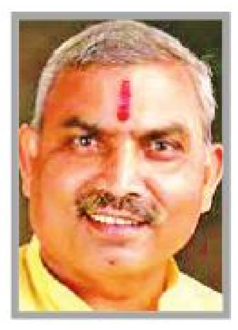

जयंती विशेष
शिवप्रकाश

स्वामी विवेकानंद के दिखाए मार्ग पर चलें

स्वामी विवेकानंद कुशाग्र बुद्धि, युवा प्रणेता, शिक्षा उन्नायक, समाज सुधारक, धर्म प्रचारक एवं समरसता के प्रेरक जैसे गुणों से युक्त थे। 11 सितंबर 1893 के विश्व धर्म सभा के अपने भाषण के कारण विश्व प्रसिद्ध हो गए। भारत सरकार ने 1984 से स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को "युवा दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया। वे स्वतंत्रता आंदोलन के महान क्रांतिकारियों की प्रेरणा थे। घोर गुलामी के कालखंड में भी भारत के दायित्व के प्रति उन्होंने जो विश्वास प्रकट किया, उसको पूर्ण करने का कार्य वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को करना है। जीवन की अल्पावधि में जो महान कार्य उनके द्वारा हुए, उनको पूर्णता प्रदान करने का संकल्प लेना उनके जन्मदिवस पर उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ था। भगवान शिव की कृपा स्वरूप वह प्रसिद्ध अधिवक्ता पिता विश्वास नाथ दत्त एवं माता भुवनेश्वरी देवी के परिवार में जन्मे थे। बचपन में उनको नरेन्द्रनाथ दत्त नाम मिला था। बाल्यकाल में उनको विले एवं नरेन के नाम से भी पुकारा जाता था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा लेने के बाद प्रारंभ में वह विविदिषानंद तत्पश्चात वह विश्व भर में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह कुशाग्र बुद्धि, युवा प्रणेता, शिक्षा उन्नायक, समाज सुधारक, धर्म प्रचारक एवं समरसता के प्रेरक जैसे गुणों से युक्त थे। युवा पीढ़ी में भारतीय स्वाभिमान को बढ़ाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उनके आह्वान के कारण अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिए अनेक युवकों ने अपना संपूर्ण जीवन स्वतंत्रता के लिए दांव पर लगाया। स्वामी विवेकानंद 11 सितंबर 1893 के विश्व धर्म सभा के अपने भाषण के कारण विश्व प्रसिद्ध हो गए। भारत सरकार ने 1984 से स्वामी विवेकानंद के जन्म दिवस को "युवा दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

क्रिस्टोफर कोलंबस के अमेरिका पहुंचने के 400 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म सभा का आयोजन किया गया था। इसका उद्देश्य विगत 400 वर्षों में हुई भौतिक प्रगति को दिखाना एवं ईसाई धर्म का वैश्विक विस्तार एवं उसकी श्रेष्ठता को सिद्ध करना था। मिशिगन झील के चारों तरफ एक भव्य एवं विशाल प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था। 494 किलोमीटर लम्बी झील पर लगी इस प्रदर्शनी को लाखों लोगों द्वारा देखा गया। इस आयोजन के महत्वपूर्ण कार्यक्रम धर्मसभा के अंतर्गत हुए स्वामी विवेकानंद के संक्षिप्त भाषण से भारत के धर्म, विचार एवं दर्शन के साथ-साथ भारतवासियों द्वारा संपूर्ण विश्व के प्रति किए गए व्यवहार का दर्शन संपूर्ण विश्व को हुआ। उनके सारगर्भित भाषण से हिंदू धर्म संपूर्ण विश्व में पुनः स्थापित हुआ। साथ ही स्वामी विवेकानंद भी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हो गए। अपने भाषण में उन्होंने हिंदू धर्म में वर्णित संपूर्ण विश्व को परिवार मानने की हमारी दृष्टि, सहिष्णुता ही नहीं सभी सत्य है एवं इस सत्य की यात्रा अपने-अपने मार्ग से करते हुए एक ही स्थान पर पहुंचते हैं तथा हिन्दू धर्म को सभी को स्वीकार कर शरण देने वाला हमारा व्यवहार यह उनके भाषण का सार था। इसको शिव महिमा स्तोत्र एवं गीता के मंत्र को गायन कर उन्होंने प्रतिस्थापित किया, जो आज भी संपूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शक हैं। संपूर्ण पृथ्वी के संसाधनों पर कब्जा करने के लिए व्यवसायों का अतिक्रमण, अनेक देशों में परस्पर चलने वाले युद्धों से कराहती मानवता, अपने धर्म के विस्तार के लिए दूसरे धर्म अनुयायियों की समाप्ति के प्रयास, आज भी संपूर्ण मानवता के सम्मुख चुनौती हैं। इसी की चेतावनी जिसको स्वामी जी ने अपने भाषण में वर्णित किया था कि सांप्रदायिकता, हठधर्मिता, धर्मांधता पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है। उन्होंने आह्वान किया था कि सभा के सम्मान में हुआ उत्पीड़न एवं पारस्परिक कटुता का मृत्यु निनाद सिद्ध होगा। यह लक्ष्य प्राप्ति अभी भी कोसों दूर है। हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिए उन्होंने समाज का आह्वान किया था।

अस्पृश्यता पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा था कि "हिंदू धर्म का एक ही सिद्धांत रह गया है, मुझे मत छुओ-

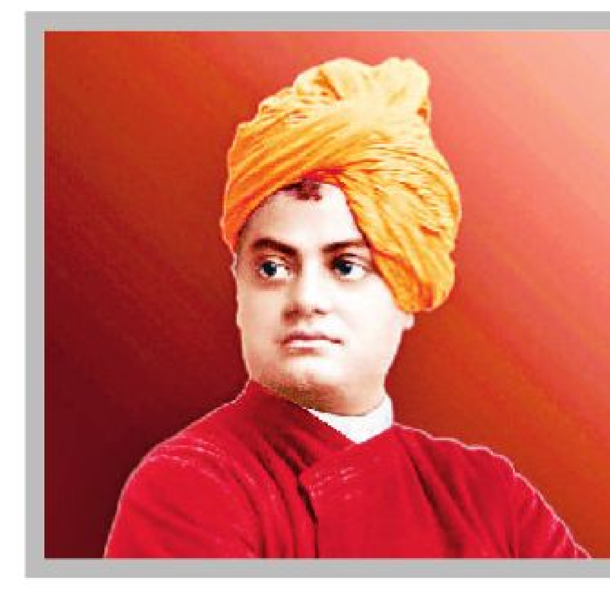

मुझे मत छुओ। इस मत छुओवाद के कारण समाज की बहुत बड़ी क्षति हुई है। यह ईश्वर की व्यवस्था एवं मानवता के प्रति घोर अन्याय है।" अनेक महापुरुषों एवं संस्थाओं के प्रयासों के बाद भी यह कार्य अभी अपूर्ण है। समरस समाज निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें अभी भी सतत प्रयत्न करने हैं। आज जब संपूर्ण देश में मतांतरण, लवजेहाद, लैंड जेहाद, घुसपैठ जैसे माध्यमों से देश की जनसांख्यिकी परिवर्तन का प्रयास हो रहा है। ऐसे समय स्वामी विवेकानंद का यह विचार कि "जब एक हिंदू अपना धर्म छोड़ता है, तब केवल एक हिंदू कम नहीं होता, बल्कि देश का एक शत्रु बढ़ जाता है।" अमेरिका में ईसाई मिशनरियों को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा था कि"समाज की गरीबी एवं लाचारी का लाभ उठाकर प्रलोभन अथवा सेवा का माध्यम बनाकर धर्मांतरण करना यह सेवा नहीं व्यापार है।"

लॉर्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को उन्होंने नकारात्मक शिक्षा पद्धति कहा, जो आने वाली पीढ़ी के मन में अपनी परंपरा, संस्कृति, इतिहास, भाषा एवं महापुरुषों के प्रति ग्लानि का निर्माण करती है। उनका कहना था कि "वह शिक्षा जो तुम्हें आत्मनिर्भर न बनाये, वह शिक्षा नहीं है।"

स्वामी विवेकानंद केवल धर्म प्रचारक ही नहीं, वह भारत के आर्थिक विकास के प्रति भी सजग थे। हमारे युवा आर्थिक विकास के लिए विज्ञान एवं तकनीकी का उपयोग करने वाले बनें, यह आह्वान भी उन्होंने किया था। प्रसिद्ध उद्योगपति जमशेद जी टाटा से यात्रा के समय हुए संवाद में भारत की आर्थिक प्रगति में उनके योगदान के संबंध में चर्चा की थी। जमशेद जी टाटा द्वारा भारतीय विज्ञान संस्थान एवं टाटा स्टील जैसे उद्योगों की स्थापना के पीछे स्वामी जी की ही प्रेरणा थी। इस भेंट में स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "केवल विदेश से तकनीकी आयात करना भारत की गरीबी नहीं मिटाएगा, हमें अपनी तकनीकी स्वयं विकसित करनी होगी।" भारत विश्व की सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश है। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति से पहले मत रुको"(उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत)। उनका कहना था कि "मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है। इन्हीं में से राष्ट्र निर्माण के कार्यकर्ता निकलेंगे।" उन्होंने स्वस्थ एवं फौलादी शरीर वाले, संवेदनशील हृदय वाले, सेवाभावी युवाओं की कल्पना की थी। मानसिक गुलामी से मुक्ति का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा था कि "भारत की कमजोरी आर्थिक गरीबी नहीं, बल्कि मानसिक गुलामी है।" उनका प्रसिद्ध वाक्य "हम पाप के कारण से नहीं जन्मे, हम अमरत्व की संतान हैं (वयम्‌ अमृतस्य पुत्राः)"। स्वदेशी एवं स्वाभिमान के भाव को प्रकट करते हुए उन्होंने मंत्र दिया था कि "गर्व से कहो, मैं भारतीय हूँ, प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है, कहो भारत की मिट्टी मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है।" पश्चिम प्रवास के समय भारत में स्त्री-पुरुष समानता पर प्रश्न पूछने पर उन्होंने कहा था कि भारत में स्त्री सदैव श्रेष्ठ है क्योंकि वह माँ है।

उन्होंने कहा कि भारत की स्त्रियों को पश्चिमी फैशन की नहीं, बल्कि सीता एवं सावित्री के चारित्रिक बल की आवश्यकता है। उनका यह संदेश कि "किसी के पीछे मत चलो, स्वयं का मार्ग बनाओ। पाश्चात्य देशों की नकल करना सभ्यता नहीं, बल्कि अपनी बौद्धिक मृत्यु को निमंत्रण देना है।" स्वतंत्रता आंदोलन के महान क्रांतिकारियों की प्रेरणा स्वामी विवेकानंद थे। घोर गुलामी के कालखंड में भी भारत के दायित्व के प्रति उन्होंने जो विश्वास प्रकट किया, उसको पूर्ण करने का कार्य वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को करना है। अपने जीवन की अल्पावधि में जो महान कार्य स्वामी विवेकानंद के द्वारा हुए, उनको पूर्णता प्रदान करने का संकल्प लेना उनके जन्मदिवस पर उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं , ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

संकल्प

डॉ . पवन कुमार शर्मा

राष्ट्र चेतना व आस्था का उत्सव है सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम में गुजरात के सोमनाथ को बारह पवित्र ज्योतिर्लिंगों में प्रथम स्थान पर रखा गया है, जिससे भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में उसके महत्व का पता चलता है। यह उस सभ्यतागत विश्वास को प्रतिबिंबित करता है कि सोमनाथ भारत के आध्यात्मिक भूगोल का आधार है। गुजरात में वेरावल के निकट प्रभास पाटन में अरब सागर के किनारे स्थित, सोमनाथ केवल एक पूजा स्थल नहीं है, बल्कि भारत की सभ्यतागत निरंतरता का एक जीवंत प्रतीक है। 1000 वर्ष पूर्व, 1026 ईस्वी में महमूद गज़नवी ने पहली बार हिंदू आस्था के इसी केंद्र बिंदु सोमनाथ पर आक्रमण किया था, लेकिन आक्रमणों, विध्वंस और अपमान के बावजूद सोमनाथ ने आत्मसमर्पण नहीं किया। आस्था के इस केंद्र की गौरवशाली विरासत को याद करने के लिए 8 से 11 जनवरी 2026 तक सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का आयोजन किया गया। यह भव्य आयोजन भारत की सांस्कृतिक अस्मिता, ऐतिहासिक स्मृति, राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्र चेतना का प्रतीक बन गया है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का उद्देश्य भारत की उस आत्मा को स्मरण करना है, जिसने हर दौर में पुनर्निर्माण का साहस दिखाया।

सोमनाथ मंदिर का इतिहास बताता है कि कैसे यह स्थल बार-बार नष्ट किया गया, लेकिन हर बार और अधिक भव्यता के साथ खड़ा हुआ। यह पर्व नई पीढ़ी को अपने अतीत से जोड़ने और आत्मगौरव की भावना जागृत करने का माध्यम है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में देश-विदेश से श्रद्धालु, संत, इतिहासकार और जनप्रतिनिधि उपस्थित हुए। सहस्त्र वर्षों के लंबे संघर्षकाल के बाद आया यह मौका केवल उत्सव का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी अवसर बना। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उद्बोधन कार्यक्रम का केंद्र बिंदु रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में सोमनाथ को भारत की आत्मा का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भारत की अटूट चेतना और स्वाभिमान का साक्षात स्वरूप है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इतिहास को केवल पीड़ा के रूप में नहीं, बल्कि प्रेरणा के स्त्रोत के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि जिन्होंने सोमनाथ को तोड़ने का प्रयास किया, वे इतिहास में खो गए, लेकिन सोमनाथ आज भी अडिग खड़ा है। राष्ट्र निर्माण में आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का होना आवश्यक है। उन्होंने विकास और विरासत के संतुलन की बात करते हुए कहा कि आधुनिक भारत अपनी प्राचीन जड़ों पर गर्व करता है। प्रधानमंत्री ने सरदार वल्लभभाई पटेल और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का स्मरण करते हुए कहा कि स्वतंत्र भारत में सोमनाथ का पुनर्निर्माण केवल धार्मिक कार्य नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना थी। आज का भारत आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सांस्कृतिक रूप से जागरूक भारत है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व इसी चेतना का प्रतीक है। जब राष्ट्र अपनी जड़ों से जुड़ा होता है, तभी वह वैश्विक मंच पर मजबूती से खड़ा हो सकता है। स्वाभिमान पर्व के दौरान 72 घंटे का अखंड ओंकार जाप, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, प्रकाश-ध्वनि कार्यक्रम और ऐतिहासिक प्रदर्शनी आयोजित की गईं।

इन कार्यक्रमों के माध्यम से सोमनाथ के इतिहास और संघर्ष को जनसामान्य तक प्रभावी रूप से पहुंचाया गया। सदियों तक सोमनाथ करोड़ों लोगों की श्रद्धा और उपासना का केंद्र रहा है। इसे बार-बार उन आक्रमणकारियों द्वारा निशाना बनाया गया, जिनका उद्देश्य भक्ति नहीं, बल्कि विनाश था। इसके बावजूद सोमनाथ की कथा सनातन धर्म को मानने वाले करोड़ों लोगों के अटूट साहस, विश्वास और संकल्प से जानी जाती है। पुराणों के अनुसार, सोमनाथ मंदिर की स्थापना स्वयं चंद्रदेव ने की थी। कहा जाता है कि चंद्रमा ने भगवान शिव की आराधना कर अपने क्षय रोग से मुक्ति पाई और कृतज्ञता स्वरूप इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। ऋग्वेद, स्कंद पुराण, शिव पुराण और भागवत पुराण में सोमनाथ की महिमा का वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में सोमनाथ मंदिर अपार संपन्नता और वैभव का केंद्र था। विदेशी यात्रियों के वर्णनों के अनुसार, मंदिर में सोने-चांदी के कलश, रत्नजड़ित द्वार और हजारों दीपक सदैव प्रज्ज्वलित रहते थे। समुद्री व्यापार के कारण यह क्षेत्र अत्यंत समृद्ध था और सोमनाथ उस समृद्धि का प्रतीक था। यह मंदिर आने वाली पीढ़ियों को यह प्रेरणा देता रहेगा कि आस्था और आत्मबल के सामने कोई भी आक्रमण टिक नहीं सकता। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व केवल अतीत की स्मृति नहीं बल्कि भविष्य का संकल्प है। यह दिव्य भव्य आयोजन संदेश देता है कि भारत अपनी आस्था, इतिहास और स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ रहा है

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

राम सब घट मेरा साइयां

संकलित
दर्शन

पूरे संसार में राम का निवास है, सबमें भगवान हैं और हम उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। राम ईश्वर के रूप में सबके हृदय में है। कबीर ने कहा है-'राम सब घट मेरा साइयां'... राम ईश्वर के रूप में सबके हृदय में हैं। सदा सर्वदा सबके हृदय में रहेंगे, लेकिन हमारे स्वार्थ, हमारे हेतु, हमारी मानसिकताओं के कारण कभी-कभी हम राम को साधन बना बैठते हैं। इसलिए हम राम को सही रूप में नहीं समझ पाते। प्रत्येक व्यक्ति में यदि हमें सिया राम के दर्शन होने लगें तो तमाम भेदभाव समाप्त हो जाएंगे। जातीय आधार पर भेदभाव काफी हद तक कम हुआ है, लेकिन अब भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। इसके लिए धर्माचार्यों को आगे आना होगा। धार्मिक क्षेत्र हो, राजनीतिक या फिर सामाजिक क्षेत्र, अंतिम व्यक्ति पूज्य होना चाहिए। अगर अंतिम व्यक्ति आप तक नहीं पहुंच पा रहा है तो यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप उस तक पहुंचें। भारतीय दर्शन में इहलोक और परलोक की बात आती है। इहलोक और परलोक का कल्याण करने की बात मेरी दृष्टि में इह यानी अपने संसार के साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण हो, ऐसा प्रयास करना ही इहलोक और परलोक को सुधारना है। दूसरों के कल्याण की भावना का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हम व्यापक व विराट की संतान हैं, इसलिए दूसरों के कल्याण का भारतीय सोच पूरे विश्व के कल्याण का सोच है। जब हम वसुधैव कुटुंबकम की बात करते हैं, तो दुनिया के सभी देशों के कल्याण की बात करते हैं।

कपड़े की उपयोगिता दिखावे के लिए नहीं

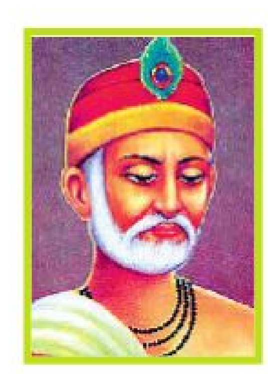

संकलित
प्रेरणा

संत कबीर रोज अपने शिष्यों को और अन्य लोगों को उपदेश दिया करते थे। कबीर जी के उपदेश सुनने एक धनी व्यक्ति भी आता था। धनी व्यक्ति कबीर दास जी से बहुत प्रभावित था। एक दिन उस धनी व्यक्ति ने देखा कि कबीर दास जी जो कुर्ता पहनते हैं, वह बहुत पुराना हो गया और कुर्ता बहुत ही सामान्य कपड़े से बना था। अगले दिन धनी व्यक्ति एक मूल्यवान कुर्ता लेकर पहुंचा और कबीर दास को उपहार में दे दिया। कुर्ता मखमल से बना था। बाहर की ओर से कुर्ता मखमली था और अंदर की ओर उसमें सामान्य कपड़ा लगा था। धनी व्यक्ति ने सोचा था कि अब कबीर दास जी उसका दिया हुआ कुर्ता पहनेंगे। अगले दिन जब वह व्यक्ति फिर से कबीर दास जी के पास पहुंचा तो उसने देखा कि कबीर जी ने उल्टा कुर्ता पहना है। दरअसल, कबीर दास जी के कुर्ते का मलमल वाला हिस्सा अंदर की ओर था और बाहर सामान्य कपड़ा दिख रहा था। उस धनी व्यक्ति ने कबीर जी से पूछा कि ये आपने क्या किया? आपने तो कुर्ता उल्टा पहना है? सभी लोगों ने भी कबीर दास जी से पूछा कि कुर्ता मूल्यवान है तो आपने इसे उल्टा क्यों पहना है? कबीर जी ने कहा कि ये कुर्ता देखकर मैंने सोचा कि मखमल शरीर को स्पर्श होगा तो शरीर को ज्यादा बेहतर लगेगा, क्योंकि ये कपड़ा तो शरीर के लिए ही हैं। दिखाने के लिए तो साधारण हिस्सा ही काफी है। दूसरों को हमारे कपड़ों से क्या लेना-देना?

अंतर्मन

आज की पाती

अंतरराष्ट्रीय पहचान बना रही है हिंदी

हिंदी केवल भारत में बोली जाने वाली एक भाषा नहीं है, बल्कि यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। हिंदी भारत की संस्कृति है, संस्कार है, यह स्वतंत्रता संग्राम की भाषा है। हिंदी की अंतरराष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करने, उसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने और वैश्विक मंच पर उसकी भूमिका को रेखांकित करने के लिए प्रति वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। यह दिवस हिंदी भाषा के सम्मान, इसके विस्तार और इसके भविष्य की संभावनाओं का प्रतीक है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका और नेपाल जैसे देशों में हिंदी न केवल बोली जाती है, बल्कि शिक्षा, साहित्य और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी माध्यम बनी हुई है।

- साकेत अग्रवाल, भाटापारा

करंट अफेयर

मचाडो शांति पुरस्कार ट्रंप को नहीं दे सकती

नोबेल इंस्टिट्यूट ने स्पष्ट किया है कि वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो हाल ही में मिला नोबेल शांति पुरस्कार अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को नहीं दे सकतीं। नॉर्वियन नोबेल इंस्टिट्यूट ने यह बयान मचाडो के यह कहने के बाद जारी किया है कि वह अपना पुरस्कार ट्रंप को देना या उनके साथ साझा करना चाहेंगी, जिन्होंने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने के अमेरिकी अभियान की निगरानी की है। मादुरो न्यूयॉर्क में मादक पदार्थों की तस्करी के आरोपों का सामना कर रहे हैं। इंस्टिट्यूट ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा हो जाने के बाद इसपर न तो रोक लगाई जा सकती है, न ही यह किसी दूसरे को सौंपा या उसके साथ साझा किया जा सकता। बयान में कहा गया है, 'फैसला अंतिम होता है और हमेशा बरकरार रहता है।' मचाडो ने 'फॉक्स न्यूज' के प्रस्तोता सीन हैनिटी से सोमवार को कहा था, 'मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे यह कहना जरूर चाहूंगी कि हम (वेनेजुएला की जनता) यह मानते हैं कि यह पुरस्कार वेनेजुएला के लोगों का है और वे निश्चित रूप से इसे उन्हें देना या उनके साथ साझा करना चाहते हैं।'

ऑफ बीट

झपकी से याददाश्त में हो सकता है सुधार

कुछ लोग इसे विलासिता भोग के रूप में देखते हैं जबकि अन्य इसे मुस्तैद तथा तंदरुस्त बने रहने के तरीके के रूप में देखते हैं। लेकिन झपकी के फायदे के साथ-साथ नुकसान भी हो सकते हैं। वैसे मैं झपकी लेने की जटिल प्रवृत्ति के साथ साथ इस बात से अवगत हूं कि क्यों दोपहर के वक्त 20 से 30 मिनट की झपकी असंख्य तरीकों से फायदेमंद हो सकती है। अनुसंधान से पता चलता है कि झपकी के कई फायदे हैं। छोटी-सी झपकी से मानसिक स्वास्थ्य और याददाश्त के साथ ही मुस्तैदी, ध्यान और प्रतिक्रिया देने के समय में भी सुधार आता है। इसका संबंध उत्पादकता और रचनात्मकता से भी है। चूंकि झपकी से रचनात्मक सोच में सुधार आता दिखायी देता है इसलिए कुछ कंपनियों ने अपने कार्य स्थल पर झपकी लेने के लिए कमरे बनाकर इसका फायदा उठाने का प्रयास किया है। ऐसा कहा जाता है कि मस्तिष्क झपकी के वक्त का इस्तेमाल दिनभर में एकत्रित सूचना को संसाधित करने के लिए करता है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि समस्याओं को हल करने की क्षमता बढ़ती है। एक छोटे-से अध्ययन से यह पता चलता है कि जो लोग झपकी लेते हैं वे कम चिड़चिड़े होते हैं तथा उन्हें कम गुस्सा आता है जिससे काम करते वक्त बेहतर फोकस बनता है और दक्षता बढ़ती है।

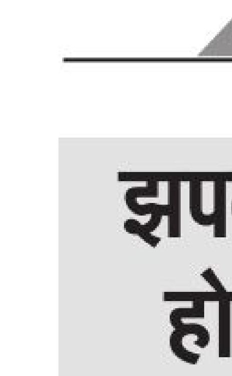

ट्रेंड

वेगडाजी भील का पराक्रम

वेगडाजी भील का पराक्रम सोमनाथ के इतिहास का एक अभिन्न हिस्सा है। हिंसा की धमकियों से विचलित हुए बिना वे इस पवित्र मंदिर की रक्षा में दृढ़ता से डटे रहे। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सोमनाथ की रक्षा के लिए मां भारती की संतानों का संकल्प कितना सशक्त रहा है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

गिनीज विश्व रिकॉर्ड

राजमार्ग अभियांत्रिकी में नए वैश्विक मानदंड स्थापित करते हुए, एनएचएआई ने निरंतर बिटुमिनस कंक्रीट फर्श में दो और गिनीज विश्व रिकॉर्ड हासिल करके इतिहास रच दिया है। यह उपलब्धि कड़े गुणवत्ता नियंत्रण के साथ-साथ आईआईटी बॉम्बे जैसे प्रमुख संस्थानों के सहयोग से संभव हुई।

-नितिन गडकरी, केंद्रीय राजमार्ग मंत्री

उत्साह का संचार

जिंदगी में आनंद और उत्साह का संचार अगर कोई करते हैं, तो खेल करते हैं। खेल शरीर को स्वस्थ बनाते हैं, मन को और मजबूत बनाते हैं तथा आत्मा को आनंद और प्रसन्नता से भर देते हैं।

- शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय कृषि मंत्री

जनविरोधी फैसला

काम का अधिकार' कोई भीख नही, बल्कि देश के गरीब का कानूनी हक है। भाजपा सरकार 'वी.बी.जी. राम जी योजना' लाकर मनरेगा को व्यवस्थित रूप से खत्म करना चाहती है। इस जनविरोधी फैसले के खिलाफ कांग्रेसी आवाज बुलंद करेंगे।

-अशोक गहलौत, पूर्व सीएम, राजस्थान

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

टीएमसी कार्यकर्ता पेट्रोल से चाहते थे जलाना, गृह मंत्रालय ने मांगी वीडियो फुटेज और रिपोर्ट

बंगाल के नेता प्रतिपक्ष और भाजपा के वरिष्ठ नेता के काफिले पर मेदिनीपुर में हमला

एजेंसी ⏭ कोलकाता

पश्चिम बंगाल के नेता प्रतिपक्ष और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुवेंदु अधिकारी के काफिले पर मेदिनीपुर में हमला हुआ। इसके बाद भाजपा नेता हरेक जिले में प्रदर्शन करने लगे। अब सुवेंदु के काफिले पर हुए हमले को लेकर गृह मंत्रालय सख्त हो गया है। इस कथित हमले के संबंध में मंत्रालय ने उनके कार्यालय से रिपोर्ट मांगी है। आरोप है कि शनिवार देर शाम पुरुलिया के पास टीएमसी समर्थकों द्वारा सुवेंदु अधिकारी के काफिले पर हमला किया गया।

सुवेंदु के आरोपों के बाद गृह मंत्रालय सख्त

समर्थकों ने कथित तौर पर सड़क जाम की बांस की लाठियों से उनके काफिले पर हमला किया

थाने में बैठे सुवेंदु अधिकारी

दोषियों को गिरफ्तार करें

सुवेंदु कहा कि हम यहां न्याय मांगने आए हैं। मैंने इसमें शामिल लोगों के नाम बताए हैं। एफआईआर दर्ज होनी चाहिए और दोषियों को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। वे बांस की लाठियां लेकर आए थे और दो कारों पर हमला किया, उन्हें नहीं पता था कि मैं किस कार में था। उनके पास पेट्रोल का एक केन भी था। चुनाव आ रहे हैं, और वे जानते हैं कि वे हार रहे हैं। वे बंगाल से भाजपा को खत्म करना चाहते हैं।

पुलिस के सामने किया गया हमला कोर्ट भी जाएंगे

सुवेंदु ने दावा किया कि यह हमला पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में हुआ, जिन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया। सुवेंदु ने पुलिस स्टेशन में अपना लगभग छह घंटे का धरना खत्म किया और घोषणा की कि वह इस मुद्दे पर कलकत्ता हाई कोर्ट जाएंगे। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि मंगलवार को चंद्रकोना में एक विरोध रैली की योजना है।

सुवेंदु का कार्यालय भेजगा रिपोर्ट

सुवेंदु का कार्यालय घटना की वीडियो रिकॉर्डिंग गृह मंत्रालय को भेजेगा। सुवेंदु ने आरोप लगाया कि यह घटना रात करीब 8.20 बजे हुई जब वह पुरुलिया से लौट रहे थे। जब उनका काफिला पश्चिम मेदिनीपुर जिले के चंद्रकोना रोड मार्केट इलाके में चार-पॉइंट क्रॉसिंग से गुजर रहा था, तो पार्टी का झंडा लिए कुछ टीएमसी समर्थकों ने कथित तौर पर सड़क जाम कर दी और बांस की लाठियों से उनके काफिले पर हमला किया। घटना के समय स्थानीय पुलिस मौके पर नहीं पहुंची। उन्होंने कहा कि जिस गाड़ी में वह यात्रा कर रहे थे, उसके बुलेटप्रूफ शीशे के कारण उन्हें कोई चोट नहीं आई।

सुकांत ने भी ममता को घेरा- बर्दाश्त नहीं करेंगे

पूर्व भाजपा अध्यक्ष और सांसद सुकांत मजूमदार ने कहा कि सुवेंदु पर हमला पुलिस की मौजूदगी में हुआ। ऐसी घटनाएं बार-बार हो रही हैं, और यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। ऐसा लगता है कि मुख्यमंत्री चाहती हैं कि ये हमले हों ताकि, अगर केंद्र सरकार सख्त कार्रवाई करे, तो वह लोगों की सहानुभूति हासिल करके सत्ता में वापस आ सकें। अभी केंद्रीय बलों को तैनात किया जाना चाहिए।

वे राज्य की ज़िम्मेदारी कैसे लेंगे: टीएमसी

टीएमसी प्रवक्ता अरूप चक्रवर्ती ने कहा कि सुवेंदु एक लाठी भी नहीं संभाल सकते, क्या वह एक राज्य की जिम्मेदारी लेंगे? सुवेंदु ही थे जिन्होंने अपनी सेंट्रल रिज़र्व पुलिस फोर्स सुरक्षा को लाठीचार्ज करने का निर्देश दिया था। उनकी सुरक्षा ने बीजेपी के लोगों को पहचाना नहीं और अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर ही हमला कर दिया।

खबर संक्षेप

कांग्रेस के पूर्व विधायक पर रेप का तीसरा केस

नई दिल्ली। कांग्रेस के निलंबित विधायक राहुल मामकूटाथिल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

उनके खिलाफ यौन उत्पीड़न का तीसरा मामला सामने आया है। राहुल को जल्द ही मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाएगा। राहुल पर पहले से यौन उत्पीड़न के दो मामले चल रहे हैं। केरल हाईकोर्ट ने पिछले महीने राहुल को जमानत दी थी। उन पर कई मामले चल रहे हैं।

पूजा ने नौकर पर लगाया चोरी का आरोप

नई दिल्ली। पुणे पुलिस ने पूर्व आईएएस प्रोबेशनर पूजा खेडकर के एक गंभीर आरोप के बाद जांच

शुरू की है। पूजा ने दावा किया उनके घर में काम करने वाली घरेलू सहायिका ने उन्हें और उनके माता-पिता को बेहोश कर घर से कीमती सामान चुरा लिया। यह घटना पुणे के बनर रोड स्थित उनके बंगले में होने का आरोप है। पूजा ने शनिवार देर रात पुलिस से संपर्क किया।

स्वामी सुंदर सूरीश्वरजी को पीएम ने श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी श्रीमद विजय रत्न सुंदर सूरीश्वरजी महाराज की 500वीं किताब के

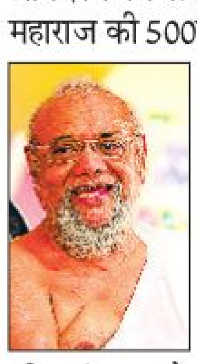

विमोचन के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। रविवार को एक वीडियो संदेश में पीएम ने उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए उन्हें शांत, सरल और स्पष्ट स्वभाव का संगम बताया। महाराज ने ज्ञान को केवल किताबों तक नहीं व्यावहारिक रूप से जीवन में उतारा।

शास्त्री की पुण्यतिथि देश ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री की पुण्यतिथि पर रविवार

को नेताओं ने उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। शास्त्री जी का 'जय जवान, जय किसान' का नारा राष्ट्र में एकता और स्वावलंबन की भावना जगाने वाला साबित हुआ था। तमाम नेताओं ने उनकी सादगी, ईमानदारी, दृढ़ संकल्प और राष्ट्रहित सर्वोपरि की नीति को याद किया।

सीयूईटी पीजी में आवेदन 14 जनवरी तक

नई दिल्ली। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट पोस्ट ग्रेजुएट 2026 के लिए

आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को 14 जनवरी आवेदन प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश दिए हैं। इच्छुक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। केवल वही उम्मीदवार आवेदन पूर्ण माने जाएंगे जिन्होंने परीक्षा शुल्क का सफलतापूर्वक भुगतान किया होगा।

वायु प्रदूषण पर गंभीर बहस छेड़ते हुए विपक्ष ने उठाए सवाल

जयराम ने मोदी सरकार को कहा- विफल एनसीएपी बना 'नोशनल क्लीन एयर प्रोग्राम'

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव (संचार) और राज्यसभा सांसद, पूर्व केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने वायु प्रदूषण के मुद्दे पर केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सेंटर फ़ॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर के ताज़ा विश्लेषण ने इस सच्चाई की पुष्टि कर दी है कि भारत में वायु गुणवत्ता एक गंभीर संरचनात्मक संकट बन चुकी है और इस पर मोदी सरकार की प्रतिक्रिया बेहद नाकाफ़ी और अप्रभावी रही है।

जयराम रमेश ने बताया कि सैटेलाइट डेटा पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार देश के लगभग 44 प्रतिशत शहर लगातार भीषण वायु प्रदूषण की चपेट में हैं। आकलन किए गए 4,041 वैधानिक नगरों में से 1,787 शहरों में पांच वर्षों (2019–2024, 2020 को छोड़कर) के दौरान पीएम 2.5 का वार्षिक स्तर लगातार राष्ट्रीय मानकों से ऊपर दर्ज किया गया।

उन्होंने कहा कि रिपोर्ट ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) की गंभीर विफलता को भी उजागर किया है। जहां एक ओर 1,787 शहर गंभीर रूप से प्रदूषित हैं, वहीं एनसीएपी के तहत केवल 130 शहरों को शामिल किया गया है। इनमें से 28 शहरों में अब तक कंटीन्यूअस एम्बिएंट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन तक स्थापित नहीं किए गए हैं। जिन 102 शहरों में निगरानी की व्यवस्था है, उनमें से 100 शहरों में पीएम10 का स्तर 80 प्रतिशत या उससे अधिक पाया गया। कुल मिलाकर, एनसीएपी देश के केवल 4 प्रतिशत गंभीर रूप से प्रदूषित शहरों को ही कवर कर पा रहा है। जयराम रमेश ने कहा कि जिसे नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम कहा जा रहा है, वह वास्तव में 'नोशनल क्लीन एयर प्रोग्राम' बनकर रह गया है। अब इसकी गहन समीक्षा, व्यापक सुधार और पुनर्गठन की सख़्त ज़रूरत है।

उन्होंने मांग की कि सबसे पहले सरकार को यह स्वीकार करना चाहिए कि देश के बड़े हिस्सों में वायु प्रदूषण एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट है। इसके मद्देनज़र एयर पॉल्यूशन (कंट्रोल एंड प्रिवेंशन) एक्ट, 1981 और 2009 में लागू नेशनल एम्बिएंट एयर क्वालिटी स्टैंडर्ड्स की पूरी तरह पुनर्समीक्षा होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि जहां इसके तहत पीएम2.5 की स्वीकार्य सीमा 24 घंटे में 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर और वार्षिक औसत 40 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है, वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक इससे कहीं अधिक सख़्त हैं।

कांग्रेस नेता ने कहा कि एनसीएपी के लिए उपलब्ध फंड में बड़े पैमाने पर बढ़ोतरी की जानी चाहिए। वर्तमान में एनसीएपी और 15वें वित्त आयोग की अनुदान राशि मिलाकर लगभग 10,500 करोड़ रुपये 131 शहरों में बांटे जा रहे हैं, जो बेहद अपर्याप्त हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि एनसीएपी को कम से कम 25,000 करोड़ रुपए का कार्यक्रम बनाया जाए और इसे देश के सबसे अधिक प्रदूषित 1,000 शहरों और कस्बों तक विस्तारित किया जाए।

उन्होंने यह भी कहा कि एनसीएपी के प्रदर्शन का पैमाना पीएम2.5 को बनाया जाना चाहिए और कार्यक्रम का फोकस ठोस ईंधनों के जलने, वाहन उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण जैसे प्रमुख स्रोतों पर होना चाहिए। साथ ही, एनसीएपी को कानूनी आधार देने, मज़बूत प्रवर्तन तंत्र विकसित करने और देश के हर शहर में प्रभावी डेटा निगरानी व्यवस्था लागू करने की आवश्यकता है।

जयराम रमेश ने कोयला आधारित बिजली संयंत्रों के लिए तय वायु प्रदूषण मानकों को तत्काल लागू करने और वर्ष 2026 के अंत तक सभी संयंत्रों में फ़्लू गैस डी-सल्फ़राइज़र अनिवार्य करने की भी मांग की। उन्होंने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल की स्वतंत्रता बहाल करने और पिछले दस वर्षों में किए गए जन-विरोधी पर्यावरण क़ानूनी संशोधनों को वापस लेने की भी ज़रूरत बताई।

उन्होंने कहा कि संसद में 29 जुलाई 2024 और 9 दिसंबर 2025 को मोदी सरकार ने वायु प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों को कमतर दिखाने की कोशिश की। सरकार सच से अनजान नहीं है, बल्कि अपनी अक्षमता और लापरवाही को छिपाने का प्रयास कर रही है।

सबसे लंबा बजट 28 जनवरी से

तो क्या रविवार को भी चलेगी संसद, होगा आम बजट पेश?

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

संसद का बहुप्रतीक्षित और कैलेंडर वर्ष का सबसे लंबा बजट सत्र 28 जनवरी से शुरू होकर 2 अप्रैल तक चलेगा। इस बीच एक अवकाश भी रहेगा।

केंद्रीय बजट 1 फरवरी, रविवार को संसद में पेश किए जाने की संभावना है। आम तौर पर सत्र के दूसरे चरण की शुरुआत तय समय से पहले रखी गई है, जिसे चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया गया है। तमिलनाडु, केरल, पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में मार्च–अप्रैल के दौरान विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर जानकारी देते हुए बताया कि केंद्र सरकार की सिफारिश पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बजट सत्र 2026 के लिए संसद के दोनों सदनों को आहूत करने की मंजूरी दे दी है। उन्होंने कहा कि सत्र का पहला चरण 13 फरवरी को समाप्त होगा और संसद 9 मार्च को पुनः बैठेगी, जो सार्थक बहस और जन-केंद्रित शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

हालांकि सरकार की ओर से अभी औपचारिक घोषणा नहीं की गई है, लेकिन उम्मीद है कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी, रविवार को केंद्रीय बजट पेश करेंगी। चूंकि प्रस्तावित तिथि रविवार है और गुरु रविदास जयंती के कारण अवकाश भी रहेगा, इसलिए बजट एक दिन पहले या एक दिन बाद पेश किए जाने की अटकलें भी थीं। हालांकि, जानकारों का कहना है कि पहले भी सप्ताहांत में बजट पेश किए जाने के उदाहरण रहे हैं।

आगामी बजट सत्र एक सार्थक शीतकालीन सत्र के बाद आयोजित किया जा रहा है, जिसमें कई महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए और 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने तथा चुनावी सुधारों जैसे विषयों पर व्यापक चर्चा हुई।

आमतौर पर बजट सत्र का दूसरा चरण मध्य अप्रैल तक चलता है। सत्र का समय से पहले समाप्त होना यह संकेत देता है कि भाजपा, कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, डीएमके, एआईएडीएमके, असम गण परिषद, वाम दलों सहित विभिन्न राजनीतिक दलों को संबंधित राज्यों में चुनाव प्रचार के लिए अधिक समय मिल सकेगा।

दिल्ली में संघ के कार्यक्रम में बोले डॉ. भागवत

'शतक' के गाने के एल्बम को लॉन्च किया

संघ धीरे-धीरे विकसित हो रहा और नया रूप धारण कर रहा

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने रविवार को कहा कि आरएसएस बदल नहीं रहा है, बल्कि समय के साथ धीरे-धीरे विकसित हो रहा है और बस सामने आ रहा है। भागवत दिल्ली स्थित संगठन के कार्यालय में कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। यहां फिल्म 'शतक' के गाने के एल्बम को लॉन्च किया गया। यह फिल्म आरएसएस के 100 साल के सफर की कहानी बताती है। डॉ.भागवत ने कहा कि संघ अपनी शताब्दी मना रहा है। जैसे-जैसे संगठन विकसित होता है और नए रूप लेता है, लोग इसे बदलते हुए देखते हैं। हालांकि यह असल में बदल नहीं रहा है बस सामने आ रहा है।

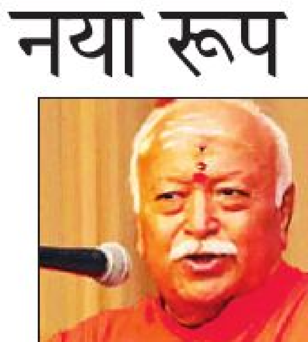

पेड़ का दिया उदाहरण

उन्होंने कहा कि जैसे एक बीज से अंकुर निकलता है और फलों और फूलों से लदा हुआ परिपक्व पेड़ का एक अलग रूप होता है, ये दोनों रूप अलग-अलग हैं।

संघ और डॉक्टर साहब पर्यायवाची शब्द

उन्होंने कहा, 'संघ और डॉक्टर साहब (हेडगेवार) पर्यायवाची शब्द हैं। वो जब सिर्फ 11 साल के थे, जब उनके माता-पिता का प्लेग से निधन हो गया था, लेकिन उन्हें उस उम्र में या बाद में भी, बात करने या भरोसा करने वाला कोई नहीं मिला। मोहन भागवत ने कहा कि जब इतनी कम उम्र में इतना बड़ा सदमा लगता है।

शादीशुदा प्रेमी संग वंदे भारत के आगे कूदी युवती

लखनऊ। यहां वंदे भारत ट्रेन के सामने कूदकर एक युवक और युवती ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। उनकी क्षत-विक्षत लाशें आलम नगर स्टेशन के पास जलालपुर रेलवे क्रॉसिंग के पास रेलवे ट्रैक के पास मिलीं। मृतकों की पहचान नीलमाथा निवासी सूर्यकांत और अर्जुनगंज के शाह खेड़ा गांव की दीपाली के रूप में हुई है।

ओवैसी का सीएम सरमा पर पलटवार, यह कहा

महिला पीएम बनने की बात पर भिड़े

उनके दिमाग में ट्यूबलाइट संविधान में यह कहां लिखा

एजेंसी ⏭ नागपुर

महाराष्ट्र निकाय चुनाव प्रचार में व्यस्त ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी का हिजाब पहने बेटी का एक

दिन देश का प्रधानमंत्री बनने वाले बयान पर सियासत शुरू हो चुकी है। ओवैसी ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा पर तीखा हमला बोला है। ओवैसी का यह बयान असम सीएम की टिप्पण के बाद आया, जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत एक हिंदू राष्ट्र होने के नाते एक हिंदू व्यक्ति को ही देश का प्रधानमंत्री बनते हुए देखेगा। नागपुर में ओवैसी ने असम सीएम पर करारा तंज कसते हुए कहा कि उनके दिमाग में 'ट्यूबलाइट' है।

रामभद्राचार्य की दो टूक

भारत में साड़ी पहनकर ही कोई महिला प्रधानमंत्री बनेगी

जयपुर में ओवैसी के बयान पर कथावाचक रामभद्राचार्य ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बने। हामिद अंसारी उपराष्ट्रपति बने। उन्हें और क्या चाहिए?...वे दिवास्वप्न देख रहे हैं। अगर भारत में कोई महिला प्रधानमंत्री बनती है, तो वह साड़ी पहनेगी। रामभद्राचार्य अक्सर राजनीतिक मामलों में टिप्पणी करते हैं।

बीएमसी चुनावों से पहले 'महायुति' ने जारी किया घोषणापत्र

झुग्गी-झोपड़ी मुक्त करेंगे मुंबई और बिना ब्याज लोन देंगे

एजेंसी ⏭ मुंबई

महानगरपालिका (बीएमसी) चुनावों से पहले रविवार को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े के साथ मिलकर बीएमसी चुनावों के लिए महायुति का संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया। व्यापक घोषणापत्र में बेस्टबसों में महिलाओं के लिए किराए में 50 प्रतिशत की छूट और शहर को बांग्लादेशी प्रवासियों से 'मुक्त' करने का वादा किया है। हम 5 साल बाद अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करेंगे।

फडणवीस, शिंदे और राष्ट्रीय महासचिव विनोद रहे मौजूद

बांग्लादेशी प्रवासियों से 'मुक्त' करने का वादा किया

घोषणा पत्र जारी करते फडणवीस, शिंदे और अठावले

मराठी सिखाएंगे, प्रदूषण हटाने 16000 करोड़ खर्च करेंगे

बीएमसी स्कूलों को कौशल-उन्मुख बनाएंगे और मराठी भाषा सीखने के लिए प्रयोगशालाएं स्थापित करेंगे। पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे और नदियों में सीवेज को रोकेंगे। नदियों को साफ करने और प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए परियोजनाओं पर 16,000 करोड़ खर्च करेंगे।

बेस्ट बेड़े में होंगी 10,000 बसें

घोषणापत्र में परिवहन और महिलाओं की सुरक्षा पर प्रमुखता से जोर दिया गया है। फडणवीस ने कहा कि गठबंधन का लक्ष्य बृहन्मुंबई इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट (बेस्ट) बेड़े को लगभग 5,000 से बढ़ाकर 10,000 बसें करना, इलेक्ट्रिक वाहनों पर स्विच करना है। आईआईटी की मदद से हम बांग्लादेशी प्रवासियों को बाहर करेंगे।

बसों में महिलाओं के लिए 50 फीसदी की छूट और 1 लाख का ऋण देंगे

उन्होंने कहा कि मेट्रो, वाटर टैक्सी और सतत परिवहन पर काम करेंगे। सभी यात्रा जरूरतों के लिए एक मुंबई ऐप। हम सड़कों पर भीड़ कम करेंगे, एक्सप्रेसवे बनाएंगे और मुंबई को एक बेहतर शहर बनाएंगे। सड़कों को गड्ढों से मुक्त किया जाएगा। बसों में महिलाओं के लिए 50 फीसदी की छूट और बहनों के लिए 1 लाख रुपए का ऋण उपलब्ध कराया जाएगा।

अय्यर के बयान पर भड़की भाजपा

'इस्लामाबाद नेशनल कांग्रेस' नहीं चाहती ऑपरेशन सिंदूर

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एक बार फिर से अपने बयान को लेकर भारतीय जनता पार्टी के निशाने पर आ गए हैं। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर वरिष्ठ कांग्रेस नेता मणिसंकर अय्यर द्वारा दिए गए बयान की भाजपा ने कड़ी आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी लगातार पाकिस्तान के प्रति नरम रुख अपनाए रखना चाहती है। एक वीडियो में अय्यर भारत सरकार को सलाह देते हुए कहते हैं कि ऑपरेशन सिंदूर को बंद कर देना चाहिए और भारत को पाकिस्तान के साथ बातचीत करना चाहिए। अय्यर की इस वीडियो पर भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कांग्रेस के ऊपर पाकिस्तान का पक्ष लेने का आरोप लगाते हुए दावा किया कि यह पार्टी आतंकवाद पर भारत के रुख को लगातार कमजोर करती है। पूनावाला ने कांग्रेस का मजाक उड़ाते हुए कहा कि यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नहीं बल्कि इस्लामाबाद राष्ट्रीय कांग्रेस है।सोशल मीडिया परपोस्ट में पूनावाला ने लिखा कि अय्यर ऑपरेशन सिंदूर को खत्म कर पाकिस्तान के साथ बातचीत की बात कर रहे हैं।

भास्कर बिजनेस गाइड

नई दिल्ली, सोमवार 12 जनवरी, 2026

बिजनेस एक्सप्लेनर भारत की होटल इंडस्ट्री में बड़ी पूंजी क्यों लगा रहे ब्लैकस्टोन, जीआईसी, वॉरबर्ग पिंकस जैसे बड़े विदेशी निवेशक?

होटल कंपनियों की बाजार वैल्यू 5 साल में 6 गुना तक बढ़ी

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

भारत की होटल इंडस्ट्री अब सिर्फ ठहरने की सुविधा तक सीमित नहीं रही। यह तेजी से निवेशकों की पसंदीदा एसेट क्लास बनती जा रही है। इसका ताजा उदाहरण प्राइवेट इक्विटी (पीई) कंपनी वॉरबर्ग पिंकस का लेमन ट्री की सहायक कंपनी में 960 करोड़ रुपए का निवेश है। पिछले एक साल में अमेरिका की ब्लैकस्टोन और सिंगापुर सरकार के सॉवरेन वेल्थ फंड जीआईसी जैसी बड़ी पीई कंपनियों ने भारत के लग्जरी और प्रीमियम होटलों में करीब 4,000 करोड़ रुपए लगाए हैं। इसकी बड़ी वजह मांग और आपूर्ति के बीच बड़ा अंतर है।

रेटिंग एजेंसी इक्रा के मुताबिक, होटलों के कमरों की मांग सालाना आपूर्ति के मुकाबले 3-4% ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इससे साल दर साल किराया लगातार बढ़ रहा है और होटल कंपनियों की आय में इजाफा हो रहा है। नतीजतन बीएसई पर लिस्टेड 69 होटल कंपनियों का कुल मार्केट कैप करीब 3 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। इनमें से टॉप-10 कंपनियों का वैल्यूएशन सिर्फ पांच साल में 6 गुना तक बढ़ चुका है। विश्लेषकों के मुताबिक, मांग और निवेश के मौजूदा रुझान को देखते हुए होटल इंडस्ट्री का विस्तार और कंपनियों की वेल्यू में तेज इजाफा आगामी वर्षों में भी जारी रह सकता है।

ग्लोबल कंपनियों की नजर: एक साल में भारतीय होटलों में निवेश की 4 बड़ी डील

1 **लेमन ट्री:** वॉरबर्ग पिंकस ने लेमन ट्री की सहायक कंपनी फ्लेयर होटल्स में एपीजी की 41% हिस्सेदारी ली। कंपनी को विस्तार के लिए 960 करोड़ रुपए मिले।

2 **ताज अरावली रिजॉर्ट एंड स्पा:** बीते साल दिसंबर में ब्लैकस्टोन ने उदयपुर की इस प्रॉपर्टी में 50% हिस्सेदारी 900 करोड़ रुपए में खरीदी। यह राजस्थान के वेडिंग टूरिज्म मार्केट में अमेरिकी फर्म की सीधी एंट्री है।

3 **रिट्ज-कार्लटन:** नवंबर 2025 में ब्लैकस्टोन ने बेंगलुरु के रिट्ज कार्लटन होटल चलाने वाली कंपनी नीतेश लैंड में 55% हिस्सेदारी खरीदी थी। यह निवेश सौदा करीब 700 करोड़ रुपए में हुआ था।

4 **सामही होटल्स:** अप्रैल 2025 में जीआईसी ने सामही होटल्स में अलग-अलग चरणों में 35% हिस्सेदारी 752 करोड़ रुपए में खरीदी थी।

तेज ग्रोथ: 5 साल में 580% तक बढ़ गई टॉप 10 लिस्टेड होटल कंपनियों की बाजार वैल्यू

कंपनी	2020	2025	वैल्यू बढ़ी
इंडियन होटल्स कंपनी	14,500	98,658	580%
आईटीसी होटल्स	गैर-लिस्टेड	40,512	---
ओबेरॉय ग्रुप	5,528	21,813	287%
शैलेट होटल्स	5,600	19,200	243%
वेंटिव हॉस्पिटलिटी	गैर-लिस्टेड	17,426	---
लेमन ट्री होटल्स	2,449	11,951	388%
महिंद्रा हॉलीडेज	4,200	6,158	47%
जुनिपर होटल्स	गैर-लिस्टेड	5,500	---
आईटीडीसी	3,000	4,835	61%
सामही होटल्स	गैर-लिस्टेड	4,291	---

(आंकड़े करोड़ रुपए में दिसंबर 2020 से दिसंबर 2025 के बीच, स्रोत: बीएसई)

आकर्षण क्यों... भारतीय होटलों से आय वैश्विक औसत से ज्यादा बढ़ रही, 70% कमरे फुल

1 **किराए में लगातार बढ़ोतरी:** क्रिसिल रेटिंग्स के मुताबिक, बीते दो वित्त वर्ष होटल कमरों का औसत किराया सालाना 5-7% बढ़ा। 2025-26 में भी औसत किराया 6% बढ़ने का अनुमान है। दुनियाभर में होटलों का किराया बढ़ने की औसत दर 2-5% ही रहती है।

2 **मांग ज्यादा, आपूर्ति कम:** इक्रा के मुताबिक, 2025 से 2028 के बीच प्रीमियम होटलों के कमरे हर साल 5-6% बढ़ेंगे। लेकिन इसी अवधि में मांग 8-10% बढ़ने का अनुमान है। प्रीमियम होटलों में कमरे भरने की दर भी 2% बढ़कर 72-74% होने का अनुमान है।

15 साल पहले ताज होटलों में पेंटिंग्स, सामान के दाम मार्केट कैप से ज्यादा थे

भास्कर एक्सपर्ट

अंबरीश बालिगा
स्वतंत्र बाजार विश्लेषक

बड़े फंड्स और फैमिली ऑफिस रियल एस्टेट में निवेश करते रहे हैं, जिसमें होटल भी है। इससे उन्हें लगातार स्थिर आय होती है। ये उस लोकेशन (जैसे उदयपुर) के रियल एस्टेट में पैसा लगाते हैं, जहां विकास हो रहा होता है। आप देखेंगे कि होटल चेन भी ऐसे ही शहरों में विस्तार कर रहे हैं, जहां की अर्थव्यवस्था मजबूत और विकास तेज रफ्तार से होता है।

- मशहूर होटलों की अपनी आकर्षक विरासत भी होती है। मसलन, 15 साल पहले तक ताज ग्रुप के होटलों में मौजूद पेंटिंग्स, एंटीक आइटम और पुराने सामान की कुल कीमत इंडियन होटल्स कंपनी के मार्केट कैप से भी ज्यादा थी। लेकिन अब कंपनी का मार्केट कैप करीब 1 लाख करोड़ रुपए है। ये चीजें विदेशी निवेशकों को आकर्षित करती हैं।
- ताज ग्रुप ने हाल के वर्षों में बिजनेस मॉडल बदला है। अब ये कंपनी विस्तार के लिए प्रॉपर्टी नहीं खरीद रही, बल्कि बने-बनाए होटलों का मैनेजमेंट कांट्रैक्ट ले रही है क्योंकि ताज ब्रांड की वैल्यू बहुत ज्यादा है। इससे कंपनी कम लागत में तेज विस्तार कर पा रही है।

मार्केट इनसाइट

निफ्टी50: 25,450 का सपोर्ट टूटा तो रिस्क बढ़ेगा

सुदीप शाह
वाइस प्रेसिडेंट, हेड ऑफ टेक्निकल एंड डेरिवेटिव्स रिसर्च, एसबीआई सिक्युरिटीज

घरेलू शेयर बाजार के लिए पिछला हफ्ता किसी रोलर-कोस्टर राइड से कम नहीं रहा। 26,373 के ऐतिहासिक शिखर छूने के बाद निफ्टी ने सितंबर 2025 के बाद की सबसे बड़ी साप्ताहिक गिरावट देखी। पूरे हफ्ते में यह 690 अंक (2.6%) गिरकर 25,683 पर बंद हुआ। निफ्टी अब 20 और 50-दिन के औसत स्तर से नीचे आ चुका है। बीते छह माह में विदेशी निवेशकों द्वारा 1.84 लाख करोड़ की भारी निकासी और तकनीकी चार्ट पर 'डार्क क्लाउड कवर' जैसे संकेतों ने निवेशकों की धड़कनें बढ़ा दी हैं। लेकिन क्या इस मंदी के बीच बजट और आईटी सेक्टर के नतीजे रिकवरी की संजीवनी बनेंगे? मोमेंटम रिलेटिव स्ट्रेंथ इंडेक्स भी सितंबर 2025 के बाद पहली बार 40 से नीचे आ गया है। यह तेजी कमजोर होने और निवेशकों की रिस्क लेने की क्षमता घटने का संकेत है। निफ्टी का सपोर्ट जोन 25,500-25,450 है। इससे नीचे 25,200 तक आने का दबाव बढ़ सकता है। तेजी में 25,900-25,950 पर सपोर्ट है।

ये तीन फैक्टर बाजार की दिशा तय करेंगे

- कंपनियों के नतीजे, पूर्वानुमान शेयरों में तेजी ला सकते हैं।
- भारत-अमेरिका व्यापार प्रगति सेंटीमेंट सुधार सकती है।
- आरबीआई, वैश्विक रेट कट से नकदी बढ़ सकती है।

सेंसेक्स: 81,900 तक गिर सकता है

सेंसेक्स के 85,883 का हाई बनाने के बाद बाजार का सेंटीमेंट बदला है। यह इंडेक्स भी हफ्ते के हर सत्र में गिरावट के साथ खुला और नुकसान में बंद हुआ। डेली चार्ट पर बढ़ती ट्रेंडलाइन का टूटना मंदी के दबाव को उजागर करता है। 82,600 का सपोर्ट लेवल टूटने पर 81,900 तक गिर सकता है। बढ़त में 84,300 का लेवल पार करना बड़ी चुनौती होगी।

बैंक निफ्टी: चार्ट पर मंदी का शुरुआती पैटर्न

बैंक निफ्टी ने बाकी बाजार के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया, हालांकि इसमें गिरावट जारी रही। इसके साप्ताहिक चार्ट पर 'डार्क क्लाउड कवर' पैटर्न बना है, जो आमतौर पर आगे कमजोरी का संकेत देता है। इंडेक्स अपने 20-दिन के मूविंग एवरेज के नीचे आ गया है। 58,600 पर इसे मजबूत सपोर्ट है। ऊपर में 59,700-59,800 के आसपास अहम रेजिस्टेंस है।

इन्फोसिस, एचडीएफसी बैंक के नतीजों पर नजर

12 जनवरी यानी सोमवार को टीसीएस, एचसीएल टेक के नतीजे आएंगे। 14 जनवरी को इन्फोसिस और 16 को रिलायंस, विप्रो के नतीजे आएंगे। इसके बाद 17 जनवरी को एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक के नतीजे आएंगे।

आईटी: बीते 21 वर्षों में 14 बार जनवरी में बढ़त बनाई, बजट से पहले औसत रिटर्न 6% का ट्रेंड

जनवरी ऐतिहासिक रूप से आईटी सेक्टर के पक्ष में रहता है। बीते 21 वर्षों में 14 बार आईटी इंडेक्स जनवरी में चढ़ा है। बजट से पहले इस सेक्टर में औसतन 6% तेजी देखी जाती है। बैंकिंग शेयर भी रिकवरी दिखा सकते हैं।

- टीसीएस से स्थिरता, एचसीएल टेक से अच्छे मुनाफे की उम्मीद है, लेकिन बाजार की दिशा तय करने वाला 'एक्स-फैक्टर' इन्फोसिस के नतीजों और उसकी कमेंट्री में छिपा है। इन्फोसिस अक्सर पूरे साल के लिए आय का अनुमान जारी करती है। ये अनुमान बाजार का रुख तय कर सकता है।

रुझान: बजट से पहले डिफेंस, बैंकों में खरीदारी

डिफेंस शेयरों में बजट से पहले खरीदारी का आकर्षण बढ़ा है। पीएसयू बैंक, निजी बैंकों के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें निरंतर संस्थागत रुचि है। फार्मा और हेल्थकेयर सेक्टर में भी खरीदारी जारी है, जबकि ऑयल-गैस और एफएमसीजी सेक्टर फिलहाल कमजोर रह सकते हैं।

फंड का फंडा

ओवरनाइट फंड: 24 घंटे में निवेश पर सुरक्षित रिटर्न

मुंबई। ओवरनाइट फंड असल में डेट म्यूचुअल फंड का ही एक खास प्रकार है। खूबी यह है कि यह आपकी पूंजी को ऐसी संपत्तियों में निवेश करता है जिनकी मैच्योरिटी अवधि सिर्फ 24 घंटे होती है। यह उनके लिए सबसे सटीक विकल्प है जिनके पास केवल 1 से 3 दिन के लिए अतिरिक्त पैसा है। वे इसे बैंक के बचत खाते में रखने के बजाय कहीं और निवेश कर सुरक्षित रिटर्न पा सकते हैं। बड़ी कंपनियां अक्सर अपने कैश को मैनेज करने के लिए इसका इस्तेमाल करती हैं।

तीन वर्ष में सालाना 6.47% रिटर्न

ओवरनाइट फंड	3 साल
क्वांट	6.47%
बैंक ऑफ इंडिया	6.46%
एक्सिस	6.39%
यूटीआई	6.35%
इन्वेस्को इंडिया	6.34%

निवेश के पांच बड़े फायदे

- सबसे कम जोखिम
- जब चाहें पैसा निकालें
- कोई एग्जिट लोड नहीं
- बचत खाते से बेहतर
- स्थिरता।

प्राइमरी मार्केट

अमागी समेत 6 आईपीओ जुटाएंगे ₹2,028 करोड़

मुंबई | नए साल में भी प्राइमरी मार्केट में हलचल बनी हुई है। इस हफ्ते एक मेनबोर्ड और 5 एसएमई आईपीओ निवेश के लिए खुलेंगे। अमागी मीडिया लैब्स का आईपीओ 1,789 करोड़ रुपए का है, जो 13 जनवरी को खुलेगा।

बेंगलुरु की यह मीडिया टेक्नोलॉजी कंपनी क्लाउड के जरिये टीवी चैनलों को अपना कंटेंट प्रसारित करने और विज्ञापनों से कमाई करने की तकनीक देती है। प्राइस बैंड 343 से 361 रुपए तय किया है। वर्तमान में यह दुनिया भर में 700 से अधिक ब्रांड्स और 2,000 से ज्यादा चैनलों का संचालन संभालती है।

अमागी मीडिया लैब्स आईपीओ से जुटाएगी 1,789 करोड़ रुपए

कंपनी	साइज	तारीख
नर्मदेश ब्रास इंडस्ट्रीज	45	12-15
अवाना इलेक्ट्रोसिस्टम्स	35	12-14
अमागी मीडिया लैब्स	1,789	13-16
जीआरई रिन्यू एनरटेक	40	13-16
इंडो एसएमसी	92	13-16
आर्मर सिक्युरिटी इंडिया	27	14-19

क्रिप्टो अपडेट

बिटकॉइन 90 हजार डॉलर पर ठहरा, बाजार में संशय

न्यूयॉर्क| वर्ष 2026 के पहले पूरे कारोबारी हफ्ते में बिटकॉइन स्थिर रहा। इसकी कीमत 90,000 डॉलर के आसपास बनी रही, जो इसके ऑल-टाइम हाई 1.26 लाख डॉलर के स्तर से काफी नीचे है। निवेशक फिलहाल वॉशिंगटन से आने वाले बड़े नीतिगत फैसलों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने डोनाल्ड ट्रम्प के टैरिफ की वैधता पर शुक्रवार को फैसला टाल दिया। इससे बाजार में संशय है।

विंटरम्यूट के जेक ओस्ट्रोव्स्किस के अनुसार जैसे ही यह 95,000 डॉलर के मनोवैज्ञानिक स्तर को पार करेगा, बाजार में बड़े पैमाने पर खरीदारी लौटने की उम्मीद है। कॉइनशेयर्स के जेम्स बटरफिल के अनुसार, अमेरिका के ताजा आर्थिक आंकड़े उम्मीद से बेहतर रहे हैं। इन्होंने मार्च में ब्याज दर कटौती की संभावना कम की है। इससे बिटकॉइन पर दबाव बना रह सकता है। हालांकि बाजार के लिए अच्छी खबर यह है कि एमएससीआई ने डिजिटल एसेट कंपनियों को हटाने का फैसला टाल दिया है।

ग्राउंड रिपोर्ट गुजरात में गांधीनगर के पास आकार ले रहा देश का ग्लोबल फाइनेंशियल हब

886 एकड़ में बन रही गिफ्ट सिटी, यहां 1,000 से ज्यादा कंपनियां 15 करेंसी में लेनदेन कर रहीं

कृष्ण मोहन तिवारी | अहमदाबाद

मैं साबरमती के तट पर 886 एकड़ में बस रही गिफ्ट सिटी में हूं। यह देश का वह हिस्सा है जिसे कागजों पर 'विदेशी जमीन' माना जाता है। यहां बैंकिंग, ट्रेडिंग के नियम वही हैं जो हॉन्गकॉन्ग, दुबई, मॉरिशस या लंदन जैसे ग्लोबल फाइनेंशियल डिस्ट्रिक्ट्स में होते हैं। यहां डॉलर, यूरो, जापानी येन और दिरहम जैसी 15 करेंसी में लेनदेन होता है। यह देश का पहला इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विस सेंटर (आईएफएससी) है, जो भारत के 'ऑफशोर बैंकिंग' का चेहरा बन रहा है। यहां से कारोबार करने वाली कंपनियों को 10 वर्षों तक 100% टैक्स हॉलिडे मिलता है। कैपिटल गेन्स टैक्स, जीएसटी और एसटीटी से राहत दी गई है।

आईएफएससी के चेयरपर्सन के राजारमण कहते हैं कि मकसद उन अरबों डॉलर के कारोबार को भारत वापस लाना है, जो अब तक सिंगापुर या दुबई के रास्तों से होता था। बैंकिंग, फंड मैनेजमेंट, इंश्योरेंस से लेकर एयरक्रॉफ्ट लीजिंग जैसी 1,000 से ज्यादा देशी और विदेशी कंपनियां कामकाज कर रही हैं। सितंबर 2024 से सितंबर 2025 के बीच ट्रेड फाइनेंस, कमर्शियल लोन 48% बढ़कर 6.32 लाख करोड़ रुपए रहा। यहां से संचालित होने वाले 17 घरेलू और 18 विदेशी बैंकों ने 5.23 लाख करोड़ रुपए की पूंजी जुटाई है। यह अहम पड़ाव है जिसने कुल जुटाई गई पूंजी के मामले में अबु धाबी को पीछे छोड़ दिया।

पांच बड़े कदम... एयरक्रॉफ्ट लीजिंग से बुलियन ट्रेड तक

1. **स्टार्टअप्स आईपीओ लाकर सीधे विदेशी फंड जुटा सकते हैं:** यहां एक्सईडी लि. आईपीओ के लिए आवेदन करने वाली पहली फर्म है। एनआरआई से लेकर वैश्विक संस्थागत निवेशक आईपीओ में भाग ले सकते हैं।
2. **भारत के एविएशन फाइनेंस के लिए गेमचेंजर:** यहां आयरलैंड की तर्ज पर एयरक्राफ्ट लीजिंग। 37 कंपनियां एक्टिव हैं, जो 9,018 करोड़ की एसेट मैनेज कर रही हैं। एक साल में लीज पर दिए विमान 44 से 134 हो गए। लीजिंग का पैसा देश में रहने से फॉरेक्स आउटफ्लो में कमी आएगी।
3. **ग्लोबल बुलियन एक्सचेंज, भारत से तय होंगी कीमतें:** सोने की कीमतें लंदन या न्यूयॉर्क से तय होती हैं। इंडिया इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज के जरिये भारत अब वैश्विक 'प्राइस सेटर' बन रहा है। 2025 की पहली तिमाही में 26,195 करोड़ रुपए का ट्रेड हुआ।
4. **सैंडबॉक्स और इनोवेशन का मंच:** स्टार्टअप्स के लिए फिनटेक सैंडबॉक्स सुविधा है। वे बिना किसी सख्त नियामक बाधा के नए वित्तीय उत्पादों जैसे ब्लॉकचेन, डिजिटल बैंकिंग का लाइव टेस्टिंग कर सकती हैं।
5. **इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी:** यहां ऑस्ट्रेलिया की डिकिन और वोलोंगोंग जैसी विदेशी यूनिवर्सिटीज अपनी ब्रांच शुरू कर रही हैं। छात्रों को देश में ही कम लागत में अंतरराष्ट्रीय डिग्री मिलेगी।

- बीते साल मासिक किराये में यहां 10% उछाल देखा गया। गिफ्ट सिटी को मेट्रो के जरिये बुलेट ट्रेन से जोड़ा जाएगा। इससे मुंबई के बीकेसी से सीधे कनेक्टिवटी होगी।

यूटिलिटी टनल: इस शहर में एसी, आरओ की जरूरत नहीं

गिफ्ट सिटी की यूटिलिटी टनल इसे दुनिया के सबसे स्मार्ट शहरों में जगह दिलाती है। शहर के नीचे बिछी यह टनल इतनी बड़ी है कि इसमें छोटे वाहन भी ले जाए जा सकते हैं।

- पीने के पानी और फाइबर ऑप्टिक केबल्स के लिए अलग-अलग रैक। भविष्य में नई केबल डालने या मरम्मत के लिए सड़कों को खोदना नहीं पड़ता।
- डिस्ट्रिक्ट कूलिंग सिस्टम के चलते व्यक्तिगत एसी की जरूरत नहीं। एयर हैंडलिंग यूनिट से घर-दफ्तर में ठंडी हवा पहुंचाई जाती है। इससे 30 से 40% बिजली की बचत होती है।
- यहां इमारतों के भीतर 'वेस्ट डिस्पोजल शूट' (पाइप्स) हैं। जब कोई कचरा उसमें डालता है, तो वह वैक्यूम के जरिए सीधे सेंट्रल वेस्ट कलेक्शन प्लांट तक पहुंच जाता है।
- गिफ्ट सिटी का पूरा इंफ्रास्ट्रक्चर एक 'कमांड एंड कंट्रोल सेंटर' से जुड़ा है। यदि किसी इमारत में पानी लीक होता है या धुआं उठता है तो कंट्रोल सेंटर में अलॉर्म बजता है। हर आने-जाने वाले पर लाइव नजर रहती है।

बिजनेस आइडिया ई-वेस्ट एग्रीगेटर बिजनेस का कारोबार शुरू करें

इलेक्ट्रॉनिक कचरा निपटाएं, पर्यावरण सुरक्षा में योगदान के साथ हर माह ₹70-80 हजार कमाएं

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

बीते वित्त वर्ष में देश में करीब 14 लाख टन ई-वेस्ट पैदा हुआ। यह कचरा पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है, लेकिन इसकी रिसाइक्लिंग से कमाई की जा सकती है। इनमें तांबा, सोना, निकल और चांदी जैसी मूल्यवान धातुएं होती हैं। प्लास्टिक को भी रिसाइकल किया जा सकता है। हालांकि रिसाइक्लिंग प्लांट लगाना महंगा है, लेकिन इससे जुड़ा 'एग्रीगेटर बिजनेस' कम लागत में शुरू किया जा सकता है।

सेटअप: कलेक्शन सेंटर बनाएं
सरकारी अनुमतियां, गुमाश्ता लेने के बाद शॉपिंग मॉल या इलेक्ट्रॉनिक मार्केट जैसे स्थानों पर कलेक्शन सेंटर बनाएं। कंपनियों, दफ्तरों, सोसायटियों और शैक्षणिक संस्थानों से भी कलेक्शन किया जा सकता है। ग्राहकों तक पहुंचने के लिए अपनी वेबसाइट और सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्रोसेस: मेटल की छंटाई करें
कचरे की छंटाई कर कीमती हिस्से (मेटल्स) अलग करें। इन्हें आप सीधे रिसाइक्लिंग कंपनियों या बड़े थोक खरीदारों को बेच सकते हैं। यह काम कलेक्शन सेंटर, एक छोटे वाहन और एक-दो कर्मचारियों के साथ शुरू किया जा सकता है। कलेक्शन बढ़ाने के लिए नियमित जागरूकता अभियान चलाएं।

100% तक मार्जिन: ई-वेस्ट रिसाइक्लिंग में 70-100% मार्जिन है। अगर आप रोजाना 30-40 किलो ई-वेस्ट जुटाकर औसतन 150 रुपए प्रति किलो भाव पर बेचते हैं तो महीने में 70-80 रुपए तक मुनाफा कमा सकते हैं।

कंपनी को जानें 8 दिन में 569 करोड़ रुपए का दूसरा वर्क ऑर्डर

बीईएल: नवरत्न कंपनी ने 5 साल में नौ गुना से ज्यादा रिटर्न दिया, 1 साल में 54% चढ़े शेयर

भास्कर न्यूज़ | बेंगलुरु

रक्षा मंत्रालय के तहत काम करने वाली नवरत्न कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) को 8 दिनों के भीतर 569 करोड़ रुपए का दूसरा बड़ा वर्क ऑर्डर मिला है। इस खबर के बाद बीते हफ्ते कंपनी के शेयर 424.50 रुपए का स्तर छू गए। यह 435 रुपए के 52-हफ्तों के हाई के करीब है। जून 2025 में बीईएल सेंसेक्स के 30 शेयरों में शामिल होने वाली देश की पहली डिफेंस पीएसयू बनी थी।

बिजनेस: हाईटेक प्रोडक्ट्स
1954 में स्थापित बीईएल रडार, मिसाइल सिस्टम, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर और संचार जैसे हाईटेक रक्षा उपकरण बनाती है। कंपनी ईवीएम भी बनाती है। हाल ही में कंपनी ने एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट प्रोजेक्ट के लिए एलएंडटी से हाथ मिलाया है।

ब्रोकरेज: निवेश की सलाह
ब्रोकरेज कंपनियों के विश्लेषक बीईएल के शेयर को लेकर पॉजिटिव हैं। ज्यादातर एक्सपर्ट्स अगले 12 महीनों में 25% तक रिटर्न की उम्मीद कर रहे हैं।

ब्रोकरेज फर्म	कॉल	टारगेट
जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स	बाय	₹504
मोतीलाल ओसवाल	बाय	₹500
एसबीआई सिक्युरिटीज	बाय	₹463

कर्जमुक्त कंपनी: बीईएल लगभग कर्जमुक्त है। 5 साल में 849% (करीब 9 गुना) और एक साल में 54% रिटर्न दिया है। वित्त वर्ष 2026 की दूसरी तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 18% बढ़कर 1,286 करोड़ रुपए रहा।

कंज्यूमर ट्रेंड्स इलेक्ट्रॉनिक्स प्रोडक्ट लेते वक्त 60% और ट्रैवल प्लान बनाते वक्त 50% लोग एआई की मदद ले रहे: ग्लोबल सर्वे

एआई खरीदारी बदल रहा... ब्रांड नहीं, जरूरत तय करेगी खरीद

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

अब सवाल यह नहीं कि ब्रांड क्या बेच रहा है, बल्कि यह है कि कंज्यूमर को सच में क्या चाहिए। ग्लोबल कंसल्टिंग फर्म बीसीजी की रिपोर्ट 'कंज्यूमर्स ट्रस्ट एआई टू बाइ बेटर, ब्रांड्स मस्ट अडॉप्ट' का सबसे अहम निष्कर्ष यही है कि एआई ने निर्णय की ताकत ब्रांड और इन्फ्लुएंसर्स से छीनकर कंज्यूमर के हाथ में थमा दी है। यह रिपोर्ट बताती है कि कैसे एआई अब कंज्यूमर को बेहतर, तेज और ज्यादा भरोसेमंद खरीद निर्णय लेने में मदद कर रहा है और क्यों ब्रांड्स को अपनी रणनीति तुरंत बदलनी होगी। इस ग्लोबल सर्वे में अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, जापान, चीन, भारत, ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया समेत कई विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के हजारों कंज्यूमर शामिल थे। पढ़िए इस सर्वे के टॉप टेकअवे...

सर्वे में ब्रांड के लिए बड़ी चुनौती... अगर रणनीति नहीं बदली तो टिके रहना मुश्किल

दो तिहाई कंज्यूमर बेहतर विकल्प चुन रहे; कंज्यूमर एआई का उपयोग प्रोडक्ट तुलना, कीमत से लेकर फाइनल खरीद निर्णय तक में कर रहे है। दो-तिहाई कंज्यूमर मानते हैं कि इससे वे बेहतर विकल्प चुन पा रहे हैं।

मोबाइल से लेकर ग्रासरी की खरीदारी; एआई मोबाइल, लैपटॉप या ट्रैवल तक सीमित नहीं है। ग्रॉसरी, कपड़े, ब्यूटी और हेल्थकेयर तक इसका उपयोग हो रहा है।

जटिल प्रोडक्ट को आसानी से समझ रहे; बीमा, हेल्थ जैसे जटिल प्रोडक्ट के मामले में एआई नियमों को सरल भाषा में समझाता है। कन्फ्यूजन की जगह क्लैरिटी मिलती है।

64% तीन कैटेगरी में मदद ले रहे; सर्वे के मुताबिक 64% उपभोक्ता 3 या उससे अधिक प्रोडक्ट कैटेगरी में एआई का उपयोग करते हैं। 60% मानते हैं कि एआई के जवाब इन्फ्लुएंसर्स से ज्यादा निष्पक्ष हैं।

पर्सनलाइजेशन का अनुभव; एआई कंज्यूमर की लाइफस्टाइल, बजट, पसंद-नापसंद व पिछली खरीद को ध्यान में रखकर सुझाव देता है। इससे खरीदारी बेहतर होती है।

..तो टिक नहीं पाएंगे ब्रांड; जो ब्रांड एआई रेडी कंटेंट, स्पष्ट जानकारी और फैक्ट-बेस्ड कम्युनिकेशन नहीं अपनाएंगे, वे कंज्यूमर की नजर से धीरे-धीरे ओझल हो सकते हैं।

समय बच रहा, गलत खरीदारी की आशंका कम; अब एआई कुछ सेकंड में जानकारी देता है। इससे समय बच रहा है। कंज्यूमर मानते हैं कि एआई की सलाह से 'गलत खरीद' की आशंका कम होती है।

शॉपिंग में एआई इस्तेमाल 35% बढ़ा; खरीद निर्णय एआई से प्रभावित हो रहे हैं। फरवरी-नवंबर 2025 के बीच शॉपिंग में 35% की वृद्धि देखी गई।

एआई तय करेंगे ब्रांड कितना भरोसमेंद; एआई कंज्यूमर को सशक्त बना रहा है। आगे खरीद का फैसला इस बात पर निर्भर करेगा कि एआई किस ब्रांड को भरोसेमंद मानता है।

पश्चिमी देशों से आगे भारत: एआई उपयोग में बना ग्लोबल लीडर

2025 तक भारत में जेनएआई की जागरूकता 94% और उपयोग 62% तक पहुंच गया। इसके उलट, जर्मनी और फ्रांस जैसे परिपक्व बाजारों में उपयोग अपेक्षाकृत कम है।

जेनएआई के उपयोग में कौन कहां पर

देश	जागरूकता 2025	उपयोग 2025
भारत	94	62
ब्राजील	96	63
जापान	97	48
अमेरिका	92	42
जर्मनी	82	36

(आंकड़े प्रतिशत में, स्रोत: बीसीजी)

न्यूज ब्रीफ

अमेरिकाः पालतू पिटबुल डॉग का हमला, महिला का पैर काटना पड़ा

टेनेसी | अमेरिका के टेनेसी में 42 वर्षीय महिला अमांडा मीअर्स का पैर उस वक्त काटना पड़ा, जब उनके पालतू पिटबुल ने घर के भीतर दूसरे कुत्ते पर हमला करते हुए उनके पैर को जबड़े में जकड़ लिया। कुत्ते को छुड़ाने की कोशिश में मीअर्स के पैर, हाथ और बांह गंभीर रूप से जख्मी हो गए। अस्पताल में डॉक्टरों ने कई सर्जरी या पैर काटने का विकल्प दिया, जिस पर उन्होंने अम्प्यूटेशन (अंग काटना) चुना। परिवार की सुरक्षा को देखते हुए नगर निगम ने कुत्ते को पकड़ लिया।

चीनः फर्जी पुलिस अधिकारी बता शादी की, बाद में कातिल निकला

हेबेई। चीन के हेबेई में 7 साल बाद महिला की शादी टूट गई। पांग नामक महिला ने 2014 में जिया बिन से शादी की थी। तब उसने खुद को पुलिस अधिकारी बताया था। वह अक्सर 'स्पेशल मिशन' का बहाना बनाकर घर से गायब रहता था और 2017 से लापता था। अब कोर्ट में महिला ने तलाक के लिए अर्जी दी, तो पता चला कि पति फर्जी पुलिस था और असल में हत्यारा था।

अमेरिकाः नौकरी छोड़कर एआई कंपनी का सीएमओ बना क्रिएटर

न्यूयॉर्क | न्यूयॉर्क के एआई स्टार्टअप कंपनी क्लूएली के सीएमओ डेनियल मिन ने तनाव के चलते आठ महीने बाद नौकरी छोड़ दी। मिन ने कहा कि रोज 12 घंटे काम करने से उन्हें दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताने का मौका नहीं मिला। उन्होंने सालाना 2.7 करोड़ रु. की नौकरी छोड़कर अपनी प्राथमिकताएं बदलीं। मिन ने बताया कि शुरुआत में काम रोमांचक था, लेकिन धीरे-धीरे थकाऊ लगने लगा।

पर्यटन के दो रंग • सूरत में पतंगों का रोमांच, बीकानेर में धोरों पर थिरके ऊंट

गुजरातः 21 देशों के 45 पतंगबाजों का दिखा हुनर

सूरत | गुजरात के सूरत में अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव चल रहा है। इसमें देश-विदेश के 94 पतंगबाज हिस्सा ले रहे हैं। 4 राज्यों से 20, गुजरात से 29 और 21 देशों के 45 पतंगबाज भी हिस्सा ले रहे हैं। यह 14 जनवरी तक चलेगा। यहां कई देशों की अनोखी पतंगें देखने को मिलीं।

राजस्थानः आभूषणों से सजे ऊंटों ने दिखाए करतब

बीकानेर | राजस्थान के बीकानेर में अंतरराष्ट्रीय ऊंट उत्सव का आयोजन हुआ। यहां ऊंटों की हैरतअंगेज करतब के अलावा ऊंट नृत्य और दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रंग-बिरंगी पोशाकों और आभूषणों से सजे ऊंटों ने ऊंची छलांगें लगाईं। देश-विदेश से सैलानी जुटे।

वैज्ञानिकों को सबसे तेज घूमने वाला ऐस्टरॉइड मिला

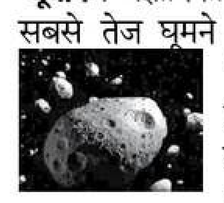

न्यूयॉर्क। वैज्ञानिकों ने अब तक का सबसे तेज घूमने वाला ऐस्टरॉइड '2025 एमएन45' खोजा है। लगभग 2,329 फीट चौड़ा यह विशाल पिंड महज 1.88 मिनट में अपना एक चक्कर पूरा कर लेता है। 1,900 ऐस्टरॉइड्स के अध्ययन के बाद पहचाने गए 19 तेज घूमने वाले पिंडों में यह सबसे प्रमुख है। यह खोज अंतरिक्ष विज्ञानियों को ऐस्टरॉइड्स की मजबूती और उनकी संरचना को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी, जो भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए महत्वपूर्ण है।

विश्वास • संतुलन और व्यावहारिक सोच इनकी ताकत

45-60 उम्र वाले ऑफिस की रीढ़, एआई के दौर में भी सबसे भरोसेमंद

भास्कर न्यूज़ | लंदन

2026 में पहली बार वर्कफोर्स में छह पीढ़ियां एक साथ काम करेंगी। इनमें जेनरेशन एक्स (45-60 उम्र वाले लोग) सबसे स्थिर और भरोसेमंद पीढ़ी बनकर उभरी है। ब्रिटेन में 35% वर्कफोर्स इसी पीढ़ी से है। साथ ही 50% से ज्यादा मैनेजर भी जेन एक्स ही हैं। कभी इन्हें ढीले रवैये और सिस्टम से दूरी के लिए जाना जाता था, लेकिन अब यही लोग ऑफिस और देश की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। नॉर्थ ईस्ट इंग्लैंड की एम्प्लॉयमेंट कंसल्टेंसी वेस्ट्रे के डोमिनिक ब्लैक कहते हैं कि जनरेशन एक्स भरोसेमंद, व्यावहारिक और अनुभव से भरपूर है।

यह पीढ़ी तकनीक के हर दौर से गुजरी है

सिलिकॉन वैली के एआई कंसल्टेंट स्टीफन स्मिथ के मुताबिक, जनरेशन एक्स तकनीकी बदलावों के हर दौर से गुजरी है। इनके पास इंडस्ट्री का गहरा अनुभव है और ये जानते हैं कि एआई को कहां और कैसे इस्तेमाल करना है ताकि असली फायदा मिले। ये सोशल मीडिया पर कम दिखते हैं, लेकिन सबसे संतुलित नजरिया रखते हैं। न तो हर ट्रेंड में कूदते हैं और न ही हर बात पर नाराज होते हैं।

अनुभव व व्यवहारिकता ताकतः एचआर एक्सपर्ट तान्या गॉस कहती हैं कि जेनरेशन एक्स वाले प्रचार से दूर रहते हैं और बदलाव तभी अपनाते हैं जब ज्यादा फायदा लग। वे व्यावहारिक सोच रखते हैं और पीढ़ियों के बीच पुल का काम करते हैं। ये विश्वसनीय और सामाजिक कौशल में भी मजबूत हैं।

जेन जी कम वेतन बता जॉब छोड़ रहेः जेन जी (13-28 की उम्र वाले) नौकरी को लेकर अलग तरीके से सोचते हैं। रैंडस्टैड इंडिया की रिपोर्ट 'द जेन जी वर्कप्लेस ब्लूप्रिंट' के मुताबिक, करीब 50% युवाओं ने कम वेतन को नौकरी छोड़ने की वजह बताया। इसके बाद कार्यस्थल की संस्कृति और मूल्यों का मेल न होना दूसरी बड़ी वजह है। वहीं, 82% जेन जी प्रोफेशनल्स एआई को लेकर उत्साहित हैं।

पांडा की तरह बर्ताव करते नजर आ रहे जू के कर्मचारी

टोक्यो | जापान के एडवेंचर वर्ल्ड पार्क में अब पांडा नहीं हैं, लेकिन वहां के स्टाफ ने पांडा की कमी महसूस न होने देने की अनोखी तरकीब निकाली है। कर्मचारी अब पांडा की ड्रेस पहनकर उसी की तरह बर्ताव कर रहे हैं। वे बांस खाते, आराम करते और पिंजरे में घूमते नजर आते हैं। यह सब इसलिए किया जा रहा है ताकि पांडा की यादें जिंदा रहें। इस पार्क में कई पांडा जन्मे, लेकिन अब आखिरी 4 पांडा भी चीन चले गए।

60 हजार साल पुराने तीरों से मिले जहर के अंश

केप टाउन। द. अफ्रीका की उम्हलातुजाना रॉक शेल्टर गुफा से मिले 60 हजार साल पुराने पत्थर के तीरों पर जहरीले पौधे के अंश मिले हैं। यह अब तक का सबसे पुराना प्रमाण है कि उस दौर के शिकारी जहर का इस्तेमाल करते थे। स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ जोहान्सबर्ग के वैज्ञानिकों ने तीरों पर बुफून डिस्टिका पौधे के जहरीले तत्वों के अंश पाए हैं।

पेज एक का शेष

जब मैदान में उतरो, तो पीछे लौटने ...

वो फैसले जिसने सब कुछ बदल दिया

- मैंने निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा होने को अपनी किस्मत मानकर स्वीकार नहीं किया। उसे बदलने के लिए प्रयास किया।
- इंदौर के एक स्कूल में म्यूजिक टीचर की नौकरी का ऑफर मिलने के बावजूद उसे छोड़कर दिल्ली आ गया।
- दिल्ली में नौकरी करते हुए कॉमेडी के साथ ट्राय करना, सही वक्त आने पर नौकरी छोड़कर उसे फुल टाइम करना।
- इसके बाद AIB के साथ काम करने का फैसला, जहां मैंने टीम के साथ काम करना और बड़े पैमाने पर कॉन्टेंट सोचना सीखा। फिर दिल्ली में नाम होने के बावजूद मुंबई शिफ्ट होने का फैसला लिया।
- और सबसे ताजा फैसला- विदेश की धरती पर अपने लिए बराबरी की जमीन मांगना। मुझे लगता है कि ये आने वाले समय में हर भारतीय के लिए नए द्वार खोलेगा।

स्किल और निरंतर सफलता का संबंध

सबसे जरूरी स्किल है सीखते रहने की क्षमता। खुद को हमेशा छात्र बनाए रखना। जब आप सीखना बंद कर देते हैं, वहीं से आपका ग्रो करना भी रुक जाता है। सफलता सिर्फ नाम कमा लेना या शोहरत या पैसा हासिल कर लेना नहीं हो सकती। सफलता कोई एक दिन की चीज नहीं है, वो आपकी जीवनशैली है। अगर आपके लोग आपसे प्रेम करते हैं, जरूरत के वक्त आपके साथ खड़े हैं और बैंक अकाउंट में इतना है कि सम्मान से जीवन चल सके- तो आप बहुत सफल हैं। मेरे ख्याल से सबसे बड़ी सफलता खुद को जीवन का छात्र बनाए रखना है। क्योंकि नाम, पैसा और शोहरत आती-जाती रहती है, लेकिन सीखते रहने वाला इंसान कभी खाली नहीं होता।

पीछे रह जाने के डर से ऐसे निपटें

हर किसी की टाइमलाइन अलग होती है। तुलना ने कभी किसी को आगे नहीं बढ़ाया। आप रोज खुद को कल से बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं, तो आप पीछे नहीं हैं।

ये उसूल और आदत जीवन में उतारिए

धैर्य रखिए। सीखते रहिए। अपनी जड़ों से जुड़े रहिए। तुलना कम, मेहनत ज्यादा करिए। अपने काम के प्रति ईमानदार रहिए। जिज्ञासा बनाए रखिए। अगर सवाल खत्म हो गए, तो सफर भी वहीं रुक जाता है।

▪ जैसा उन्होंने रौनक केसवानी को बताया

युवाओं को एनर्जी-इंटेलिजेंस सीखना होगा...

मैंने तीव्रता के बजाय निरंतरता को चुना

दूसरों की सफलता देखकर प्रेरित होना अच्छा है, बड़े सपने देखने के लिए। लेकिन उसे आपको छोटा महसूस कराने न दें। ज्यादातर दबाव तुलना से आता है, वास्तविकता से नहीं। प्रगति व्यक्तिगत होती है। अगर आप सीख रहे हैं, बेहतर हो रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं- भले ही धीमी गति से- तो आप पीछे नहीं हैं।

मानसिकता मायने रखती है

माइंडसेट हमेशा उम्र पर भारी पड़ेगा। उम्र तजुर्बा जरूर देती है, लेकिन माइंडसेट ही ये तय करता है कि आप तजुर्बे को कितनी तेजी से सूझबूझ में बदलते हैं। जिज्ञासा से भरा, अनुशासित और दूर की सोच रखने वाला माइंडसेट वर्षों की सीख को चंद महीनों में समा सकता है। अनुभव तभी मायने रखता है, जब माइंडसेट आपको फीडबैक को आत्मसात करने, अस्वीकृति को हैंडल करने और अहंकार के बिना लगातार बेहतर होते रहने दे। अगर आप सही कारणों से सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं तो वह आपका सबसे बड़ा एसेट बन जाता है। सोशल मीडिया चीजों को बढ़ा देता है।

मैंने लंबे समय तक टिके रहने की कोशिश की

युवाओं के लिए सोशल मीडिया बड़ा अवसर है- बशर्ते इसका उपयोग सीखने, कुछ क्रिएट करने और भरोसा बनाने के लिए किया जाए। शुरुआत से ही मेरा ध्यान व्यूज नहीं, वैल्यूज पर रहा; ट्रेंड्स नहीं, टीचिंग्स पर; सनसनी नहीं, समझ पर; ड्रामा नहीं, ड्रीम्स पर और गॉसिप नहीं, ग्रोथ पर। मैंने तीव्रता के बजाय निरंतरता को चुना। जल्दबाजी के बजाय लंबे समय तक टिके रहने की कोशिश की।

तीन अहम बातें

- स्टेटस का पीछा करने से पहले स्किल्स विकसित करें।
- असफलता पराजय नहीं, डेटा है।
- और... एनर्जी ही आज के दौर की नई करंसी है।

▪ जैसा उन्होंने संचित श्रीवास्तव को बताया

ठगी • फैक्ट्री मालिक, कारोबारी, कंस्ट्रक्शन वालों ने भी गंवाए पैसे

ऑनलाइन फ्रॉड का नया पैटर्न... ट्रेन की फर्जी टिकट बनाकर मजदूरों को भेजने के नाम पर लाखों की ठगी

परिवहन रिपोर्टर | रायपुर

छत्तीसगढ़ में ठगी का एक नया और चौंकाने वाला तरीका सामने आया है। यहां फर्जी ट्रेन टिकट के जरिए कारोबारियों से लाखों की धोखाधड़ी की जा रही है। दरअसल, प्रदेश के फैक्ट्री मालिकों और कंस्ट्रक्शन ठेकेदारों को अक्सर बाहरी राज्यों से मजदूर बुलाने की आवश्यकता पड़ती है। ठग इसी जरूरत का फायदा उठा रहे हैं। आरोपी खुद को भरोसेमंद एजेंट बताकर कंपनियों को मजदूरों की आपूर्ति का दावा करते हैं और यात्रा खर्च के नाम पर पैसे मांगते हैं। विश्वास जीतने के लिए वे रेलवे की फर्जी टिकटें भी भेजते हैं। इसके बाद, वे यह झूठ बोलकर और रकम वसूलते हैं कि मजदूरों को ट्रेन में प्रतिबंधित सामान ले जाने के कारण रोक लिया गया है और उन्हें छुड़ाने के लिए जुर्माना भरना होगा। झांसे में आकर कारोबारी बड़ी रकम ट्रांसफर कर देते हैं। बाद में पता चलता है कि न तो मजदूर आए और न ही ऐसी कोई कार्रवाई हुई। साइबर सेल इन मामलों की जांच कर रही है।

फर्जी टिकट, सीट नंबर के साथ नाम भी है।

आंध्र में तकनीकः गड्ढों को मिनटों में भर रही हैं 'रोड डॉक्टर' मशीनें...

भास्कर न्यूज़ | हैदराबाद

आंध्र प्रदेश के काकीनाडा, गुंटूर और तिरुपति जैसे जिलों में सड़कों के गड्ढे भरने के लिए 'रोड डॉक्टर' नाम की हाईटेक मशीनें लगाई गई हैं। ये मशीनें कॉलोनियों और मुख्य सड़कों पर चलती हैं और जैसे ही किसी गड्ढे को पहचानती हैं, तुरंत वहीं रुककर उसे भर देती हैं। अधिकारियों के मुताबिक, यह एडवांस टेक्नोलॉजी है, जिससे बिना ट्रैफिक रोके गड्ढे मिनटों में भर जाते हैं। पूरी प्रक्रिया एक ही जगह पर पूरी होती है और ट्रैफिक में कोई खास रुकावट नहीं आती। 'रोड डॉक्टर' की कीमत करीब 1.5 करोड़ रुपए है।

मंगल ग्रह पर पृथ्वी जैसा सूर्यास्त...नासा के यान ने भेजी तस्वीर

वॉशिंगटन | नासा के क्यूरियोसिटी रोवर ने मंगल ग्रह से एक अनोखी तस्वीर भेजी है, जो पृथ्वी पर दिखने वाले सूर्यास्त की तरह है। यह तस्वीर रोवर ने गेल क्रेटर की एक चोटी से ली थी। बाद में नासा ने इस पैनोरमिक 'प्रोसेस्ड' कर पोस्टकार्ड की तरह जारी किया। इसमें मंगल की सतह और आसमान का दृश्य पृथ्वी की शाम की तरह दिखता है।

मिसाल • 204 किलो के कैफी को बेटे से बोले झूठ का था पछतावा

बेटे की खुशी के लिए 98 किलो वजन घटाया, मैराथन पूरी कीं, ट्रायथलॉन में मेडल जीता

भास्कर न्यूज़ | वॉशिंगटन

न्यूयॉर्क के कॉनर कैफीका वजन 204 किलो था। उन्होंने सर्जरी के बाद न सिर्फ वजन घटाया, बल्कि अपनी पूरी जीवनशैली बदल दी। कैफी बताते हैं कि ज्यादा वजन के कारण वे अपने बेटे के साथ समय नहीं बिता पा रहे थे। एक बार बेटे के साथ एक इवेंट में जाना था, लेकिन पार्किंग दूर थी। चलने में दिक्कत थी, इसलिए उन्होंने बेटे से झूठ बोल दिया कि इवेंट कैंसिल हो गया है। इस घटना ने मेरी जिंदगी बदल दी। नशा छोड़ा, दिनचर्या बदली। सर्जरी के चार माह बाद वर्कआउट शुरू किया। 26 जून को पहली हाफ मैराथन पूरी की। अगस्त में ट्रायथलॉन में मेडल जीता। मैराथन भी पूरी की। ट्रायथलॉन में पहले तैराकी, फिर साइकिलिंग और अंत में दौड़ होती है। अब कैफी का वजन 204 किलो से घटकर 106 किलो रह गया है।

भास्कर खास | पिछले 3 महीने से बारिश न होने के कारण नए सेब के पौधों की खरीद फिलहाल बंद कर दी गई है

हिमाचल में छह हजार करोड़ रु. के सेब कारोबार पर संकट; शिमला में सूखे जैसे हालात, नमी की कमी से जड़ों में दरारें पड़ रहीं, जिससे सेब के पौधे सूखने लगे हैं

जोगेंद्र शर्मा | शिमला

हिमाचल में चल रहे ड्राई स्पेल से सूखे के हालात पैदा हो गए हैं। सबसे बड़ी मार बागवानी पर पड़ी है। जहां सेब के पौधे 'रूट कैंकर' बीमारी की चपेट में आ गए हैं। दवाइयां नहीं बिक रही हैं। नए सेब के पौधों की खरीद फिलहाल बंद हो गई है। इससे छह हजार करोड़ के सेब कारोबार पर संकट मंडरा रहा है। बागवानों ने सूखे में पौधों की मरम्मत का काम रोक दिया है। जिला शिमला के रामपुर, चौपाल, ठियोग, रोहड़ू और कुमारसैन सहित अन्य क्षेत्रों में रूट कैंकर फैल रहा है। नमी की कमी के कारण जड़ों में दरारें पड़ रही हैं। फंगस बढ़ रहे हैं।

कहां कैसी परेशानी आ रही

1. दवाइयों की खरीद में कमीः सेब के लिए जरूरी दवाइयां जैसे स्प्रे ऑयल, कास्टिंग सोडा और अन्य तरह की स्प्रे की खरीद में कमी आई है। सेब की दवाइयों की दुकान करने वाले हैप्पी मेहता का कहना है कि जनवरी महीने में लोग दवाइयों और खाद की खरीद करते थे, लेकिन सूखा होने के चलते 25 फीसदी बिक्री भी नहीं हो रही है।

2. वूली एफिड, रिंग वॉर्म और स्केल लग रहाः बारिश-बर्फबारी न होने से बगीचों में सूखी जगहों पर कैंकर रोग की समस्या अधिक देखने को मिल रही है। स्केल की बीमारी भी पौधों में लग सकती है, इससे फल को नुकसान होगा। वूली एफिड भी सेब के बगीचों से हटने का नाम नहीं ले रहा है और यह पौधों को नुकसान पहुंचा रहा है।

सेब के पौधे सूखे की चपेट में हैं।

इसलिए जरूरी है बारिश-बर्फः सेब के पेड़ों को अच्छी पैदावार के लिए सर्दियों में 1000 से 1800 घंटे (किस्म के अनुसार) 7 डिग्री सेल्सियस से नीचे के तापमान की जरूरत होती है, जिसे चिलिंग आवर्स कहते हैं। बारिश-बर्फबारी इस ठंडक को पूरा करती है और पेड़ को सुप्त अवस्था (डोरमेंसी) से निकलने में मदद करती है।

भास्कर एक्सपर्ट

डॉ. एसपी भारद्वाज, बागवानी विशेषज्ञ

नए पौधे लगाने और पुराने पौधों की गुढ़ाई करने का जनवरी-फरवरी समय होता है। यह काम तभी शुरू होता है, जब बारिश होती है और बागीचों में नमी होती है। तीन महीने से बारिश न होने के कारण बागीचों की नमी खत्म हो गई है। पौधों में कैंकर रोग लगने लग गया है। पुराने पौधों को बचाना बागवानों के लिए चुनौती बन गया है। अगर सूखा लंबा चला तो चिलिंग ऑवर्स पूरे न होने से सेब उत्पादन में कमी आ सकती है। इसलिए बागवानों के पास बारिश के इंतजार के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

कब कितना सेब उत्पादन हुआ (मीट्रिक टन में)

साल	उत्पादन	साल	उत्पादन
2015-16	777126	2020-21	481062
2016-17	468131	2021-22	611901
2017-18	446574	2022-23	672343
2018-19	368603	2023-24	506687
2019-20	715253	2024-25	502948
		2025-26	646998

प्रकाशक एवं मुद्रक भारत भूषण द्वारा मालिक मैसर्स डी बी कॉर्प लिमिटेड के लिए 105, INS बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं 82.5 KM, माइलस्टोन, एनएच 8, खिजुरी, रेवाड़ी (हरियाणा) से मुद्रित | संपादकः अरुण चौहान, RNI No. DELHIN/2007/22001